जन्म	- 9 अगस्त 1943
पिता	- स्व० ब्रजेश्वर मल्लिक, वरीय अधिवक्ता, पटना हाइ कोर्ट ।
पति	- स्व० ललन कु० वर्मा, वरीय अधिवक्ता, पटना हाइ कोर्ट।
शिक्षा	- 'कामायनी और उर्वशीमे नारी चित्रण' शोध पर पटना विश्वविद्यालय सँ पी० एच० डी० क उपाधि प्राप्त।
उपलब्धि	- 74क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिकाक लेल महा० महो० डॉ० उमेश मिश्र स्मृति पदक डॉ० बाबूराम सक्सेना द्वारा इलाहाबादमे प्राप्त, संगे 'काव्य विनोदिनी' क उपाधि सेहो, 'रिफरेन्स एशिया' क हूजहू वोल्यूम-II मे बिहारक एकमात्र महिला साहित्यकार जिनक परिचय प्रकाशित, 'पेनगुइन सीरीज ऑफ इंडियामे' अर्लिन आर० के० जिडे, शिकागो वि० वि० द्वारा हिनक कविताक अंग्रेजी अनुवाद संगृहीत, हिनक कविता सभक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, उड़िया, गुजराती, डोंगरी आदि कतेको भाषामे भेल अछि ।
संपादन कार्य	- पटना सँ प्रकाशित हिन्दीक बाल पत्रिका चमकते सितारे' क संपादन 7-8 बरस धरि, किछ काल लेल मैथिली 'टटका' क सह संपादन सेहो ।
सामाजिक कार्य	- सहरसा नगरपालिकाक आयुक्त दस बरिस धरि, संगे कतेको सरकारी, गैर सरकारी समितिक सदस्या रहलीह ।
प्रकाशन - मैथिली	- विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकास (कथा संग्रह), यायावरी (यात्रा संग्रह), भावांजलि (गद्य गीत), अर्थयुग (कथा संग्रह) । अनुवाद-फणीश्वर नाथ रेणु (साहित्य एकादमी, दिल्ली)
हिन्दी	- ठहरे हुए पल (कविता संग्रह)
शीघ्र प्रकाश्य	- किस्त किस्त जीवन (आत्मकथा), सो आइ होप (अंग्रेजी कविता संग्रह)
संप्रति	- सर्व० राम० महा० सहरसाक हिन्दी विभागध्यक्ष (पूर्व)
सेवा	- हिन्दी विभाग, ए० एन० कॉलेज, पटना । साहित्य एकादमी दिल्लीक मैथिली केर सलाहकार समितिक पूर्व सदस्य । कोसी क्षेत्रीय महिला साहित्यकार संघक कार्य० अध्यक्ष ।



नागफांस

शेफालिका वर्मा

नागफांस

(मैथिली उपन्यास)

डॉ० शेफालिका वर्मा

प्रकाशक
अरुषी अदिति संस्कृति प्रकाशन
पटना

NAGFANS (Novel)

नागफांस

(उपन्यास)

प्रकाशक

अरुषी अदिति संस्कृति प्रकाशन, पटना

शब्द संयोजन

मुन्ना

साज-सज्जा

गंगोत्री बिजनेस प्वाईट,
सुमति प्लेस बोरिंग, रोड, पटना
☎: 0612-2524715

प्राप्ति स्थान

1. डॉ० राजीव वर्मा
   फ्लैट नं०-27, दाता राम सोसाइटी,
   सेक्टर 18, रोहिणी, दिल्ली-85
   ☎: 011-2787234, मो० : 09811637165
2. संजीव कुमार वर्मा, एडवोकेट, पटना हाई कोर्ट,
   103 & 105 A (शेफाली ललन होम्स)
   अभिषेक एपार्टमेंट, मौर्या पथ, बेली रोड, पटना-14
   Tel .0612 - 2591900 , Mob - 3102155

प्रथम संस्करण - 2004

मूल्य - रू० 75/-



समर्पण

क्षण-क्षण अछि ध्यान अहाँके
सांस-सांस मे गान अहाँ के
अनुरंजित अछि आँखिक लाली मे
अभिमान अहाँके....

एहि भव सागर कें भावसागर बनाय अहाँक संगे पार करवाक प्रयास क' रही छी ।

- शेफालिका

04.04.2004

आशीर्वचन

शुभ अवसर पर गुरुजन सँ आशीर्वाद लेबाक परम्परा अछि। कोनो रचनाक प्रकाशन रचनाकारक हेतु निःसन्देह एक शुभ अवसर होइत अछि। वृद्ध भए गेला पर आब हमहू गुरुजन भए गेलहुँ अछि आ कखनहु-कखनहु स्वस्तिवाचन करए पड़ैत अछि । सु अर्थात् नीक, अस्ति अर्थात् अछि । 'नीक अछि' इएह थिक स्वस्तिवाचनक व्यावहारिक अर्थ । जँ आलोच्य रचना नीक रहए तँ बेस, नहि तँ बेस; नहि तँ भारी धर्मसंकट । एहिसँ बचबाक हेतु हम ई नीति बनाओल अछि जे रचना मे की अछि एतबेटा कहल जाए; रचना केहेन अछि तकर निर्णय पाठक पर छोड़ि देल जाए ।

श्रीमती शेफालिका वर्माक टटका उपन्यास नागफाँस पढ़ल । प्रथमतः बूझि पड़ल जेना सभटा गओले गीत हो । आकाश आ धराक दुर्मिल प्रेम वेदहु मे गाओल गेल अछि - 'द्यौरहं पृथिवी त्वम्, तावेहि विवहावहै!' तहिआ सँ प्रेम-संगीत निरंतर गुजायमान रहल अछि । दिनकरक शब्द मे -

गा रही कविता युगों से मुग्ध हो ।
मधुर गीतों का न पर अवसान है ।

आ एहि चिरन्तन संगीत मे रंग तखन अबैत छैक जखन आकाश आ धराक बीच मन्द मधुर पवन जकाँ एकटा तेसर वा तेसरि आबि जाए । एहि सँ प्रेम मे तीन प्रकारक तरंग आबि सकैत अछि - खन सात्विक (आध्यात्मिक), खन राजस (हार्दिक), खन तामस (दैहिक)। इएह त्रिगुणात्मक आ त्रिभुजात्मक प्रेम प्रस्तुत उपन्यासक मानू अस्थिपंजर थिक । एहि मे नव्य आ भव्य रूप मे रक्त-मांस, हृदय आ मस्तिष्क दए लेखिका प्राण-प्रतिष्ठा कएलनि अछि ।

वर्तमान दशकक भारतीय साहित्य नारी आ दलित एहि दुइ बिन्दु पर संकेन्द्रित जकाँ भए गेल अछि । पुरुषक नागफाँस मे फँसलि नारीक व्यथा-कथा एहू उपन्यास मे भेटत आ आनो बहुत ठाम । परन्तु एहिमे किछु नवीनता, आ बहुत किछु विशेषता भेटत । एहि भौतिक जगत मे कोना नायिका अपनहि आदर्श, सिद्धान्त आ

विचारक नागफाँस सँ जकड़ि जायत अछि -

एकर प्रायः सभ नारी विप्रलब्धा आ वंचिता तँ छथि किन्तु प्रताड़िता नहि छथि । ई लोकनि प्रणय-तन्तु कें जोड़ए चाहैत छथि, केहनो स्थिति मे तोड़ए नहि चाहैत छथि । प्रणय-तन्तु टूटैत अछि प्रायः तेसराक प्रवेश सँ । तकरा रोकबाक हेतु लेखिका अपन पात्रक हाथ मे सूप-बाढ़नि वा लाठी-बन्दूक नहि दैत छथि । दैत छथि केवल उपदेश । तेसराक प्रवेश जँ हृदये धरि सीमित रहए, देहकेँ नहि धूबए तँ से अधलाह नहि मानल जाए । हिनक ई उपदेश प्रेमक पथिककेँ व्यवहारविद् बनबैत अछि । मन पाड़ैत अछि मम्टक वचन-व्यवहार विदे शिवेतरक्षतये । पाठककेँ व्यवहार विद् बनाएब आ तद् द्वारा शिवेदर (अकल्याण) सँ बचाएब साहित्य-सर्जनाक अन्यतम प्रयोजन थिक । लेखिकाक स्वस्थ चिन्तन, व्यापक जीवनानुभव, तरल भावुकता, आ गहन सौन्दर्यबोध एहि उपन्यासक गह-गह मे भेटत ।

श्रीमती वर्मा मैथिली साहित्य कें कविता सँ, कथासँ आ यात्रा वर्णन सँ समृद्ध करैत रहलीह अछि । आ एहि उपन्यास मे तँ एकहि ठाम तीनू पबैत छी। दुर्भाग्यवश मैथिलीक कथा-साहित्य एखन धरि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक आंगन खुटेसल रहल अछि । नागफांस एहि छान-पगहा कें तोड़लक अछि । भाषा तँ मैथिली अछि, परन्तु एकर सामाजिक आ भौगोलिक पृष्ठभूमि आधा भारत अछि आ आधा इंगलैण्ड ।

कहि नहि, पाठक एहि सीमा-लंघन कें नव उपलब्धि मनताह कि 'विदेशी' बूझि बैसताह ।

ओना उपन्यास तँ अछि नारीक समस्या पर, परन्तु अन्ततः पहुँचि जाइत अछि भोगवाद वा बाजार-वाद पर जे मानवकेँ मानव सँ विच्छिन्न कए अर्थक पाछा बताह बनबैत अछि । लेखिका बड़े कौशल सँ दुइ भिन्न-भिन्न समस्याकेँ एकमे जोड़लनि अछि ।

रचना अपन उद्देश्य मे सफल होअओ - इएह अछि हमर आशीर्वचन। ओँ स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति !

- गोविन्द झा

पटना, 8 अप्रैल, 2004

आभार

नागफांसक कथानक, रूपरेखा वर्माजीक तैयार कयल अछि। धराक चरित्रक आचार विचार आदर्श सभ हुनके बुनल बानल। किन्तु, धराक प्रेममयता, भावुकता, निश्छलताक जे रूप निखरैत गेल ताहि सँ हम स्वयं संतुष्ट नय छलों। धराक चरित्रक विश्वसनीयता पर संदेह होइत छल। वर्मा जी सँ कतेक बेर बहस भ' जाइत छल। कही इ नारी पात्र अस्तित्वविहीन भ' भारहीन जकाँ हवा मे उछलि नय जाय।

स्त्री होवा कि पुरुष ओ कोनो देश जाति क्षेत्रीयताक बंधन मे बन्हल नय रहैत छैक। ओ मैथिल अमैथिल, बंगाली पंजाबी नय होइत अछि ओ मात्र स्त्री आ पुरुष होइत अछि। कत' खोजी धराक अस्तित्व कें ? वर्माजी हमरा छोड़ि अनन्त मे लीन भ' गेलाह। पंचभूत सं मुक्त हुनक चिन्मय ज्योति हमर प्राणक स्फुरण बनि गेल-

भारतक प्रत्येक राज्य मे छोट मोट मिथिला बसल अछि। कत्तौ जाउ मिथिला मैथिलक छोट छीन संसार भेटि जायत खाहे देश होवा कि विदेश। हवा मे उड़ैत पात सन हम कारेकल, पांडिचेरी अपन बेटी भावना आ ओएनजीसीक चीफ इंजीनियर जमाय पी. सी. नवीन जी लग पहुंचि गेलौं। हिनकर सभक प्रेम आ आदरक मध्य हम अपन असगरपन बिसरैत गेलौं। समस्त ओएनजीसी एहिठाम एकटा परिवार सन छल। देशक प्रत्येक हिस्सा सँ टूटल मृणालिका सन अपन देश कोस छोड़ि कर्त्तव्यक जिनगी जीवैत छल - एक दोसराक दुख मे दुखी एक दोसराक सुख मे सुखी। एहियो ठाम छोट छीन मिथिला छल। किन्तु, एक दिन नवीन जी आ भावनाक एकटा एहेन दोस्त सँ हमरा भेंट भेल जे हमरा किछ सोचवा लेल विवश क' देलक। ओएनजीसीक उच्च पदाधिकारीक ओहि बंगालन पत्नी सँ हमरा बेर बेर भेंट होइत रहल। हुनक करुणा, प्रेम, ममता, पूजा पाठ सेवा सत्कार मोनक सम्पूर्ण उदात्त वृत्ति सँ हम तीतैत भीजैत

रहलौं। आ हमरा लगैत छल हम हिनका कत्तौ देखने छी - बहुत पहिनहि सँ हिनका जनैत छी स्मृति पर जोर दैत छलौं किछ नय मोन पड़ैत छल। हम सभ अनाप सनाप गप करैत रहैत छलौं। एक दोसराक भाव-विचारक स्नेहिल गठबंधन मे बन्हाइत रहलौं।

एक दिन दुपहरिया राति मे जेना अचक्के विद्युत तरंग सन तन मोन से स्वरित भ' उठल - 'अहाँ हमरा नय चीन्हलौं। हम तँ अहाँक धरा छी - सामने अपन मोहिनी मुस्कान संग ओ बंगालन संगिनी ठाड़ छली - हमर नीन्न टुटि गेल - अरे इ तँ धरा छी। नागफाँसक धरा - हम धरा काल्पनिक नय वरन ओकर अस्तित्व अछि। सद्यः, साकार, सुकोमल, धरा। युग युग सँ भटकैत आत्मा कें जेना चैन भेटल, मोन शांत भ' गेल। सुप्रभा प्रसून हमर दशा देखि हँसैत रहल। कारेकल सी बीच, तरंगम बाड़ीक तरंगक मध्य सद्यः साकार धराक सान्निध्य मे नागफाँसक अन्त भेल। आ तैं हम धराक संग अन्याय नय क' सकलौं। हम अपन बेटी जमाय डा. बंदना डा. कौशलेन्द्र, अंकिता अनुपमाक आभारी छी जिनक प्रेमवश हमरा इंगलैंड मे रहवाक सुअवसर भेटल आ ओहिठामक संस्कार संस्कृतिक परिचय भेटल तैं नागफाँस देश सँ विदेश धरिक विस्तार पावि सकल।

मास्को सँ सुपर्णा मनोजक शुभ संदेश अवैत रहल, राजीव जया, संजीव शबनम, तरुणा विकासक प्रेरणा भेटैत रहल एकर पूर्णता लेल।

'नागफाँस' हमर प्रथम आ अन्तिम उपन्यास थीक। एकर पात्र सभक हँसी, खुशी, उमंग उल्लास, व्यथा, वेदना हम चारूकात पसरल देखने छी। प्रत्येक संबंध मे नारीक उदास निष्प्रभ निराश आँखि आइयो हमर मोन कें झकझोरि दैत अछ। लिखवा लेल बहुत किछ अछि किन्तु, आब अपना कें शक्तिहीन पावि रहल छी।

हँ अपन अन्तिम रचना 'किस्त किस्त जीवन' (आत्मकथा) मैथिली हिन्दी मे अनुवाद सहितक समापन मे लागल छी। हम एकरा पूर्ण क' सकी इ आशीर्वाद आ प्रेरणा हम अपन सुधी पाठक आ शुभचाहक लोकनि सँ मांगैत छी।

पं० गोविन्द झा जीक हम हृदय सँ आभार व्यक्त करैत छी जिनक आशीर्वाद हमरा लेल प्रकाश-स्तम्भ रहैछ । संगहि अरविन्द अक्कूजीक स्नेहादर सँ हम स्वयं नमित रहैत छी ।

विद्याकांत अमर दास, सुरेन्द्र झा, मुन्ना आदिक आभार कोना व्यक्त करी जिनक अमूल्य सहयोगक कारण नागफाँस आय अपनेक हाथ मे अछि । अपन देओर मोहन वर्मा, मुखिया जी कें आभारी छी जे समय समय पर नागफांस लेल प्रेरित करैत रहलाह -

अंत मे मैथिली साहित्यक विशाल विद्वत् समाज कें हम कोना बिसरब जिनक प्रेरणा, आशीर्वाद स्नेह हम आइयो दूर्वादल सन धारण कय साहित्य सृजन मे डेगा डेगी दय रहल छी । आय इ पुस्तक हुनके सभकें समर्पित -

-शेफालिका
04.04.2004

आदि

कोठरी मे लागल शीशाक देवार सँ धरा स्कूल सँ घुरैत लड़का लड़की सभ कें देख रहल छलीह। नेभी ब्लू ड्रेस मे आवेष्टित केओ स्वेटर पिन्हने छल केओ नय - सभक गुट अलग अंलग छल। कोनो कोनो लड़की असगर चुपचाप जाइत - बर्फ खसि रहल छल ।

रातुक जमल बर्फ ओहिना श्वेत वस्त्र जकाँ श्याम रंग सड़क पर पसरल छल आ एखनो बर्फक पुष्प माला - हिमकणक फुलझड़ीक असंख्य चिनगी चमकि रहल छल । सर्द किन्तु मीठ हवा तन मोन मे अपूर्व पुलक सँ भरि रहल छल - चारु कात मेघ उमड़ल नय वरन पसरल छल जेना विश्व मे कत्तौ कोनो भाग उजागर नय होय । प्रकृति जेना अपन घमण्डक कुहेलिका सँ समस्त वांतावरण कें आच्छादित करैत होथि -

अंग्रेज बच्चा सभ आनन्दक अठखेली कय रहल छल । कोनो लड़का अपन कोनो दोस्त पर बरफ फेकि रहल छल तँ केओ हिम पुष्प कें अपन तरहथ मे समेटवाक प्रयास - समस्त वातावरण आनन्दक स्वर सँ उन्मादित -

दोसर झुण्ड आयल, एकटा लड़की बरफक खंडी उठाय एकटा छात्रक कमीज भीतर दय देलक - स्वेटर पहिरने ओ ब्रिटिश लड़का बरफक सर्दता सँ रम्भा-संभा नृत्य करय लागल आ ओ आगत्ती अपना आगु बढ़ि गेल - कनिए काल मे ओ लड़का शांत भ' चुपचाप बरफ आँजुर भरि उठाय दौड़ल ओहि लड़कीक पाछु - बड़ तेजी सँ पाछु सँ ओकरा पकड़ि, छटपटा-त ओहि लड़कीक गरदनि सँ, फ्राकक तर मे स्यात स्कर्टक भीतर बरफ दय देलक - ओ छटपटाइत रहल - आ सभ विद्यार्थी आनन्द सँ थपड़ी पाड़ैत रहल - ओहि अंग्रेज कन्याक उज्जर गाल गुलाल बनि गेल - ओ मुस्काइत रहलीह- धरा कौतुक सँ प्रायः प्रतिदिन इ सभ दृश्य देखैत रहैत छलीह - इंगलैंडक शांत जीवन मे स्कूल सँ घुरैत विद्यार्थी गणक इ चंचलता चपलता जेना इएह एकटा क्षण छल जे जीवंत छल -

लागैत छल एहि ठाम जिनगी अछि, गति अछि, साँस अछि - नहि तँ रॉबोट जकाँ अपन अपन कार्य मे जोतल मानव - अपना अपना लेल जीवैत..... कदंबक आवैक समय सँ पहिनहि धरा बैसि जायत छलीह कांचक देवार लग - आ ओहि सड़क परक गतिशीलता ओकर स्थिर जीवन कें गतिमय बना दैत छल - एहिना ओ सीमान्तो के बाट तकैत छलीह। एकटा चीत्कार जेना हृदय सँ निःसृत भेल - जखन ओ सीमान्तक संग रहैत छलीह - बेर होयत नय छल कि ओ खिड़की लग कनि हँटि के बैसि जायत छलीह - आब सीमान्त अवैत होयताह - ओहि काल जीवन मे उछाह छल संघर्षो मे उत्साह छल।

धरा सोचैत रहलीह - मोनक आकास सून छल मात्र एकटा तारा ध्रुवतारा सन कदम्ब चमकि रहल छल.... आय कदंबक साथ इंगलैंड मे ओ एक बरिस सँ रहि रहल अछि - कतेक मनुहार दुलार आदर आ संगहि अधिकार सँ ओकर अपना लग लय अनलक-

माँ - की सोचि रहल छी ? कदंबक स्वर सुनतहि धरा अकचका गेलीह- अपना के नुकैवत बाजि उठलीह - किछ नय बेटा - सोचवा लेल अछि की-?

माँ, इन नय बाजू - सोचवा लेल अहाँक लग अनन्त सागरक विस्तार अछ - हम की नय जनैत छी - आ आस्ते सँ पाछा सँ माँक कान्ह पर अपन हाथ राखि देलक - जेना इएह आधार थीक कदंबक इएह सहारा ! आय वीक एन्ड अछि माँ, चलु अहाँके हम ब्लैकपूल घुमा अनैत छी -

ब्लैक पूल - नाम सुनिते धरा के मोन भेल जे बाजि दी - अन्हार जिनगी कें अन्हार पूल देखा की करब बेटा,- मुदा धराक स्वर अस्फुटे रहि गेल जिनगी ओकर अन्हार छल - सीमान्त ओकर जिनगीकें अन्हारक पहाड़ सँ भरि गेल छल किन्तु, कदंब ओकर जीवनक ध्रुव तारा छल - सून आकास मे एकमात्र चमकैत असगर ध्रुव तारा - कतेक चान सुरुज कें मात करैत -

कदंब इंजीनियर छल - इंगलैंडक वीगन शहर मे नौकरी भेटल। छोट छीन एकतल्ला बंगला - छोट सन बगीचा आगुमे । पैघ

सन गाड़ी पाछु मे ।- अपन गाड़ी छल - मुदा जिनगी मे चैन नय फुरसत नय । भरि दिन काज करैत छल, साँझ सँ भोरि धरि मायक संग - बात करैत - कतेक कम समय मे कतेक कुछ पाबि गेल कदंब अपन मेहनत आ लगन सँ -

की सरियों सीमान्त एतेक भौतिकताक रंगमे रंगा जायत - की ओकरा पत्नी बेटाक देखबाक मोन नय होयत हेतैक ?

जल्दी चलु माँ - बेर निकलल जायत अछ - ओहिठाम जे साँझुक सुन्दरता अछि - कहि नय सकैत छी - फेर गाड़ी पार्क करबाक जगह नय भेटत -

किछ जलखै ल' लैत छी -

किएक माँ ओम्हरे किछ खा लेब - सदिखन अहाँ परेशाने रहैत छी

धरा जल्दी जल्दी तैयार भ' गाड़ी मे बैसलीह - कदंब ओकरो बेल्ट सँ बान्हि देलक आ अपना बेल्ट मे बंधा गेल -

धरा कें एहि बंधन सँ हरदम कचमची होयत छल । बेबस जकाँ ओ स्वयं कें छोड़ि दैत छलीह - इ बेल्ट हमरा एकरती बान्हबाक मोन नय करैत अछ। अनसोहाँत लगैत रहैछ - माँ - बेल्ट नय बान्हबी तँ पुलिस पकड़ि हमरा पचास पाउन्डक चक्कर लगा दैत- कदंब गाड़ी ड्राइव करैत बाजल- सड़कक दूनू कात जे बिजलीक खंभा सभ अछि ओहि मे बीच बीच मे टीवी फिट अछ - एहिठाम गाड़ी एक मिनट मे डेढ़ माइलक स्पीड सँ भगैत अछ- कदंब माय के समझा रहल छल -कतेक बुजुर्ग भ' गेल कदंब ! एतेक स्थिरता एतेक ज्ञान - खास कय माताक प्रति एतेक समर्पित । गाड़ी मे गीत बाजि रहल छल - तू न जाने किस ज़हाँ मे खो गए हम भरी दुनिया मे तन्हा हो गए....

धरा माथ पाछु सीट पर राखि देलक - सभ किछ तँ हेराय गेल ओकरा जीवन सँ - कत' सीमान्त अछि की क' रहल अछ ? पैसाक पाछा भगैत भगैत कोन कुकर्म नय करैत हेताह - मुदा कुकर्म की - ओ शुरुए सँ बिजनेस मैन छल - पाइक पाछा बेहाल, अपन जिनगीक - अपन परिवारक सभक उपेक्षा करैत गेल - ओहि

जनमक संचित पुण्यक कारण ओकरा कदंब सन बेटा भेटल । नहि तँ स्वयं धराक स्थिति की छल -

माँ - किछ नय सोचु । अपना हाथमे मनुष्य कें किछ नय छैक? जे हेवाक रहैत छैक - जे भोगनाय छैक - ओ भोगहि पड़ैत छैक - हम सभ तँ कठपुतली छी माँ - फेर कनि गंभीर स्वरे बाजल- पापा कत्तौ एहि आस पास मे भ' सकैत छथि । एन्ट्री एकटा औद्योगिक शहर छैक विश्वक दोसर सभसँ पैघ रेसकोर्स - ओहि ठाम.... एक बेर....

बात के तोड़ि तोड़ि के आगु मे रखैत गेल कदंब -

धराक मोन जेना ओनाय गेल - पता नय कोन हालत मे छैथ- किन्तु, बेटाकें ज्वार बुझे नय देलक ।

देखु कदंब ओजत' रहैथ जेना रहैथ - स्वस्थ रहैथ खुश रहैथ- बस हम सिन्दुर पहिरि रहल छी हमरा लेल इएह बड़ पैघ बात थीक-

गाड़ी भागि रहल छल - धराक मोन ओहियोसँ तीव्र गति मे भागि रहल छल....

अहाँ गाड़ी अपने सँ किएक नय ड्राइव करैत छी - सीमान्तक कांध पर माथ रखैत पुछलीह धरा -

देखु जे मालिक होयत अछ ओ गाड़ी स्वयं नय ड्राइव करैत छथि वरन ड्राइवर राखैत छथि - इ तँ बड़प्पनक बात थीक -

एह फुसिए बड़प्पन - एतेक गोटे गाड़ी अपना सँ चलवैत छथि तँ की ओ छोट लोग छथि - आकि छोट भ' गेलैथ -

धराक मोन होयत छल सीमान्त स्वयं गाड़ी चलावैथ गुनगुनावैत- गीत बजैत रहैक धरा बगल मे बैसल रहैत - कल्पनाक सतरंगी भाव मोन प्राण मे भरल रहैक -

एक तँ सीमान्त ओहिना बड़ कम समय दैत छल धरा कँ- कहियो काल घुमेवा ले जाइतो छल तँ गाड़ी मे तेसरक उपस्थिति अनिवार्य -

विद्रोही धरा शुरुए सँ छलीह - जिद्दी नय - झुठमूठक परंपराक निर्वाह ओकरा बोझ प्रतीत होयत छल - किन्तु अनुशासनहीन नय रहलीह ।

[illegible] अकरा अहाँ एतेक कीमती उपहार सभ दैत छी [illegible]

सीमान्त चुप रहल

[illegible] हम माफ कय देलौं इ दोसर के अहाँक [illegible] गेल । अहाँक जीवन बड़ स्वच्छ अछि - दुनिया मे [illegible] नय अछि।

देखु धरा, की नीक की बेजाय हमरा पर छोड़ि दिय' - अहाँ दोसर पर अपन कल्पनाक चित्र कें थोपबा लेल चाहैत छी - एकरा लेल अहाँ ओकरा संग जबरदस्ती करैत छी -

ठीके बात छैक हम अपन आदर्श कें अहाँसभ पर थोपवा लेल चाहैत छलौं । अपन इच्छा कामनाक पूर्तिक पाछा हम सभक पाछा भगैत रहलौं - पूर्ण मानव हमरा नय भेटल -

हा हा पूर्ण मानव - हँसैत सीमान्त बाजल - धरा की अहाँ पूर्ण छी - की अहाँ मे कमजोरी, अवगुण नय अछि ? अहाँ आन मे जे देखैत छी - की अपना लेल अहाँक इ खोज नय अछि .... भगैत कार अचक्के हिलकोर लेलक आ हायवे सँ मोटरवेज मे घुमि गेल। धराक कल्पनाक संग समस्त मनोदशा मोटरवेजक नैरो सड़क पर चलि गेल....

आ धरा के लागल जेना सीमान्त ओकर अस्तित्वक दर्द कें झकझोरि देलक धरा । आदर्श सिद्धान्त नियम कानून-एकरा सभ कें अपन जिनगी बना जीव चाहैत छलीह । घड़ीक नोंक पर जिनगी ओकरा नीक लगैत छल । सूर्योदय सँ पहिने उठवाक ओकरा हिस्सक छल जे अपन माता पिता आ पुनः सासु ससुर सँ विरासत मे भेटल रहैक ।-

समय पर उठनाय - नहा धो सात बजे धरि सभ तैयार भ' अपन अपन काज के लागि जायथ - नौ बजैत बजैत सभ नश्ताक टेबुल पर आबि जायथ बाप सँ ल' क' बेटा धरि घरक व्यवस्था सँ ल' नौकर चाकर धरि - एकटा अनुशासन मे बद्ध राख' चाहैत छलीह ।

धराक व्यक्तित्व, ओकर सुरूचिक छाप घरक प्रत्येक वस्तुजात

पर छल - जे चीज जत' सँ उठायल जाय ओहि ठाम राखि दी - घरक सोफा टेबुल अल्मारीक ध्यान सभ गोटे राखय जाहि सँ ओहि पर बौल नय देखा पड़ैक - एतबे नय बिछानक चद्दर पर केओ पएर उठाके नहि बैसय । चद्दर पर कोनो क्रीज नय पड़ल रहैक - छोट पैघ के आदर दैथ, पैघ छोट के सिनेह किन्तु एकटा मर्यादाक सीमा रेखा प्रत्येक सँबंधमे धरा कें नीक लगैत छ्ल । ओकर भावुक हृदयक विशालता मे सभक लेल स्थान छल । सभक दुख सुख कें अपन दुख सुख बुझैत छलीह अपन बेटा-बेटी पति, मे दुनिया जहानक सभ अच्छाई भरि देवा लेल उत्सुके नय वरन् तत्पर सेहो । जे ओ छली ताहि सँ बेसी उन्नत आ उत्कृष्ट बनेवाक यत्न प्रयत्न, एकरा ओ दिव्य रचनात्मक काज बुझैत छलीह संगे समाज मे एकटा अनुपम उपहार ।

किन्तु यदि केकरो हृदय मे कनिको दुराव छिपाव आकि मलिन भाव देखैत छली तँ ओकर सामीप्य तँ दूर घर मे ओकर उपस्थितियो ओकरा असह्य मानसिक यंत्रणा सँ भरि दैक - विचित्र छल धराक मानसिक धरातल सहज रहितो दुर्बोध ।

किन्तु, की हश्र भेल धराक ! आकास, तरंग, सीमान्त, वन्या जलद - कतेको चित्र विचित्र भरि रास्ता ओकर आँखि मे नचैत रहल ।

आकाशक की आकाश कें ओ अपन आदर्शक प्रतिमूर्ति बुझैत छलीह- धरा आय धरि आदर्श सिद्धान्त कें मीमांसा मे लागल रहलीह- पाप की पुण्य की -

अहाँक हँसैत देखैत छी धरा तँ हमर मोन प्राण विहुँसि जायत अछ... अकाशक शब्द ओकरा सिहरा दैत छल - तन मोन कें प्रकंपित -

हँसी ! की हँसीक एतेक महत्व होयत छैक धरा सोचैत छलीह- किछ तँ अवस्य महत्व होयत हेतैक जे हँसी तँ सभ सुनैत अछि - देखैत अछि असर असगर आकाशे पर किएक -

माँ इ ब्लैक पुल छी - लगैत अछ जेना असंख्य तरेगण धरती पर नाचि रहल होय - दूरे सँ देखा पड़ैत अछि ।

रातुक अंधकार मे बिजलीक अदभुत छटा ब्लैकपुल मे देखा पड़ैत छैल- लगैत छल समस्त ग्रह नक्षत्र चान तारा सुरुज सभ धरती पर अवतरित भ' गेल होय -

अनन्त सागरक विस्तार - दूर दूर धरि पसरल छल - टू पीस पहिरने जोड़ा सभ समस्त दीन दुनिया सँ अलग अपने अस्तित्व मे जीवित छल - ककरो सँ कोनो मतलब नय । के स्त्री के पुरुष - कोनो बंधन नय कोनो आवरण नय- एक दोसरा पर खसैत पड़ैत जिआइत - सिगरेटक धुंइया मे, उत्कट वासना मे असीम तृप्तिक संसार सँ इहो एकटा संसार छल एहि पृथ्वी पर । एकटा छोट रेलगाड़ी पर लोग सभ बैसल ।

माँ देखैत छी इ लंकास्टर थीक - सड़क देखि रहल छी खाली ऊपर नीचा - इ पर्वतीय क्षेत्र कहवैत अछ - धरा चौंकि वर्त्तमान मे आबि गेलीह -

- कदंब धरा कें बुझवैत रहल ।

- गाड़ी आब लंकास्टर नहर पर सँ जा रहल छल - दूनू कात हरियर हरियर मैदान ताहि पर उजर उजर भेंड़ सभ चरि रहल छल- ओहि पुलक नीचा लोग सभक घर छल । सभ घर एके तरहक - एके हाइटक -

- इसभ पोचाड़ा नय करवैत छैक कदंब की - धरा चकित छलीह -

- पोचाड़ा करा सकैत अछ किन्तु, सरकार सँ परमीशन लेम' पड़तैक - एहि सभ के पड़वाक केकरा फुरसत छैक । बाते बात मे ब्लैक पुल पहुँचि गेल।

इ रौलर कौस्टर थीक माँ - संसारक सभ सँ नम्हर सभ सँ तीव्र ट्रेन थीक - स्यात खतरनाक सेहो - धरा आस्ते सं बजलीह ।

बीक बात पर कदंब हंसि देलक - अहीं तँ कहैत छलौं माँ - लाइफ इज ए चैलेन्ज, एक्सेप्ट इट-

धरा कनिक मुसकाक देख' लगलीह - कतेक अंग्रेज नौजवान- धीया पुता सभ रौलर कोस्टर मे बैसल - बेल्ट सँ बान्हल - ओ ट्रेन जखने नीचाक पटरी पर खसैत छल तँ सीधे - कतौ कनिको

आधार नय - सभटा सवार दुनू हाथ उठाय एकेसाथ हाक्रोश करय लगैत छलैक -

-धरा सोच' लगलीह - अंग्रेज सभ अपन बाल बच्चा कें एहिना ताकतवर बनवैत अछि की ? कतेक खतरनाक रोलर कोस्टरक खेल छल, जेना आगि मे झोंकि दैत अछि लोग अपना कें - अपन बाल-बच्चा कें- लड़ाइ करू। जिनगीक संघर्ष सँ - चुनौती स्वीकार करु - .

सागरक लहरि तड़पि तड़पि किनार पर लौटि रहल छल - तट कें अपन बाहुपाश मे लेवा लेल बेर बेर आतुर भ' रेतक छाती पर लोटि रहल छल मुदा कतेक कष्ट - छाती पर लोटितो किनार के बाहुपाश मे बान्हि लेबाक आकांक्षाक संगे पाछा हँटि जायत छल -

- तँ की धराक जिनगीक इएह हाल अछि ? धरा की अपना आप के स्वयं आगि मे झोंकि देलक? अपन जिनगीक आदर्शकें सभ पर थोपवामे ओ स्वयं कतेक असगर रहि गेलीह - एकटा नागफाँस मे बान्हल ओ दंश सँ छटपटा रहल छलीह - एक बेर ओ कदंबक संग लीवर पुल गेल छलीह।

धरा चकित छलीह लीवरपुलक ऐतिहासिक सौंदर्य आ संस्कृति देखि। लीवरपुल १४२ किमी. नम्हर मर्सी नदीक मुख मे बसल अछि। जखन कि स्वयं मर्सी नदी आइरिश समुद्रक गर्भ सँ बहरायल अछि।

सभ सँ पहिने एहिठाम डॉक बनायल गेल छल । १७१५ ई० मे ११ किमी. नम्हर इ डॉक अछि - एहि डाक पर कतेक काल ध रि मर्सी नदीक ज्वारभाटाक हाहाकार सुनैत रहली धरा - किनारक छाती पर माथ धुनैत देखैत रहली - नदीक दोसर तट पर बिजली जगमगा रहल छल - इ कोन जगह थीक कदंब -

इ विरल थीक माँ - मर्सी नदीक एक किनार पर लीवरपुल अछि आ दोसर किनार पर विरल अछि -

लोग ओहि पार कोना जायत अछ - ? पुल बनल छैक की -?

नय माँ - एहि नदीक भीतरे भीतर टनेल बनल अछि - जाहि सँ लोग एहिपार सँ ओहिपार जायत छैक - दुइ दिस सँ टनेल बनल अछि जेवाक लेल-

नदीक भीतर भीतर - धरा सिहरि गेलीह-

कार, बस, ट्रक सभ जायत छैक, प्रकाश छैक - आक्सीजन छैक - जेना कल्पने सँ धराक दम घुटय लागल ।

कदंब हँसय लागल - माँ सभ किछ संभव छैक - इ सभ विज्ञान आ तकनीकीक कमाल छैक - आदमी कतेक प्रगति क' रहल छैक - इ अलबर्ट डॉक अहाँ देखैत छी ने - इ सभ सँ प्राचीन डॉक थीक । दुनियाक समस्त व्यापार इंगलैंड मे एहि ठामसँ पानिक जहाज सँ होयत छल - अफ्रीका सँ गुलाम बनाय एहि डॉक पर आनल जायत छल । वेस्ट इंडीज सँ मसाला भेजल जायत छल-

कदंब अहाँ की सभ बजैत छी - अच्छा अहाँक हम बताएब माँ - पहिने चलु एहि ठामक सभ सँ पुरान रेस्तराँ ल' चलैत छी - कदंब कार चलवैत धरा के समझावैत रहल - माँ - अहां अन्यथा नय लेब - आब तँ अहाँ एहिठामक रहन सहन सँ परिचित भ' गेल छी - इ रेस्तरां डॉकक एक किनार पर अछि -

सड़कक दूनू दिसि पैघ पैघ महल दोमहला - ओहि जमानाक कारीगरीक भव्यता विशालताक बोध होयत छल - बंबईक ताज होटल - गेटवे आफ इंडिया कलकत्ता मे विक्टोरिया मेमोरियल एकर सभक एकटा अंगे छल ने -

गाड़ी हवा सँ गप करैत एकटा सुनसान जंगल झाड़ि लग रुकि गेल -

मर्सीक एहि सुनसान तट पर ११ माइलक डॉकक एक हिस्सा मे छोट छीन रेस्तरां स्थित छल - ब्रिटानिया - ओहि उपर मे पीतलक बड़का स्लैब मे लिखल छल व्हीट ब्रेड पी.एल.सी. १७४२ - यानी १७४२ मे ई रेस्तरां बनल छल - एहि ऐतिहासिक रेस्तराँक बाहर कतेको कार पार्किंग मे लागल छल..रेस्तरांक बाहरक ओसारा पर काठक बेंच आ टेबुल सभ लागल - ओकरा समक्ष डॉकक एकटा हिस्सा भागि रहल छल - पक्का यानी पाथरक बनल ओ रास्ता रेलिंग सँ घेरल मर्सीक कात-नदीकओहि पार विरल शहर रोशनी सँ जगमगा रहल छल - पता नय किएक इंगलैंड मे सभ दिन दीवालिए लगैत अछ। गर्मीक आगमन भ' गेल छल किन्तु हवा मे नमी - धरा

हेराय गेल छलीह जेना कतौ भटकि गेल छलीह.... जकर जकर नजदीक गेलीह ओ सभ ओकरा सँ दूर भ' गेल - जकरा जकर ओ चाहलीह - सभ हेराय गेल - धराक नियति रहल - किछ तँ नय बाँचल -' किछ तँ नय -

माँ - धरा कँपकपाय गेलीह - कदंब रेस्तराँक शीशाक दरवज्जा खोलने ठाड़ छल -

धरा चुपचाप भीतर घुसि गेलीह -

चारु कात अंग्रेजे अंग्रेज - सभक जोड़ बनल । अपन अपन जोड़ा में आलिंगित, दीन दुनिया सँ बेखबर - सिगरेटक धुंइया सँ भरल वातावरण - रेस्तराँक एक कोन मे पब सेहो छल जाहि ठामक नजारा किछआर छल -

एहि सभ सँ अलग दोसर कोन मे कदंब अपन माय के ननस्मोकिंग जोन मे बैसा देलक जाहि ठाम सँ मर्सीक छातीक दरद-असगरपनक झलकी साफ दृष्टिगत होयत छल - रेस्तराँक पारदर्शी शीशा सँ - सुन्दर सुन्दर नवयुवती मेम अर्द्धनग्न वेट्रेस मशीन जकाँ अपन काम करैत - मशीन जकाँ मुस्काइत चुपचाप - मौन मूक देखा पड़ैत छल ।

कतेक अनुशासन एकरा सभ मे छैक - एतेक भीड़ रहितो कोनो हल्ला नय - कोनो हलचल नय - कोनो टेंशन नय - तावत एकटा लड़का ट्रैक सूट पहिरने संगे एकटा अंग्रेज लड़की सुन्दर श्वेत कटि क्षीण मुदा नितम्ब एतेक चाकर जेना पाथर पाछा सँ लटकल एकदम एबनार्मल सन - आबि हुनका सभक बगल क मेज कुरसी पर बैस गेल । दूनू एक दोसराक आमने सामने बैसल - टेबुल पर हाथ के मोड़ि ओहि पर अपन चेहरा राखि देलक एक दोसराक आँखि मे टकटकी दय देख' लागल - विचित्र इ तन मनक रहस्य थीक - कोन गति मति मे कोन आनंद भेटैत छैक पता नय - कोन क्षण मे कोन इन्द्रियजनित उन्माद सँ मोनक तुष्टि होयत छैक - इ रहस्ये रोमांचक होयत हेतैक -

कदंबक संग आब एहेन सभ जगह मे घुवाक ओ आदी भ' गेल छली। शुरु शुरु मे ओकरा बड़ खराब लगैत छल - बेटा संग

एहि सभ जगह मे उठैत बैसैत घुमैत फिरैत - मुदा, मोने सीमान्तक खोजक आवेश नुकायल रहैत छल - ओ जनैत छलीह सीमान्त एहि सभ मे कतौ अछ - कत' अछि - एतेक टाक विदेशक कोनकोन मे नशा मे औघड़ायल होयत, कोन अट्टालिका मे पैसा सँ खेलैत - होयत - कोन नितम्ब सुन्दरी पर लोभायल होयत - इ खोजे मृगतृष्णा छल - किन्तु एहि मृगतृष्णा मे ओ ओझरायल तँ रहैत छलीह । अपना मोन कैं व्यस्त तँ रखने छलीह ।

कदम्ब चुपचाप माँक आँखि मे देखि रहल छल । जहिया सं चेतना आयल छल, गामक पोखरि मे कोकाक फूल खिलल देखैत छल तं सदिखन माएक भाव भरल आँखि ओकरा मोन पड़ि जाय - एकटा सांध्य गगनक उदासी मायक आँखि मे सदिखन पसरल रहैक, एकटा शून्यता मुदा अधर पर सदिखन हँसी आ मुस्कीक झिलमिल प्रभा रश्मि...

कखनहु कखनहु कदंबक भावुक मोन मायक आँखिक उदासीक राज आ अधर पर कखनहुँ कोनो गीतक पाटल खिलय तँ ओस बून्न भरल उदास संगीतक हीरक हार लेल मोन छटपटाय - मुदा माय प्रभुदित पुछी तँ कोना पुछी - माय बेटाक अथाह प्रेम छल मुदा बीच मे एकटा सागरक दूरी छल - धाख कैं आदरकैं ! अन्तर मे अनुभूत केनाय आर बात थीक आ ओकरा उदभूत केनाय आर बात - माँ हमर नाम कदंब किएक राखलौं - एक बेर वाल्यकाल मे ओ जिज्ञासा केने छल - इ फूल तँ दुइ दिन मे मुरझाय जाइत अछ -

माय भरि पाँज पकड़ि ओकरा करेजा सँ सटाय नेने रहैक - नहि बेटा अहाँ पृथ्वीलोकक कदंबक फूल नय छी, अहाँ तं ओ कदंबक फूल छी जकर ठारि पर प्रेम आ योग क ब्रहम साक्षत-कृष्ण झूला झूलैत छथि - हम अहाँ मे संसार जहानक प्रेम भरि देने छी - अहाँ अपन माता पिताक अपूर्व प्रेम आ विश्वासक स्मृति श्रृंगार छी? विश्व बंधुत्व भावनाक स्वर सँ अहाँक साँसक तार तार के हम भरने छी -

आ तखन कदंबक मोन मयूर नाचि उठल छल मोरपंखी कृष्णाक स्मृति मे - प्रेम आ विश्वासक पाठ माँ पढ़ौने छल । जखन

मानव विश्वास कय प्रवंचित हेवाक डर सँ अविश्वासक संदेहात्मक अंधकारमय पथ चुनैत अछ तँ ओकर सर्वनाश निश्चित अछि । विश्वासे पर धरती टिकल अछि । ईश्वर पर विश्वास भेला सँ भवसागर सँ निवृत्तिक सहारा भेटैत छैक । माता पर विश्वास कयला सँ सन्तान प्रेम जीवन आ सुरक्षा पवैत अछि - गुरु पर विश्वास कयला सँ ज्ञान विज्ञानक अखंड ज्योति प्राप्त होइत अछि ।

कोनो नववधू माय बापक स्नेह-साम्राज्य छोड़ि एकटा अपरिचितक हाथ पकड़ि अनजान परिवारमे जिनगी बीतएवा लेल चलि दैत अछि इ की विश्वास नय थीक - जाहि दिन इ विश्वास खत्म भऽ जायत मानवक सभ किछ महासागरक अतल गहीरा मे निमज्जित भऽ जायत - मानव जुआ मे हारल पांडव जकां स्वयं निर्वासित, निष्कासित भऽ जायत -

धरा के मोन पड़ि जायत अछि अपन माएक अस्फुट स्वर - धरा पैघ भ' गेल ओकरा लेल सोचैत किएक नय छी -

अहाँक कतेको बेर कहने छी धरा हमर सभक बेटी नय बेटा छी - पापा हँसि दैत छलाह - एकर शिक्षा दीक्षा संस्कार देखैत नय छी -

अहाँ बुझु बेटा बेटी - मुदा हमरा तँ होयत अछि कखन ओकर ब्याह होय नीक घर वर भेटि जाय -

चिन्ता हमरो अछि - हमहुँ बुझैत छी - लेकिन एखन ओकरा पढ़ऽ दिऔक । जीवन मे सेटल होमऽ दिऔक - एखन ब्याह कऽ देब - चूल्हा चौका मे लागि ओकर सभ प्रतिभा धूसर भऽ जायत।

अहाँ बुझैत नय छी - नारीक असली रूप वएह थीक - दार्शनिक स्वर मे माय बजैत छलीह असली रूप हँ - ठीके बजैत छी अहाँ । मुदा हम सोचैत छी हमर बेटी सासु मे राज करय । अपन पएर पर ठाड़ भऽ अपन पतिक असल संगिनी सहयोगिनी बनय - ओकर अपन व्यक्तित्वक विकास होमऽ दिऔक - तुरंत ब्याह क' देब - की लड़का दरवाजा पर ठाड़ रहैत छैक जे अहाँके तुरंत भेटि जायत - मायक मोनक अस्थिरता मे चैन नय ।

हम अहाँ जकाँ किछ बजैत नय छी तँ अहाँ बुझै छी हमरा

चिन्ता नय अछि - पापा हँसैत बजैत छ ाह - हमरो चिन्ता अछि अपन बेटीक भविष्यक। देखु धराक माय, स्वाति नक्षत्रक कोनो बून्न धरतीक कोर मे खसैत अछि तँ बिला जायत अछ आ कोनो सीप मे खसैत अछि तँ मोती भऽ जायत अछ। हम धरा लेल वोहि सीपक प्रतीक्षा कय रहल छी जाहि ठाम हमर धरा मोती बनि अपन ज्योति कँ प्रखर कय सकय......... देखु, लोग बेटा बेटी के जनम दैत छैक पुनः योग्य बनाय ओकरा एकटा नीक जीवन संगी द'क' माता पिताक कर्त्तव्यक इति भ' जायत अछि । तकर बाद पोता पोती, नाति नातिन-इ सभ तँ मोह माया थीक - मायक दर्शन छल - ठीक छै, जाहि दिन हमरा नीक आ योग्य लड़का भेटि जायत हम धराक ब्याह कऽ देब - योग्य तँ बुझि गेलौं - नीक कोना बुझब अहाँ - पिताक परिहास छल मुदा माइयो कम गंभीर नय छलीह -

नीक लड़का आ लड़की हम परिवार सँ नय लेब वरन् लड़का लड़कीक माय बाप के देखवाक चाही । यदि माय बापक संस्कार नीक अछि, सहमिलु उदार सहिष्णु अछ तँ ओकर संतान अवस्य नीक हेवे करत कम बेसी...

मायक मुंह सँ एहेन सारगर्तित विवेचना सुनि पिताक संग संग पुत्री सेहो चकित भ्रमित छलीह-

बात पिताक रहि गेल ? एम. ए.क रिजल्ट निकलबाक संगे सीमान्त ओकर जीवन साथी बनि गेल- योग्य आ नीक । किन्तु, भविष्यक गर्भ मे केकरा लेल की नुकायल रहैत अछि केओ नय जानैत अछ । धराक मन मे ब्याह कालक कुमारि मोन पड़ि जायत छल - धीर धरू जननी अधीर अति जनि होउ, कहु कियो भेटि सकै विधि केर रचना.....

माय बापक दुलारि अल्हड़ धरा करिया झुम्मरि खेलै छी, लीख पटापट मारै छी क चकरघुम्मी दालि दरड़ि मूंग दरड़ि बाबा पोखरी मे पांच मछरीक खेल कूद कर वाली धरा अपन गृहस्थ सासुर मे चलि एलीह, सीमान्तक पत्नी बनि, कतेको जिम्मेदारीक संगे । नचैत गवैत झूमैत झामैत बेटी कोना अचक्के दोसर घरक पुतीह बनि जायत अछ । कतेक अपेक्षा आकांक्षा लोग के ओकरा सँ

होभ' लगैत अछ । केओ ओकर दर्द कैं नय बुझि सकैत अछि - बाबू जीक रहि हम बेटी बतहिया - जाहि ठाम सभ अपराध क्षमा - सभ राग रंगक स्वाधीनता - सभ दोष अदोष सँ रहित जीवन उछलैत छल। उछलि उछलि के घरक कामो करैत रहैत छलीह - जेना पएर मे पंख लागल होय - माय पीतीआइन सभ बजैत छलीह - हमर बेटी बड़ काम काजुल अछि । कतेको पैघ सासुर होय फटाफट सभक काज कय देवा लेल तत्पर - पता नय बेटी के जन्म होयतहि लोग किएक ओकरा सँ खाली घरक काज करय वाली बुझ' लगैत अछि - ब्याहि धरा के लगैत अछि जेना जिनगी भरि लेल एकटा नौकरानी के लोग बाजा गाजाक संग ब्याहि ल' जायत अछ । जिनगी भरि खटैत रहु सासु ससुर दीयर ननदि सभ लेल, फेर पति लेल आ अंत मे अपन संतान लेल - ओकर धीयापुता लेल - बिना दरमाहाक नौकरानी - एकटा पुतौह घर आबि जायछ समस्त परिवार निचिन्त भ' जायत अछ - आराम भेल फलां गाम वाली बड़ नम्र बड़ दीब- किन्तु जकर ग्रह दशा विपरीत रहैत अछ तँ भरि दिन टोका टोकी - इ नय करु उ नय कय करु, एना नय खाउ ओना नय खाउ - एहि सभ मे तंग तंग भ' जायत अछ स्त्री । एकटा आदेश, आज्ञा, प्रतिबंध क कारा मे बंदिनी भ' जायत अछ स्त्री । सभ काज सासुरक करैत रहैक मुदा कोनो प्रश्न पुछवाक स्वतंत्रता नय, किन्तु किछ अपवादो होइत छल जे अपन अहंकार मे सासु ससुर केकरो मोजर नय दैत अछ ।

धराक ब्याहक तैयारी चलि रहल छल - चारू दिसि घर मे उछाह उत्साहक वातावरण । आशा आनंद भय सँ जेना धराक हृदय तरंगित रहैत छल। आकाश मे उगल सतरंगी इन्द्रधनुष देखि रहल छलीह - कोन जीवन मे जा रहल छलीह कत' जा रहल छलीह - आकाश मे झुण्ड-झुण्ड चिड़ै पंक्तिबद्ध भ' मुक्तिक गीत गवैत उड़ि रहल छल । स्वच्छन्द निर्बंध - विशाल विस्तृत अंतहीन आकाश मे धरा उड़ि रहल छलीह । पवन संचरित मोनक नाह जेना वेगक संग धराक जीवनो कैं उड़ा रहल छल -

सीमान्तक संग तनक आनन्द मोनक आनन्द हृदयक आनंद सभ

किछ ओकरा भेटल । कत्तौ कोनो प्रतिबंध सीमान्त नय लगौलक ओकर मोन पर, कल्पनाक उड़ान पर । भरि दिनक थाकल ठैहआयल तन मोन प्राण सीमान्तक भुजलता मे फंसि असीम तृप्ति आ शांति, आनन्दक अनुभूति होयत छल धरा के । सीमान्तक प्यार दुलार जेना ओकरा जीवनक कोनो संघर्ष सँ लड़वाक चुनौती दैत छल। मोनक मोनकमल खिलि खिलि उठैत छल ।

धराक आँखिकैं जेना अतीतक एकटा सिहक आबि घुवि गेल। एक दिन ओ सूतल छलीह । भोरे सीमान्त टहलि कैं घुरल तँ ओकरा हाथ मे गुलाबक ओस मे नहायल लाल लाल फूल छल जाहि सँ बड़ शीत, मधुर एवं मनोहर सुरभि निकलि वातासक अन्तसकें आन्दोलित कय रहल छल । ओ चुपचाप आबि सूतल धराक मुंह पर फूलक गुच्छा राखि देलक । गुलाबक नरम नरम सर्द स्पर्श सं धरा चिहुंकि उठलीह अर्धनिमीलत नयन आनत कय मुक्तावली अधर कपाट सँ छिरिआय देलीह ।

'फूलक राजकुमारी' - हल्लुक स्वरे ओकर कान मे गुनगुनाय देलक ।

धरा खिलखिलाय उठलीह । लागल जेना बहारक देवी प्रेमक अद्भुत छटा सँ अवतरित भऽ उठलीह ।

अहाँ हमरा एहिना सभ दिन मानवैक नय ? - फूलक राजकुमारी, बहारक देवी अधरोष्ठ संगीतक लहरि गवाय देलक ।

'अहांक कोनो शक ?

'उहुं - बहुत आत्मविश्वास सँ धरा ओकर हाथ अपन छाती पर राखि नयन निमलीत कऽ लेलीह।

आ सीमान्त ओकर केश मेघ सं खेलैत रहल अपन खियालक गहीर सागर मे उतारि गेल जाहि ठाम एहेन अनमोल मोती छल जे दुनियाक कोनो गहना मे नय छल । एहेन पारिजात सुमन छल जे संसारक कोनो उपवन मे नय छल ।

धरा चौंकि उठलीह खिड़की लग सँ अवैत आकाश मे हल्ुक तमसय आवरण टंगा गेल छल । कत्तौ कत्तौ कोनो तारा ओहि आवरणाक घोघ सँ बाहर निकलवा लेल प्रगल्भा चंचला जकाँ

मचलि जायत छल । सर्द वातास थम्हि गेल छल । उपवनक सघन तरु मौन मूक भऽ सोचक सागर मे डूबल छल जेना यमदूतक दयनीय दूत कोनो सती साध्वीक अकाल अर्थी ल' जेवा लेल बेबस ।

कतेक सांझ ओ अपन पति एवं नेना सभक संग एहि उपवन मे बितौने छलीह । एहि उपवनक तृण तृण मे, पत्र पुष्प सभ चीज मे धराक सांसक सुरभि लटपटायल छल ।

छोट छीन कनिया पुतरा जकाँ अपन घर, दुई निश्छल मृग शावक सन नेना, अतुल स्नेह सम्पत्ति विशाल हृदय वाला पति । गहना जेवर कपड़ लत्ता की नय छल धरा के ।

छोट सन गृहस्थीक मध्य कदम्बक आविर्भाव भेल । मातृत्वक प्रसव पीड़ा आ सृजनक आनन्द ओ जेना विधाता बनि गेलीह - कदम्बक संग संग धराक जिम्मेदारी ओकर भाव आर बढ़ि गेल । कदम्ब कें तेल लगेनाय, स्नान करेनाय, ओकर पौटी साफ करनाय- ओ सुतैत छल तँ धरा सभटा काज जल्दी जल्दी खत्म कर' लगैत छली । बीचे मे कदम्ब उठि कानय लगैत छल तँ दौड़ के धरा चुप करय चलि जायत छलीह । सीमान्त बगल मे बैसल रहैत छल किन्तु ओ कदम्ब के कोर मे उठवैत नय छल । उलटे चीकर' लगैत छल- की करैत छी ? कदंब कानि रहल अछ । भनसा घर सँ आटा लागल हाथ आ कि मसाला लागल हाथ दौड़ि जायत छलीह - कनैत कदंब कें उठाय छाती सँ लगाय लैत छली । ताहि पर सीमान्त - बाप रे कोनो चीजक ढंग अहाँ के नय अछ । कोना रहैत छी कोन बगे बनौने रहैत छी । पक्का देहातिन जकाँ -

धरा शुरु शुरु मे एहि सँ अवचंक भ' जायत छली किन्तु बाद मे बुझ' लगलीह - पति पत्नीक बीच संतान कतेक ठाम निकटताक कारण बनैत अछ तँ कत्तौ उदासीनताक । सीमान्त के लगैत छल धरा कदंब पर बेसी ध्यान देम' लागल आ हमर उपेक्षा - धरा सभटा बुझैत छलीह । ओ सदिखन सोचैत छलीह कदंब सभदिन सीमान्तक बेटा कहाओत धराक तँ नामोनिशान नय रहत। हँ जखन नैहर जायत तखन ओहि ठाम सभ बजैत अछ - देखु धराक बच्चा कें - धराक नेना के - ऐन मेन धरा सनक तखन धराक आत्मतुष्टि भेटैत छल-

हँ कदंब हमर संतान अछि - हमर बेटा - ओहिठाम सीमान्तक चरचो नय होयत छल । किन्तु, नैहर सँ बाहर सासुर सँ समाज धरि, देश सँ विदेश धरि ओ सीमान्त बाबूक बेटा अछि-आखिर किएक स्त्री जिनगी भरि खटैत रहैत अछि - कथीक गुलामी अपन अस्तित्व कें मेटाय; अपन सर्वस्व होम कय ओकरा भेटैत की अछ ।

बच्चा जन्म लैत अछि । सृजनक आनंद - शिशु आगमनक उल्लास परिवार मे चाँदनी बनि बरसैत अछि, किन्तु केओ नय जनैत अछि इ नेना पैघ भ' क' की बनत ? नेनाक आँखिक निश्छलता मे, अधरक मुस्कान मे माता अपन जिनगीक समस्त दुख बिसरि जायत अछ । माँक दुलारि प्यारि कें बेटा अचक्के जेना चीन्ह लगैत अछि। नेनाक बिन किछ बजने माय ओकर इच्छा बुझि लैत अछि । मुदा इ सभ कतेक दिन -

जीवन चक्र सतत घुमैत रहैछ । कत्तै किछ स्थायी नय - सीमान्तक प्रेमक रंग उड़ैत गेल । व्यस्त भ' गेल अपन काम काज मे- छोट छोट बात मे धराक उपेक्षा कर' लागल । धराक भावुक मोन एहि लघु घात प्रतिघातो के नय सहि सकय । किन्तु धरा बुझैत छलीह - सीमान्तो की करत ? जखन किछ राग विराग करैत छलीह तँ सीमान्त बजैत छलाह -

धरा, अहाँ नय बुझैत छी । हम जे एतेक खटैत छी, मरैत छी अहीं लेल ने । एहेन महगी मे जकरा संग टाका नय ओ कोनो मनुख भीक ? ताहि मे हमर बिजनेसे दौड़ धूप वाला । हमरा की अहाँ सभ के छोड़ि एतेक दौड़ धूप करवा मे मोन लगैत अछि ? सदिखन एतवे सोचैत छी धरा जे अपन माय बापक दुलारू बेटी के हम दुनिया जहान के सुख दय सकी ।

आ पिघलि जायत छली धरा - किन्तु सीमान्तो गलत नय छल - धराक भावुक अन्तर के कत्तौ न कत्तौ स्पर्श अवश्य करैत रहैत । तेँ तँ एकदिन असगर धरा कें नौकरी करवाक सलाह देलक- सलाह नय - वरण ओकरा विवश क' देलक - कदम्ब आ मंजुल नूपु बाहर पढ़ैत छल - धरा असगर भ' जायत छलीह -

धराक करेज मे जेना कोनो तोड़ फोड़ होमऽ लगैत अछ,

एकटा प्रचण्ड बिरड़ो जकाँ । मिथिलाक अंचल मे अपन पति सँ दूर एकाकिनी धराक कतेक साहसिक डेग छल नौकरी करवाक। जहि ठाम चारु दिसि महिला जागरणक धूम मचल अछ ओहिठाम एखनो एहि छोट सन शहर मे कोनो स्त्री कें कोनो आन पुरुष सँ संभा करैत देखि घोघ्र तरक आँखि ज्वालामय भऽ उठैत अछ आ पति पत्नी दूनू मिलि ओहि स्त्री कें चारित्रिक पतनक गाथा गवैत रहैत अछ । तखन धराक इ साहसिक डेग नय तँ आर की छल ?

ओकर भावुक मोन सदिखन कत्तौ भटकल कत्तौ बिसरल रहैत छल आ तैं तँ सीमान्त बजैत छल धरा, हम जनैत छी अहाँ लेखिक छी, कवयित्री छी - ककरो माय छी, केकरो पत्नी - आ सीमान्तक इ कथन ओकरा अपन उत्तरदायित्वक भान करा दैत छल- नहि यै, सभ किछ जानितौं हम कतऽ भटकि जायत छी - हमरा माय पत्नी किछ नय बनवाक चाही किछ नय - धराक नयन मेघ खंड सँ भरि जायत छल । आ सीमान्त चुप भऽ जायत छल । अपन एहि भावुक पत्नीक नोरक एक बून्न पर ओ सौ जान सँ निछावर छल। आ तैं धरा अपन पतिक सहिष्णुता, उदारताक आभारी भऽ जायत छलीह। आ सीमान्तक निर्णय छल - 'धरा हम सोचैत छी अहाँ कोनो कालेज मे लेक्चरर भऽ जाउ । हम भरि दिन व्यस्त रहैत छी । बेसी समय शहर सँ बाहरे बितैत अछ। कदम्ब बाहरे पढ़ैत अछ, धराक पीठ पर हाथ फेरैत सीमान्त बाजइत रहल - पसिन्न पड़ल हमर विचार ? अहुँ इनेज्ड भऽ जायब आ अहाँक लेखन सेहो चलैत रहत- पहिने तँ धरा ना नुकुर करइत रहलीह मुदा सीमान्त कें विवश कएलर पर एक दू जगह एप्लाय केलक आ नियुक्ति भऽ गेल दोसर शहर मे, सीमान्त सँ दूर ।

की सोचि रहल छी धरा ?

ऊँ हुँऽ किछ नय मुदा हम अहाँ सँ दूर नय रहि पायब - हम नौकरी चाकरी नय करब ? मुदा सीमान्त ओकरा कतेक समझेलक- कोना छुट्टी छुट्टी मे हम अहाँ कदम्ब मंजुल एक संगे रहब - कोना अहाँ अपन लेखन मे दिन राति प्रगति करइत रहब । हम बाजब धरा जी हमर पत्नी थीकीह - कदम्ब बाजत धरा जी हमर माय छथि

। आ हमर सभक इ गौरव - अहाँके अपन अंग मे भरि बाजब- देखु, [illegible] लेखिका कें हम कोना अपना बाहुपाश मे समेटने छी- एह - [illegible] धरा ओहिठाम सँ भागि गेलीह । तखन धराक मोने [illegible] जागरण आयल - नय हमरा किछ बननाय अछि - मुदा ओहि अनजान शहर मे हम रहब कोना -?

अनजान शहर - सीमान्त बाजल - अहाँके आकाशक स्मृति अछि धरा! आकाश आय काल्हि ओहिठाम पोस्टेड अछि - एकटा [illegible] अहाँ कें ओहियो ठाम भेटि जायत -

धराक आँखि मे अतीतक किछ सिक्त रेतकण झिलमिला [illegible] - एकटा कवि सम्मेलन मे धराक भेंट आकाश सँ भेल छल? आकाश बाबू मुख्य अतिथि छलाह । धराक कविता सुनि ओ मंत्र मुग्ध भऽ उठल छलाह - सम्मोहन एकटा अटूट मित्रता मे बदलि गेल..... । टन-टन-टन - फोनक घंटी सँ धराक ध्यान टुटि गेल ।

हैलो.....

धरा । हम आकाश बाजि रहल छी । की भऽ रहल अछि एखन?

किछ नय

तँ एना मुइल स्वरे किएक बाजि रहल छी अहाँ -

नय तँ

सीमान्तक कोनो समाचार आयल कि नय । एम्हर आबय वाला अछि कि नय ?

नय - थाकल स्वर धराक - पत्र तँ आयल छल मुदा छुट्टी नय हेबाक कारण एखन आबि नय सकैत छथि - देखुने एको रत्ती नीक नय लागैत अछि-

किएक - की बात छी - ?

धरा चुप-मौन मूक

अहाँ एना किएक अचक्के चुप भऽ जाइत छी जेना वीणाक तार टूटि गेल होय -

नय नय - कोनो बात नय छी - हँ एतवा धरि ओ नीक कैलन्हि जे घर पर हमरा फोन लगवाय देलैथ - हमर नीरस जीवन

कें सरस बनवऽ वाला इ फोन-

टेलीफोन - हँसैत आकाश बजलाह - से कोना ।

बस कहियो कहियो अहाँक स्वर एहि फोन सँ आबि जायत अछि । आ घर भरि जायत अछ ।

आकाश बाबू हँसैत रहलाह ....

कतेक सुखी परिवार छल - धरा सीमान्त कदंब मंजुला - एकटा सिनेह - सिनेहक आवेग हृदय मे एकटा रसधार बहैत छल - एक सोच - एक विचार - एके भाव एके अनुभाव - बड़ खुश संगहि संतुष्ट रहैत छलीह - सीमान्तक छोटमोट कारोबार छल सुख वैभवक सभ समान - आप भी भूखा न रहे - साधु न भूख जाय - कोन कोन सपना छल - सभक आँखि मे जुगनू जकाँ.

एक बेरि सीमान्तिक संग बीरपुर कोनो काज सँ गेल छली आ तखन प्रथम दर्शन भेल छल बीरपुर डौरमेट्रीक अपना आप मे एकटा अनुपम कलाकृति - सहरसो जिला मे एतेक कलात्मक परिकल्पनाक संगे एहि डौरमेट्रीक निर्माण भऽ सकैछ इ धरा नय बुझैत छलीह - आ तकर बाद तँ केतेको बेर ओ डौरमेट्री सीमान्तक संग गेल छलीह। सीमान्त के अपन बिजनेसक सँ कतेक बेर कतऽ कतऽ घुमऽ पड़ैत छलैन्ह इ धरा बुझैत छलीह । नीला साड़ी पहिरि डौरमेट्रीक लान पर नीला कुरसी पर धरा नीलाकाशक नीचा बैसल सौचैत छलीह । नील आकासक रंग किछ धूमिल छल मानव हृदयक सत्यताक धूमिल छवि सन । हृदयक सत्यता पर लोक कें सहजहि विश्वास नय होयत अछि असत्य मे जीवाक प्रक्रिया सँ त्रस्त मानव ।

बीरपुर डौरमेट्री सँ एकटा सनेह भऽ गेल छल धरा कें । हृदयक कोनो बंधन जुटि गेल । जेना प्रकृतिक उमगैत लहरि पर डगमगाइत नौका सन - सृष्टिक आंचर मे स्थिर वनपाखी सन इ डौरमेट्री धरा के बान्हि रहल छल अपन भुजपाश मे । एहि स्थानक एकान्त धरा कें अपन आलिंगन पाश मे लय कतेक कथा कविता कान मे गुनगुनाय दैत छल । दूर दूर सँ अबैत हवाक झोंक धराक कान मे कोनो संदेश कहि जायत छल । धराक मोन आकुल भऽ जायत छल । चैनक तृप्ति सँ, बेचैनीक पिआस सँ.... सीमान्त अपन

दोस्त सभक संग जखन घुरैत छल तँ फेर कथा कविता वाचाल भऽ जाय - मुखर भऽ उठय - की भौजी - भरि दिन असगरे मोन लगैत अछि ? - कोनो दोस्त टोहका दय - असगर - ? धरा हँसैत छलीह- हम असगर कहाँ रहैत छी ' हम -हमरा संग इ डारमेट्री.... सभ भभाय के हँसि दैत छल - धन्य भ' गेल इ डारमेट्री - सीमान्त बुझैत छला धरा एहि डौरमेट्रीक आकर्षण सँ भागि भागि हमरा संग चलि अबैत अछि । तैं ओ संतुष्ट भऽ अपन काज मे लागि जायत छलाह। नवविवाहित भावुक पत्नी कें एतवा खुशी तँ ओ देवाक प्रयास करैत छला ..

देखु ने डौरमेट्रीक ड्राइंग रूम मे छतक नक्कासी लगैत अछि जेना खड़िका, खड़ पात बीछि बीछि छोट छोट चिड़ै चुनमुन सभ अपन नीड़ बना नेने होय - ओहि असंख्य नीड़क आवरण मे मानव कतेक निश्चिंत कार्यरत रहैत छल । केहेन अदभुद कल्पना होयत ओहि शिल्पी कें - अहाँ खुश छी ने धरा - सीमान्त पुछि अपना के तोष दैत छल -

हँ सीमान्त - इ डौरमेट्रीक आकर्षण हमरा मे एकटा नवजीवनक संचार कऽ दैत अछि । हमर अधर पर मुस्कान आ आत्मविश्वासक अद्‌भुत उपहार दैत अछि । एहि ठामक कोन कोन जेना हमरा अपन प्रेमक बाँहि मे लेवा लेल तत्पर उत्सुक .... लगैछ एहि कारण हमहु एकरा लेल बेकल रहैत छी।

की हमरा लेल अहाँ बेकल नय रहैत छी धरा - सीमान्त रातिक ओहि एकांत अन्हार मे धरा सँ मजाक मे पुछैत छल -

नहि सीमान्त लगैत अछि इ डौरमेट्री एकटा मंदिर सन अछि ओहि मे हम कखनो दीपकक लौ सन प्रज्ज्वलित होइत छी तँ कखनो अगरबत्ती सन सुरभिमय भऽ उठैत छी -

अहाँ एहिठाम कोवता कथा किएक नय लिखैत छी धरा ? अहाँक मोने एतेक भाव अनुभाव उठैत अछि - साकार किएक नय करैत छी धरा - शब्दक हार गाँथु । -

नय सीमान्त कोनो कथा नय कोनो गीतक तीव्रता नय, बस हम मौन समर्पित भ' जायत छी ।

धरा, अहाँ लिखवाक प्रयास करु-सीमान्त ओकरा दुलार सँ बाजल - एतेक भाव अहाँक हृदय मे डौरमेट्री लेल अछि - तखन नहि यै, आय काल्हिक भौतिकवादी जमाना मे हमर भाव बाढ़ि जकाँ भसिआय जायत - बजैत धरा पलंग पर पसरि आंखि मुनि लेलीह। सोचक दुनिया मे हेराय गेलीह......

दीदी आय कओलेज बंद भऽ गेल, एहि लेल आबि गेलौं। कॉलेज बंद अछि - एकटा अलस अंगेठी लैत स्वयं सँ पुछऽ लगलीह- आब - आब - छुट्टीक एहि बोरियत कें झेलऽ पड़त - चाह बना दी दीदी - हँ किएक नय रंगमा - चाहे तँ ओकर संगिनी थीक - चाय शब्द ओकरा कहियो नीक नय लागल बस चाह आ चाह - कतबो बोझिल ओकर मोन मानस होय चाहक एक एक सिपक संग ओकरा मे जीवन भरि जायत अछ। अपन दर्द बिसरि जायत अछ। लोग बजैत अछ शराब पीवा सँ मनुष्य अपन दुख बिसरि जायत अछ मुदा धरा लेल चाह सँ बढ़ि किछ नय। कहियो कहियो एकटा अनुभूति होइत अछ जेना चाह पीवैत पीवैत ओकर पेट मे जखम जकाँ भऽ गेल होय आ डाक्टर कहैत अछि इ कैंसर थीक। पागल धरा ओहि समय क प्रतीक्षा कऽ रहल अछ - सदिखन कल्पने मे जीवैत अछ - कल्पना आखिर कल्पना छी यथार्थक पाथर पर खसि क्षत विक्षत भऽ जायत अछ - ओकर दृष्टि देवाल पर टांगल कदंबक फोटो पर पड़ैत अछ- ओकर अन्तर मे जेना ज्वार उठैत छैक कदंब कें दौड़ि अपन छाती सँ लगा ली। कदंब मे ओकरा अपने छवि देखा पड़ैत छल - ओकर आंखि ओकर अधर सभ किछ तँ ओकरा अपने सन लगैत अछि - सभ किछ रहैत ओकतेक असगर, कतेक असगर।

कप के मुंह मे लगवैत एक हाथ सँ ओ अपन खोपा सँ क्लिप हंटाय केश राशि के अपन कान्ह पर छिरिआय देलक आ एकदम हल्लुक भऽ सुस्त सन चाह पीवैत रहलीह - की हम आबि सकैत छी-

धरा चौंकि उठल - आकाश बाबू, अहाँ - दरवज्जा खुजल छल, चलि अयलौं -कोनो आपत्ति?

आपत्ति - एहि शब्द सँ धरा बुझि गेलीह ओकर अधर बंद रहल मुदा आंखि अनगिन उपालंभ दऽ देलक। आकाश बाबू पढ़ैत बाजलाह - सौरी -

एखन फोन आयल छल कि कओलेज बंद भऽ गेल-

किएक ? अचानक ? -कुर्सी पर बैसैत आकाश बाबू पुछलाह-

कारण ? कारण तँ हम पुछवे नय कयलौं। तखन ध्यान मे नय आयल।

अँहु विचित्र छी धरा - सिगरेट जरवैत आकाश बाबू पुछलैथ- आखिर केकर खियाल मे डुबल छलौं -

धराक जी मे आयल बाजि दी - 'अहाँ के' मुदा ओकरा बाजल नय गेल। पता नय किएक कहियो कहियो ओकरा अपन स्वभाव, अपन बात सभ बड़ नेना सन लगैत छल। एहि उम्र मे पहुंचल कोनो नारी एकटा नवयौवना, एकटा मुग्धा सन बाजि दय-'अहाँ के' - बड़ विचित्र बड़ मेनमत सन लगैत अछ। इ नेना थीक - मुदा छी तँ हृदयक गप - धराक एहि भाव कें के बुझत। ओ अपन कप के टेबुल पर राखि पुन' दुइ कप मे चाय छानय लगलीह।

आकाशबाबू बाजि उठलाह - धरा जी, एतेक चाह नय पीबु। एखने तँ अहाँ पीने छी - 'एकटा बात बाजी आकाश बाबू ? अहुँ एतेक सिगरेट नय पिअल करू। ओना सिगरेटक धुंइया हमरा बड़ पसन्द अछि जेना बादलक देश मे नशा मे झुमि रहल छी। मुदा इ स्वास्थ्य लेल हानिकारक अछि -

धरा जी, सिगरेटक बिना हम रहि नहि सकैत छी। हमर पत्नी तँ गामक थीकीह। हुनको सिगरेट एकदम नय पसन्द। एकर गंध सँ ओकर पारा चढ़ि जायत छैक। मुदा, एतेक संत्रास, एतेक कुंठाक मध्य मानव यदि सिगरेट नय पीवय तँ जिअय कोना ?

अहाँ अपन पत्नी के अपना संगे किएक नय रखैत छी आकाश बाबू ? - धरा एकदम सँ पुछि बैसलीह -

चाहक कप के अधर सँ लगौने आकाश बाबूक आँखि छतक कोन पर स्थिर भऽ गेल -

हम परिवार मे एकदम असगर छी वृद्ध पिताक छथि। आ तैं

पत्नी आ तीनू बच्चा ओहि ठाम अछ । बड़का बच्चा ओहिठाम टयूशन लगा देने छी । दू टा नेना अछि । ओतेक जमीन जायदादक उपजा बाड़ी देखभाल मभटा तरंग असगरे करैत अछ -

धरा एकटा उसांस लेलीह - जेना एहि ठाम आबि दूनूक पीड़ा एक भऽ जायत अछ - फेर लोग बियाह किएक करैत अछ आकाश बाबू ? एहि ब्याह सँ की होयत अछ ? ओह....

चुप किएक भऽ गेलौं धरा । बाजू बाजू ने । धरा के जी मे आयल बाजनाय की आवश्यक अछि? मौन गहराईक स्वर दैत नय अछि की? मुदा ओ नय बाजि सकलीह । आकाश बाबूक अपनत्वक स्नेहगंगा सँ सिंचित धराक दृष्टि हुनका दिसि उठल जाहि ठाम एकटा निर्विकार स्नेहक शान्त सरोवर छलकि रहल छल ।

अरे एक बाजि गेल - घड़ी देखैत व्यस्त सन आकाश बाबू उठि गेलाह-अहां एखन धरि स्नानो नय केने छी । हमहुं बड़ बेकूफ छी - अपना राग मे आनक कष्टो नय बुझैत छी -

आकाश बाबूके रोकबा लेल चाहितो धरा नय रोकि सकलीह। मुदा, ओकर रोम-रोम स्वरित छल - नय जाउ आकाश बाबू नय जाउ । हम बड़ टुटि गेल छी - अहाँक सामीप्य सँ अहाँक, निश्छल नेह सँ हम कतेक प्राणवंत भऽ उठैत छी अहाँ नय बुझब । रोजमर्राक जीवन एहिना चलैत रहत, हमर घाह घाह अन्तर के देखत ? के बुझत अहाँक छोड़ि के बुझत - प्रकटतः ओ किछ नय बजलीह आ 'फेर आयब कं' छोट सन पातीक आश्वासन मे बन्हल धरा के छोड़ि ओ चलि गेलाह । धरा निढाल सन तेसर कप चाह बनवऽ लगलीह-

धराक मानस मे वन्याक कथा नाचि रहल छल । कतेक दैन्य जिनगी भऽ गेल वन्याक - धरा पुरुष पर विश्वास नय करु - अहाँ बड़ निश्छल छी । तुरंत सभ पर विश्वास कऽ लैत छी - आ तखन वन्या अपन अनुभव पुरान स्वेटर जकाँ उधारि उधारि राखि देने छलीह - कोना ओ जलद सँ प्यार केने छल - ब्याहल जलदक जाल मे ओ फंसि गेल छलीह । जलद अपन प्रेमक सम्मोहन मे ओकरा बान्हैत गेल आ घर जा कऽ अपन पत्नी सँ किछ सँ किछ कहैत छल,

आ एहि बेर हम वन्याकें प्रेमक ओ सब्जबाग देखेलों जे...

सब्जबाग देखवैत देखवैत अहाँ तँ नय ओकर चक्कर मे मब्जबाग देख लेब । रोज रोज तँ अहाँ इएह बजैत छी - जलदक पत्नीक नेवर छल ।

की गप करैत छी अहाँ ? वन्या क हम बेकूफ बना रहल छी। जखन देखब ओ पूर्ण रूपेण हमर जाल मे ओझरा गेलीह तखन हम ओकरा दर्पण देखा देब ओ कतेक पानि मे अछ ? मुदा एहि सँ अहाँ कें की भेटत ? किछ नय, अहीं कहने छलौं वन्या एहेन लड़की नय अछि - तँ देखु -

- आ दरवजाक अड़ सँ वन्या स्वयं अपन कान सँ सुनलीह ? कंओ आन कहितैक तँ स्यात् ओकरा विश्वास नय हेतीएक । अपन श्वेत आनन लय ओ ठाढ़ भऽ गेलीह दुनूक समक्ष - केकरो निर्दोष भावना सँ खेलबाक लेल अहांक बहुत धन्यवाद । मुदा बेकूफ अहां अपन पत्नी कि हमरा बना रहल छी ओ अहाँक पुरुष प्रवृत्ति बुझत- आ हुनका स्तब्ध छोड़ि वन्या सदा सर्वदा लेल ओहि ठाम सँ चलि एलीह । कतेक बेर, ओ जलद लेल छटपटाइत रहलीह, ओकरा धोखेबाज बुझि अपना आप के संतोष दैत रहलीह । धरा, हम प्रेम केने छलौं जलद सँ एहि मे किछ असत्य नय । - हमरा ओ धोखा देलक कोनो बेजा नय केलक - गलती तँ हमर छल धरा - एकटा गृहस्थी के उजाड़वाक दुस्साहस हम करैत छलौं - मुदा ओ हमर मजाक उड़ायत इ हम नय बुझैत छलौं, धरा - नय बुझैत छलौं - वन्या हिचकि रहल छलीह धराक समक्ष -

शान्त भऽ जाउ वन्या - इ जीवन-संघर्ष थीक - नय धरा शान्त कोना होयब - एतवा पर जीवन मीलक पाथर जकाँ ठहरि जेतैक तँ शान्त रहि सकितौं मुदा नय जानि जीवन कोन कोन बाट, कोन आंधी तूफान हमरा देखाय देलक - अहां सुनब धरा बाजू बाजू धरा सुनवाक स्थिति अछि - वन्या विह्वल छलीह.... बेस हम सुनब अहां स्थिर रहु - धरा शांत स्वरे बजलीह - पहिने चाह पीब लियऽ - रंगमा नय छल - धरा हीटर पर चाह बनाय अनलीह - वन्या माथ पर हाथ रखने एखन धरि सिसकि रहल छलीह - चाह पीबु वन्या-

धरा जलदक पत्नी ओह - कोना बाजी, की बाजी धरा हम बेर बेर ठोकर खायत छी संभरैत छी आ जकरा पर जतेक विश्वास करैत छी - ओकरे सँ धोखा खाइत छी - पता नय विधाता हमरा बदनामीक कोन जाल मे ओझरा देलक - छातीमे अग्निशलाका सन एक एक टा बात चुभि रहल अछ। हम दाहक पीड़ा मे ज्वलित भऽ रहल छी । चारू दिसि आगि आगि आगि... हम आगि मे जरि रहल छी - नय धरा नय, जरि नय रहल छी वरन् अग्नि परीक्षा दऽ रहल छी - जलदक पत्नी आय हमरा पड़ोसी मूर्ति बाबूक संग जे मोन भेल से बाजनाय शुरू कऽ देलक । मूर्ति बाबूक पत्नी रीना कें अपन बहिन सँ बढ़ि मनैत छी । मुदा जलदक पत्नीक कारण आय वएह रीना दीदी हमरा किछ कहवा मे कोनो संकोच नय केलक....

वन्या शांत भऽ जाउ.....

नहि धरा अहाँ रोकु नय, टोकु नय - आय हमरा बाजऽ दियऽ। एकमात्र अहीं एहेन प्राणी छी जकरा लग हम अपन संपूर्ण राखि दैत छी - जे हमर अन्तर के समझि सकैत छथि ... आ इ समाज ओह धरा - रीना दीदी बाजि रहल छलीह मुदा हुनक स्वर कांपि रहल छल - हुनक स्वरक कंपन हमर समस्त तन के थरथरा रहल छल - ओ नीक जकाँ बुझैत छलीह ओ जे बाजि रहल अछि ओहि मे कनिको दम नय अछ ?

कन्या - हम कतेक बेर अहाँक अगाह करैत छलौं कि आनक बात पर विश्वास नय करू । अहाँ सभ पर विश्वास कऽ लैत छी वएह अहाँकें गेंद जकां वेटलेस उछलाय दैत अछि । - धरा संयत छलीह-

नय धरा - शेक्सपीयर ठीके लिखने अछ बलो ब्लो दाउ विंटर विन्ड फोर दाउ आर नौट सो अनकाइंड एज मैन्स इन्ग्रैटीच्यूड... हम की नय केलां हिनका सभ लेल - लगैछ जेना मरचायक बुकनी सौंसे आंखि म. समस्त बदन मे भरि गेल होय । एकटा धुंइया - मरचायक धुंइयां म हमर दम घुटि रहल अछ- कतेक निर्दयता सँ रीना दीनी बाजल छलीह - अहाँ संबंध जोड़ने छी बहिनक तँ संबंध तँ राखनाय अछिए मुदा ई... आ एकर आगु हमरा किछ सुनवाक धैर्य नय रहल।

आ नहि तँ एकर बाद हमरा स्मरण राखवाक शक्ति - मोने भल जे कहि दी संबंध हम जोड़लौं तँ ओहि संबंधक गिरह हम खोलि दैत छी अहाँ कें मुक्त कऽ दैत छी । हम जोड़ने छलौं - इ गिरह बान्हल रहत तँ मोन मे इ फाँस सेहो लागल रहत - मुदा धरा, अहां जनिते छी भावावेश मे स्वर कोना अवरूद्ध भऽ जायत अछ - आ हम किछ नय बाजि सकलौं - ईश्वर जनैत अछि धरा हम आय धरि केकरो सँ घृणा नय कऽ सकलौं । हमर सभ सँ पैघ कमजोरी अछि हम सभ सँ सिनेह करैत छी । केओ हमरा सिनेह दैक, केओ बदनामीक संपत्ति - कि लांछनाक तीर - हम सभ कें सिनेह दऽ सकैत छी आर किछ नय-

स्नेह सिक्त स्वरे धरा बजलीह - तैं तँ वन्या हमर अहाँक हृदय एक अछि- मैं छिपाना जाता तो जग मुझे साधु समझता, शत्रु आज बन गया छल रहित व्यवहार मेरा... बच्चनक इ पाती कतेक टाक सत्य कें उद्धरित करैत अछ- वन्या दू टा बात कहियो नय सोचू - के नीक व्यक्ति अछि आ के खराब-? एहि दुई बातक उत्तर केओ नय दय सकैत अछ - कहियो नय भेटि सकैत अछ ।

धरा, अहां ठीके बजैत छी - उसांस लेलीह वन्या यदि हमरा पर लांछन लगौने सँ केकरो उजड़ल घर बसि सकैत छैक तँ ओहि लांछन के हम अपन सौभाग्य बुझब । केकरो उजड़ैत घर तँ बसि जायत। हँ केकरो लगायल लांछन हमरा नय लागत । उपर ईश्वर सभक हृदय देखैत छथि । सांच सांचे होयत अछि धरा - जाने अनजाने हमहु कतौ न कत्तौ इ गलती तँ कऽ रहल छलौं - आ भोगऽ पड़ल इ हमरा दण्ड भेटल - दण्ड ! ओहि दिन धरा हम रीना दीदीक संग एके थारी मे खायत छलौं, कतेक प्रेम सँ मुदा नय जनैत रही जे सन्देहक नागफाँस तखनौ हुनक हृदय के जकड़ने छल - ओह तखन हम एकरत्ती आभास पाबि जेतहुं तँ.... ओह हम देवी बुझैत छलौं धरा हुनका देवी - असह्य मानसिक यंत्रणा सँ छटपटा रहल छलीह वन्या - हुनकर दृष्टि मे हम अपराधिनी छलौं तँ ओ हमरा असगरे मे खूब डांटि डपटि देतीयैथ । मुदा सभटा टोल पड़ोस समाजक समक्ष अपन इ अपमान नय धरा..... हम की करी आब धरा, हम की करी।

आ धरा चुप छलीह । एकटा शूल सन वेदनाक धार बहि रहल छल धराक हृदय मे । ओ धार अपन बाढ़ि सँ तट तोड़वा लेल तैयार नय छल । जीवनक गहराई मे नोरक उत्स भय घुमड़ैत रहत - जीवन पर्यन्त...

वन्या जलदक स्नेहजाल मे ओझराय की गत दुर्गति बना नेने छलीह - वन्या - एक बात जानि लियऽ लोकक नीक बेजाय कहने सँ केकरो चरित्र नय खराब भऽ सकैत अछ । चरित्र कुम्हड़ बतिया नय छी जे केओ आंगुर उठाय देत आ नष्ट भऽ जायत - हंऽ कोनो एहेन दोस्त सँ नीक दुश्मन होयत अछ जे खुले आम दुश्मनी तँ करैत अछ । अहाँक देखि भय होयत अछि की मानव साँचे एतेक स्वार्थी होयत अछ ?

धरा समझि नय सकलीह एहि हृदयक रहस्यमयता कें । कतऽ कोन रूप मे कोना ओझरा जाय छ । ओकर की प्रतिदान भेटैत अछ- कोना मूल्य चुकबऽ पड़ैत छैक - केकरा की सभ लिखल अछ भोगनाइ -? धराक कवयित्री भावुक मोन स्वंय अपना लेल एकटा पहेली छल - ओकर उत्तर ओकरा नय भेटैत छल - मुदा ओहि पहेली कें केओ बुझलक तँ निस्संदेह ओकर पति सीमांत आ आकाश बाबू ! ओहि विश्वासक पाथेयक संग ओकरा अपन राह स्पष्ट बुझा पड़ैत छलौक । स्त्री स्त्रीक दोस्ती होयत अछि - स्त्री पुरुषक की मात्र राखी आ प्रेमीक संबंध भऽ सकैत अछ - आ धराक विचारक आलोक लोक मे वन्या प्रकृतिस्थ भऽ गेल छलीह । आस्ते आस्ते जलदक देल चोटकें ओ उपहार बना लेलीह। ओ हंसैत रहैत छलीह, खिलखिलाइत रहैत छलीह मुदा केओ नय जनैत छल जे अल्हड़ मस्त वन्य निशाक अंधकार मे ओहि जलद लेल कनैत छलीह-

कहीं हमरो संग इएह तं नय भऽ रहल अछ - इम्मोशनल फ्लर्ट तं नय छी- नहि नहि आकाशक अन्तरक निश्छलता हुनक आंखि मे हुनक गप सँ छलकइत अछि - धरो तं देश काल वय सभ बिसरि एकटा अल्हड़ जकां मचलि उठैत अछ - एना किएक होयत छैक हम पुछब जरूर पुछब - आकाश बाबू एना किएक होइ अछि ? अहां

हमरा किएक नीक लगैत छी । अहांक साथ हमरा किएक चैन दैत अछ - एना किएक होयत अछ - हम पुछब जरूर पुछब - आकाश बाबू किएक अहाँक सामीप्य सँ हमर मोन शतदल खिलि उठैत अछ? हृदयमे कोन बातक आकुलता अछि ? किएक स्पन्दित होइत रहैत अछ ? वक्षक निगूढ़ अन्तरतल मे इ की बाजि रहल अछ ? अपन भूख पिआस सभ बसरि क्षण क्षण ओहि स्वरक प्रतीक्षा रहेत अछ । हैंगोरक पाती धराक जिनगी बनि गेल अछ -'अकल्याणक मार्ग मे नमहर यात्रा सँ थाकि संध्या कें अहाँक अचानक साक्षात्कार विरुद्ध समयक मध्य अवांछित परिचय।' जीवनक अज्ञात पथ मे मानवक संग मानवक गहनतम परिचय कखन कोन रूप मे भऽ जाय इ के जनैत अछ ... मुदा आकाश बाबू सँ ओकर परिचय कोना कोन रूप मे भेल छल धराक मस्तिष्क भट्ठी ज़कां भांय भांय जरि रहल छल- शारीरिक संबंध नय एकदम नय - मानसिक संबंध - ? हँ मुदा, आय के एहि संबंध कें स्वीकारैत अछ ? सभ सँ पैघ बात अछि जे के एहि बात पर विश्वास करत ? के बुझत मोनक एकटा अपन दुनिया होयत अछि जाहि मे आदमी कतेक महल बनबैत अछि मेटावैत अछि ठीक रेतेक महल तँ जाहि मे कोनो स्थायित्व नय, कोनो ठहार नय । मोन जेकरा चाहैत अछि ओकरा संग दुई क्षण पागल प्रलाप कऽ लैत अछि - ई मनोजगत क्षणिक अछि मुदा बड़ मनोरम - सम्मोहक ! रामायण मे नारी-आदर्शक वर्णन भेल अछि आ धराक अधर पर तिक्त हंसी आबि गेल - सभ सँ उत्तम नारी वएह थीकीह जे सपनो मे परपुरुषक दर्शन नय केने होय - मात्र स्त्रीए के आदर्शक चोला पहिराय अपना अन्दर गुलाम बनवैत अछ इ समाज ? किएक ओकरा हाड़ मांसक नय बुझि अपन संपत्ति बुझैत अछ । आखिर किएक - सपनहु पर पुरुष नाही - चारु कात तँ पुरुषे अछ सपनाक गप त बड़ दूर - आ कि स्त्रीकें हृदय नय होयछ? नीक बेजा नय बुझैत अछ- धरा के मोन भेल जे एहि रोगी समाज, कर्म कांडी धर्म कें उनटा पुनटा दी - एहि देशक आत्मा तँ शताब्दी पहिने मरि चुकल अछि आ हम ओकर सड़ल लहास घींचि रहल छी । सीताक अग्नि परीक्षा आइयो भ' रहल अछि, प्रसंग चाहे जे होय ।

धरा, असगर स्त्रीकिछ नय होइछ, नहि तँ घरक आ नहि तँ - वन्या बजलीह किएक वन्या - धराक उत्सुक दृष्टि वन्याक चेहरा पर किछ खोजऽ लागल ।

धरा, एहिठामक व्यक्ति सभ - इ शहर अछि मुदा एकटा गामो सँ बदतर।

इ तँ हम जनैत छी वन्या परंच की करी - हमरा तँ आब एहिठाम रहनाय अछि । ओना इ शहर साँचे बड़ उदास अछि । केओ अप्पन नय । सभ चेहरा पहिचानल अछि - उसाँसक हिम रेख धराक चेहरा कें सपाट कऽ देलक - ओहि दिन वन्या, ठाकुर साहबक पत्नी किछ महिला संभक संग आयल छलीह । गपसपक मध्य ओ व्यंग्यक किछ एहेन अग्निशलाका छोड़लीह कि हम मर्माहत भऽ गेल रही।

की बजैत छलीह ओ सभ धरा -

एकटा कठोर हंसीक संग धरा बजलीह - पुछैत छलीह जे की हाल छैक गौतम बाबूक ? हम अकचका गेलौं - गौतम के गौतम - मुदा ठाकुर साहबक पत्नीक वएह तेवर - अंय, अहाँ तँ एना बनि रहल छी जे गौतम बाबू अपन पड़ोसी कें अहाँ जनिते नय छी - आ तखन हमर दिमाग मे आयल वन्या, गौतम बाबू हमर पड़ोसी जिनका लेल हमरा ध्यानो नय रहैत अछि जे ओ एहि शहर मे छथि वा नय - सोचु वन्या - हमर मनःस्थिति -

तँ बजैत छी धरा - स्त्री कें बड़कमजोर बनाय देल गेल अछ। ओकरा अपन स्वत्वक किछ ज्ञान नय । देखु इ महल्लाक लोग बाग एक दोसरा कें जीवऽ नय दैत अछ । जखन इ एक दोसराक गुजर बसर नय करेत अछ तँ एक दोसराक निजी जीवन मे अपन टांग किएक फसवैत अछ ? पता नय दोसर कें आलोचना सँ हिनका की भेटैत अछ - अपन घर नय देखि आन आन घर मे हुलकी दैत रहैत छथि-

धरा ठेहुना मे मुड़ी गाड़ि लौनक घास कें आंगुर सँ स्पर्शैत वन्याक गप सुनि रहल छलीह ?-

फेर आकाश बाबू - आय कालिह हिनकर सभक जबान पर आकाश बाबूक नाम चढ़ल अछ।

धरा एकटा झटका सँ मुड़ी उठेलक - आकाश बाबू - वन्या आकाश बाबूक विषय मे केओ किछ बाजय हम हुनका सँ भेंट केनाय नय छोड़ि सकैत छी - हुनका सँ हमर संबंध अछि वन्या संबंध अछि - कोन संबंध -

फ्रेंड फिलासफर आ गाइडक संबंध - एहि मोहल्ला वाल्लाक कहला पर हम हुनका सँ मिलनाय छोड़ि दी वन्या । भय तँ ओहिठाम होयत अछि जाहि ठाम पाप होय। स्त्री आ पुरुषक दोस्तीक लोक एकें अर्थ किएक लगावैत अछ वन्या। की पुरुष आ स्त्रीक बीच सहज सुन्दर संबंध नय भऽ सकैत अछ सत्य, शिव आ सुन्दरक.... फेर लोकक इ मानसिक विकृति -

युग युग सँ एहि दोस्तीक इएह धारणा चलि आब रहल अछ धरा हम अहाँ की कऽ सकैत छी - छोड़ु इ सभ गप । सांझ भऽ गेल चलु कत्तौ घुमि आवी -

एहिठाम की कत्तौ घुमवाक स्थान अछि वन्या - अच्छा एक बात कहु तँ - अहाँ तँ अर्थशास्त्रक लेक्चरर छी मुदा लगैत अछि जिनगीक फिलासफी पर रिसर्च केने छी -

रिसर्च - ठाड़ भऽ अंगेठी लैत वन्या बजलीह - रिसर्च तँ नय धरा जिनगीक फिलासफी जी रहल छी । अर्थक खंड खंड कें हिसाब जोड़ैत जिनगीक खंड खंड कऽ बैसलौं - वन्याक संवेदनशील देखि धरा बात बदलैत बजलीह-

साड़ी बदलि ली की ?

हँऽ बदलि लियऽ धरा किछ क्रीज सेहो टूटल लगै छ ।

बन्या, क्रीज तँ जिनगिएक टुटि गेल अछ - सीमान्तक बात मानि नौकरी केलौं आ जमाना चीन्हवाक मौका भेटल -

ओह अहां लागलौं डायलाग बाजऽ -

आ धरा हल्लुक आसमानी रंगक साड़ी मे लिपटि गेलीह ।

प्रसादक कविता मोन पड़ि गेल वन्या कहियो बीरपुर डौग्मेट्री मे सीमान्तो भावुक भेल छल । नील परिधान बीच खिलि रहल मृदुल अधखुलल अंग....

सात आठ बजे राति धरि धरा वन्याक संगे घुमि फिरि आबि

गेलीह ? रंगमा भनसा मे खटर पटर कऽ रहल छलीह - एहि असगर जान लेल अहाँ की सभ कऽ रहल छी - किएक एतेक कष्ट करैत छी -

एकटा बात कही दीदी - अहाँ किछ दिन लेल साहब कें एहिठाम बजालियऽ । एम्हर अहाँक चेहरा एकदम मुरझाय गेल अछ। साहब एथीन त अहाँक खियालो राखताह -

धरा एकदम चौंकि गेलीह - सीमान्त - सीमान्त - जेना रंगमा पीड़ित नस कें दबाय देने होय ।

ठीक बजैत छी रंगमा - ओ उनटें पएर फोन लग आबि कौल बुक कय कपड़ बदलऽ लगलीह - पता नय ओकर त्वरा समाप्त जेना भऽ गेल छल -

ट्रिंक ट्रिंक ट्रिंक '

टेलीफोनक घंटी बाजल आ धरा दौड़ि फोन उठएलक - होलो-

हेलो हम सीमान्त बाजि रहल छी ।

हम धरा - ओकर स्वर स्थिर छल ।

ओह धरा - की नींद नय आबि रहल अछ ।

सीमान्तक उत्साहित स्वर आबि रहल छल -

धरा किछ जवाब नय दय पुछलीह - अहाँ किछ दिन लेल एहिठाम नय आबि सकैत छी -

किछ क्षण स्वर ठहरल छल - की बात छी धरा ? की अहाँ सीरियस छी-

हँऽऽ - धरा बजलीह - यदि संभव होय तँ -

ओ. के. हम कोशिश कऽ रहल छी । ओम्हरक कोनो काज लय हम तुरंत फ्लाय कऽ जायब । मुदा शर्त एकटा अछ ।

बाजू -

जावत हम नय पहुंची - अहां हँसैत रहु । एना मरल स्वर मे बजैत छी जेना हमही मरि गेल होय-

छी कतेक खराब बात बजैत छी ? हमरा फोन पर इ सभ बात नय पसन्द-

ओह सौरी - आब अबैत छी तँ अहाँक सामने बाजब - ठीक. सिक्स मिनिट्स ओभर - एक्सचेंजक स्वर आयल -

ओ के धरा बी मेरी हम अवस्य आयब

नाइट -

नाइट कहि धरा फोन राखि देलक - बिछौन पर करोट लैत धराक आँखि मे नीन्न नय छल । ओकर दिमाग मे लोगक बात सभ छेनी मारि रहल छल- मुदा जेना सीमान्तक भाव ओकरा तोष देमऽ लागल - धरा लोगक दृष्टि अहाँक ऊँचाई कें नय देखि सकैत अछ। गलत दृष्टि सदिखन गलत देखैत अछ। अशुद्ध मस्तिष्क सदिखन अशुद्ध सोचैत अछ - गलत हृदयमे गलत भावना उठैत अछ - लोकक पास ओ शक्ति कतऽ जे अहाँ कें समझि सकय ? लोकक हृदय एतेक स्वच्छ कतऽ जे अहाँक हृदयक स्वच्छता कें देखि सकय? जाकी रहि भावना जैसी - प्रभू मूरत देखि तिन तैसी - मानव अपन भावना सँ लोक कें परखैत अछ । अहाँ केकरा लेल की नय केलों - अपन सभ किछ लगाय देलौं अहाँ कें की भेटल.... सीमान्तक ध्यान सँ ओकर मोन दोसर धाराक प्रवाह पर चलि गेल- भरल पूरल घरक स्वामिनी ओ छलीह । गाम मे संपदाक कमी नय - मुदा श्वसुरक मृत्युक पश्चात् छोट भाई सभ मालिक भऽ गेलाह । पैघ भाय सीमान्तक नाम सिलेट पर लिखल अक्षर जकाँ मेटाय देलैथ सभ । आ सीमान्त एक बेर ओकरा कहने छल - अहाँ पैघ छी धरक मालिकिनी छी । हम तँ व्यस्त रहैत छी। अहाँ कें गाम जाय सभ किछ देखबाक चाही

हमर ओहिठाम कोन आवश्यकता अछि -

किएक - छोट भाय सभ हमर अछि - अहाँक दिआदिनी अछि । वृद्धा माय - अहाँ जाय के खेती गृहस्थी बीच बीच मे सम्हारि दिऔक...

आ धरा गेल छली । सीमान्तक बात मानि ओ गाम चलि गेल छली । तखन सँ ओ कोनो नोकरी सेहो नय करैत छलीह । आ ओहि दिन...... ओहि दिन गोसांय घर मे धरा पूजा करैत छलीह अचानक ओकरा मोन मे ज्वार आयल - सीता किएक एतेक सुख साधन,

राज-पाट सभ छोड़ि रामक संग विदा भऽ गेल हेतीह ? मोनक कोन उन्मादना मे नवविवाहिता वधू चलिदेलक अरण्य कानन मे भटकबा लेल ? कतेक प्रेम छल ओकरा राम सँ ? प्रेम नहि रामक बिना ओ अपूर्ण छलीह - एहि चिरन्तन भावक अन्मेष धरा मे जागृत भेल - हम किएक रहि गेलौं गाम मे ? एहि ठाम केकरो हमर आवश्यकता नय अछ ? तखन रहिए कें कोन कर्त्तव्य निर्वाह ? हम की करब ? घरक देख रेख ? नहि ओकरा हमर आवश्यकता नय अछ - रुपया पैसाक हिसाब किताब ? - नहि एकर आवश्यकता हमरा नय अछ। हमरा रहबा नय रहवा सँ अन्तर किछ नय पड़ैत अछ । सासु दियर दिआदिनी केकरो हमरा सँ कोनो मतलब नय अछ । कोनो साड़ी मे साटल चेथरी हम लागि रहल छी - सीमान्तक शब्द मोन पाड़ि आयल - आगि पचयवाक शक्ति राखु धरा आगि उगलवाक नय - आ शीतल जलक कार्य धरा पर इ पाती कय देलक - सभ वस्तुक निस्सारताक बोध गहराइत गेल - बस एकटा बोध - हमर अतुल संपत्ति, अपार धन राशि बिलास वैभव सभ वएह छथि जिनका छोड़ि हम एहि ठाम चलि एलौं। ओहि ठाम अभावो मे सुख छल एहिठाम भावोक अभाव अछ। हँ, इहो अनुभूति तँ धरा एहि ठाम रहिए कऽ पाबि सकलीह । धराक मोनक जे नान्हि टा बुद्ध अछि ओ समस्त आवेग सँ सभ संवेद सँ तटस्थ रहि गेल अछ - गोदाम घर मे धरा आराम कऽ रहल छलीह - चारू दिसि धान गहूम मूंग मकईक बोरा राखल मुदा कतेक निष्प्राण ! बोरा मे पड़ल अन्न जकां जीवन - व्यर्थ पड़ल रहनाय धराक पसिन्न नय छल - गति आ गति - गत्यात्मकता धराक ज़ीवनक आदर्श छल - दुख हो वा सुख - ईश्वरक देल मानव - तनकें पोसि के नय राखवाक चाही वरन् ओकरा कल्याणकारी कर्म धर्म मे लगा देवाक चाही -

एहि संबंध सभ के निभयबा मे धरा अपन इच्छा कामना कें डाहि देने छलीह । किन्तु आय इ सभ हमर अस्तित्व तक कें नकारि रहल छथि - मुदा मानवक । आय पशुओ सँ बदतर स्थिति भऽ गेल अछि । इएह बागमती ट्रेन एक्सीडेंट मे हजारों मनुष्यक बलिदान भऽ गेल । पानि मे फूलल लहाश कें घींच घीच ओकर देहक जेवर जात

आदि मानव अपन घर भरि रहल छल । जकर सांस कनिक बांचल छल एक लाठी सँ ओकर प्राणान्त कऽ अपन स्वार्थ सिद्ध करैत छल। सरिपहुँ आदमी नामक प्राणी बड़ घिनावन जकाँ लागैत रहैत अछ। जावत मानव जीवैत अछ - तावत तँ ओकरा चैन सँ जीवऽ नय दैत अछ मृत्युक उपरान्तो इ दुर्गति ?

धराक मोन पड़ि आयल काल्हि बड़का मोनि मे एकटा लहास कीओ फेकि देने छल । कुकुर सभ नोचि नोचि ओकरा खा रहल छल। छोट पैघ कतेको माछ ओहि लहाश सँ लिपटल छल । की इएह जीवन थीक ? जाहि देह पर एक सँ एक कीमती वस्त्र आभूषण शोभैत अछ - एकटा साँस रुकि जाय, प्राण छुटि जाय - तँ माटीक भऽ जायत - कुकुर सभक आहार इ देह भऽ जायत अछ -

एहि जिनगी लेल मानव सभ दिन झगड़ा लड़ाई भिन्न बटखारा करैत रहैत अछ - नहि घर तेरा नहि घर मेरा दुनिया रैन बसेरा - मानव बुझैत सभ किछ अछ मुदा तैयो ओकरा नकारैत अपन अहं भावक सिद्धि करैत रहैत अछ-

भौजी की सोचि रहल छी - गोदामो मे जीवन्त स्वर सुनि धरा देखलीह-अन्तर ठाड़ छलाह - किछ तँ नय - अहाँ सभक ताश खेलबाक स्वर आत्मसात कऽ रहल छलहुँ - आय हम जाय रहल छी- भैया सँ किछ काज अछि -

धरा चौंकि गेलीह - हमहुँ जायब - अन्तर खुश भऽ गेल - ठीके छैक चलु हमरो रास्ता मे मोन लागि जायत -

आ धरा देखने छलीह - सभ खुश भऽ गेल ? केओ ओकरा रोकवाक चेष्ट नय केलक जे काल्हिए तँ आयल छी ।

रोम रोम धराक विद्रोह कऽ उठैत अछ ओहि संबंधी सभ लेल जे ओकर त्याग कें सभ दिन गलत अर्थ दैत रहल । दुनियाक यदि सभ सँ पतित जाति अछ तँ स्वार्थी मानवक जाति । इतिहास भरल अछ स्वार्थी मानवक कुकृत्य सभ सँ ।

धराक आँखि मे नींद नय-आय एहि सभक प्रतिदान ओकरा की भेटल। ओकरा नोकरी करऽ पड़ल - ओ सभ सँ अलग, चुपचाप मौन मूक रहऽ लगलीह - सीमान्तक कार्यक विस्तार दिन दिन होय

लागल । ओ व्यस्त भऽ गेल, नितान्त व्यस्त ! धरा अपन कथा कविताक संसार मे डुबि गेलीह - आ नोकरीक दुनिया - जाहिठाम सभक आंखि मे आबि गेलीह आ फेर ओकर दिमाग पर लोकक बात छेनी मारऽ लागल - आखिर लोक किएक केकरो चरित्र पर एकदम खीरा बतिया जकाँ आंगुर उठाय दैत अछ ? जाहि चरित्र कें मानव कतेक तपस्या सँ आगि मे कुंदन सन तपवैत अछ ओ की लोकक एकटा आंगुर सँ नष्ट भऽ जायत अछ - लोक तँ ईसा मसीह कें सेहो नय छोड़लक - ओ सेहो क्रास पर चढ़लाह हुनको कील ठोकल गेल - आ आय इ दुनिया हमरो कील ठोकि रहल अछ - एहि कारण एहि शहरक नौकरी हमरा पसिन्न नय छल - मुदा नय शहर कोनो खराब नय होयत अछ । ओकर संस्कार, ओकर संगति ओकर अंधविश्वास इएह सभ तँ मनोविकृति थीक ? जाधरि इ विकृति बदलत नय ता धरि मानव नय बदलत । ओकर परिवेश ओकर अज्ञानता - मानव पर चढ़ल अछि तं आदमीक कोन दोष ? आ धरा कें मिसेज ठाकुर, मिसेज झा सभ पर दया आबऽ लागल - नहि दोष हुनकर नय हुनक संस्कारक अछि । सीमान्त अओताह हम साफ साफ कहि देब - हम नौकरी उकरी नय करब - हम एहिठाम नहि रहब - नय रहब - मुदा की सीमान्त मानि जायत - सीमान्तक स्मृति अगरबत्तीक सुगन्ध सन पसरऽ लागल - एकटा सूरज आसमान पर अछि समस्त धरतीक सूरज - सभक साझाक सूरज जकर प्रकाश मे धरतीक सभ किछ दृश्यमान भऽ जायत अछ । जकर ताप सँ सभ किछ जीवंत अछ । आ एकटा सूरज धरती पर सेहो उगैत अछ, मोनक धरती पर मात्र एकटा मोन लेल - संपूर्ण रूपेण - एहि मे एकटा संबंध बनि जायत अछ, एकटा सोच्च एकटा स्वप्न - एकटा वास्तविकता एहि सूरजक रूप मानवक होयत अछ - भगवान बनल इन्सान -

जे अपन कान्ह पर अपन प्रेयसी कें लटकोने चलल जा रहल अछ । कतेक दुलार प्यार सँ ओ काँवर अपन कान्ह पर राखने अछ ठीक अपन प्रियतम बुझि । ओकरा काँवर भारहीन प्रसून सन लगैत अछि - चलैत चलैत थाकि जायत अछ तँ अेहि काँवर पर ओ माथ

टेकि अपन थकान खत्म करऽ लगैत अछ । श्रद्धा.प्रेम स्नेह - कतेको भावना ओकरा अन्तर सँ प्रवाहित होयत रहैत अछ - आ लक्ष्य पर पहुँचि ओ आश्चर्यचकित भऽ जायत अछ । जखन देखैत अछि ओकर पुजारिन, ओकर आत्मा देवता बनल पहिनहि सँ ओहि मन्दिर मे प्रतिष्ठापित अछि । विस्फारित नयन सँ ओ तकैत अछि एकरे खोज मे हम एतेक दूर आयल छी - इ तँ हमर हृदय मे, हमर आत्मा मे सदिखन विराजमान छल - ओकर अप्पन खंडित अंश, कांवर मे पड़ल जल ओहिना रहि जायछ' आँखि सँ गंगाजलक बरखा होमऽ लगैत अछ । देवता पर झहरऽ लगैत अछ - इएह थीक प्रेम - इएह थीक स्नेह आदर - फेर सीमान्त धरा अलग-कोना - प्रेम मे नहि पाबि सकनाय - पाबि लेनाय सँ कही महान अछि नदी जाहि तरहे सागरकें प्रतिपल पबैत रहैत अछ किछ ओहिना तऽ.........

राति भरि धरा कचमचाइत हलीह - मोनक घाटी मे भटकैत रहि गेलीह ।

एक दिन ओकरा कदंबक पड़ोसी डॉ एन्डू... ओकर पत्नी रेशमी सँ भेट भेल । दुइ ट नेना न्यूला आ अर्ल - हुनक दुनिया ।

दूनू बच्चा छह बरसक आ दूइ बरीसक छल - माय बाप दूनू डाक्टर - डाक्टरोक जीवन विचित्र अछि । जतेक सुख सुविधा भेटैत छैक ओतवे काजो लैत छैक । सभ सँ कठिन कार्य ओहिठाम डाक्टरक अछि, जिनक जान हरदम शूली पर लसकल रहैत छैक, ओहिठाम पेशन्ट कें भगवान बुझल जायत अछि आ डाक्टर ओकर सेवक । कनिको पेशेन्टक गप डाक्टर नय सुनत तँ तुरंत ओकरा पर मोकदमा (सू) कय दैत छैक जकर दण्ड जानलेवा तक भ' सकैत अछि ।

मोन मे ज्वार उठैत अछि अपन देशक लोग एहिठामक अच्छाई कें किएक नय अपनावैत अछि?

एक दिन गपे गप मे रेशमी पुछने छलीह - अहाँ भरि दिन की करैत रहैत छी ? असगर मोन लगैत अछि ?

धरा बजलीह - भरि दिन पढ़ैत रहैत छी लिखैत छी - की करब - पढ़वाक नीक सुयोग भेटल तँ शेक्सपीयर सँ इलियट धरि

हृदमंगम क' रहल छी -

खेनाय पीनाय बेसी तँ एहिठाम रेडीमेडक चलती अछि तैयो कदंबक पसन्दक अनुसार किछ किछ बनवैत छी ।

- रेशमीक मोने एकटा गप बेर बेर अवैक मुदा कहवाक साहय नय होय- स्कर्ट पहिरने कारी टाइट्स मे रेशमीक पएर एम्हर सँ ओम्हर होयत रहल -

न्यूला तँ स्कूल चलि जायत अछि मुदा अर्ल तँ छोट अछि - एकरा ल' क' बड़ परेशान भ' जायत छी -

एतेक छोट अर्ल कें अहाँ नर्सरी मे भरि दिन रखैत छी - रहि रायत अछि की ? धरा जिज्ञासु भेलीह ।

की करब - कोन उपाय छैक । अर्ल तँ दूइ बरीसक अछ । छह मास सँ एक बरीसक बच्चा नर्सरी मे पोसाइत अछि । जाइत काल माय बाप नर्सरी पहुँचा दैत छैक घुरैत काल पांच छह बजे सांझ के ल' अनैत अछि ।

धराक मोन हताश भ' गेल । एतेक सुन्दर सुन्दर बच्चा सभ नर्सरी मे भरि दिन बान्हल छेकल। न्यूला आ अर्ल दूनू ओकरा सँ बड़ हिल मिल गेल छल - ओकरो विदेश मे अपनतव भेटल । एकटा बात कहवाक घृष्टता करी - रेशमी डराइत धकाइत धरा सँ पुछलीह- हँ बाजु - एहि मे आज्ञाक कोन आवश्यकता - धरा ओकरा उत्साहित केलक - एपल पेस्ट्री प्लेट मे दैत धरा कॉफी छनैत रहलीह- काल्हि हम दूनू गोटे आनकॉल पर छी -अहाँ सँ एतेक बच्चा सभ हिलमिल गेल अछ - अहाँ अर्ल के भरि दिन राखि सकैत छी - डरैत डरैत रेशमी पुछलीह - इ तँ हमर सौभाग्य होयत रेशमी। - धरा दूनू बच्चाक सामीप्यक अनुभूतिए सँ पुलकित भ' गेलीह । खास कय अर्ल कें ।

देखु धरा जी, बजैत खराब लगैत अछि मुदा, इ काज हम ओना नय कहब करवा लेल - कोन काज - धरा अकचका गेल ।

इएह अर्ल कें राखनाय - रेशमी धकाइत बाजल ।

तँ कोना - विस्मित धरा पुछलीह -

हम एहि लेल अहाँक चारि पॉन्ड प्रति घंटा देब - अहाँ

स्वीकारब तखने हम कहब अर्ल कें देखवा लेल - एकदम तेजी सँ काफी खतम केलीह रेशमी । - जेना इ बाजवा मे ओ थाकि गेल -

ओहि सँ बेसी इ वाक्य सुनि धरा थाकि गेलीह -कॉफीक कप टेबुल पर राखि - शांत स्वरे ओ बजलीह - हमरा चाइल्ड माइन्डर नय बुझू रेशमी । हम अर्ल कें देखब मुदा टाका नय लेब हमर कदंब चारि हजार पॉन्ड महीना कमवैत अछ । कोनो जबाब देही नय अछि

दीदी, पैसा अहियो ठाम सभ कमवैत अछि केकरो पाइक कमी नय छैक । एकटा बेरोजगारो अछि तँ ओकरा सरकार सँ भेटैत छैक। अतेक बूढ़ पुरान अंग्रेज होवाकि अन्य देशक निवासी एहिठाम बसल छथि सभक भरन पोषनक भार सरकार पर अछि - एहि ठाम पैसाक कीमत नय अछि दीदी । एहिठाम वर्क भैल्यू अछि - काम करवाक सामर्थक अहसास छैक - पैसा तँ किछ नय छैक दीदी - एहि मे अहुँ के संतोष होयत हम बैसल नय छी - हमरो ग्लानि नय रहत -

धरा सोच' लगलीह - जखन ओ अपन देस मे पढ़वैत छलीह कतेक विद्यार्थी ओकरा लग टयूशन लेल अवैत छल - सभ लेक्चरर टयूशन सँ कमा रहल छल - मुदा, धरा कहियो टयूशन लेल नय सोचलीह - एक बेर सीमान्त कहने छल - धरा अहाँक एतेक समय भेटैत अछ - किएक नय किछ टयूशन क लैत छी जखन विद्यार्थी सभ अहाँ सँ पढ़' चाहैत अछि - अहाँ व्यस्त रहब - किदन कहाँ नय सोचब - किदन कहाँ - हम कहाँ किछ सोचैत छी - सोचैत नय छी तँ की - किछ किछ - किछ तँ किछ - अनाप शनाप बात मोन मे अहाँक अवैत रहैत अछि -

हमरा तँ वर्डसवर्थ शेली कीट्स सँ बढ़ि किछ नय शेक्सपीयरक दुनिया छोड़ किछ नय -

कालेजक दिन मे ओकर एकटा दोस्त कहने छल - धरा अहाँक देखैत छी तँ वर्डस्वर्थक कविता मोन पड़ि जायत अछ - ए बायलेट बाय ए मौसी स्टोन हाफ हिडड् फ्राम द आय ।

आ धरा सोचैत सोचैत अपन दुनिया मे हेरा जायत छलीह - कालेज मे पढ़वैत पढ़वैत ओहि कविताक भावभूमि मे पहुँचि जायत छलीह - शेलीक पाँती मोन पड़ल लगैक - ओ मिस्ट्रेक माइन व्हेयर

आर यू रोमिंग.... आ जेना धरा खोजैत रहैत छलीह - हेरैत रहैत छलीह - केओ ओकरा बजा रहल अछि केओ ओकर प्रतीक्षा मे बैसल अछ - शरत चंद्रक नारी पात्रक मीमांसा करैत अपन मोनक गुनधुन मे लागल रहय वाली धरा के बाँहि पर्काड़ केओ भौतिकताक दुनिया मे नय अनि सकैत छल । ओ बड़ कोमल बड पसृण छलीह- कामायनीक श्रद्धा सँ संतुलित पूर्ण मानव कें देखवाक आकांक्षा सँ ओ भटकि रहल छलीह । भटकाय गेल ओकरा इ अपन अन्तरक आकुल अन्वेषण वर्डस्वर्थ शेली कीट्सक दुनिया सँ बाहर आबि ओकरा पता लागल कतेक कष्ट मे शेक्सपीयर लिखने होयत ब्लो ब्लो दाउ विन्टर विन्ड फॉर दाउ आर्ट नाट सो अनकाइन्ड एज मैन्स इन्ग्रैटीटयूड - इंगलैंडक सर्द हवा जैकेट स्वेटर मफलर सँ झाँपल देहक हड्डी हड्डीक एक्सरे करय लागैत अछ -

अहाँ कत' चलि गेलों दीदी .... मार्था जकाँ ओ फेर चौंकि वर्तमान मे चलि एलीह - रेशमा, हम जनैत छी - पैसा सँ अहाँक संतुष्टि होयत - मुदा हम प्रोफेसर छी - पाइ हमरो भेटैत अछ - अर्नलीवलय इंगलैंड चलि आयल छी बेटा लग - धरा आस्ते सँ साँस लैत बजलीह - हम एहिठाम आय छी रेशमा- किछ उद्येश्य सँ - पैसाक लोभ हमर जिनगी बरबाद क' देलक, पैसाक हवस बड़ खराब चीज होयत अछि - तावत केओ बाहर दरवाजा खटखटेलक- धरा उठय लगलीह - अहाँ बैसु दीदी हम देखैत छी - बाहर एनड्रू ठाड़ छल - अहाँ घर मे नय भेटलौं तँ हम बुझलौं जरूर अहाँ एहिठाम होयब - हँसैत एन्ड्रू भीतर आयल - हेलो दीदी - कैसा है- एकदम फाइन - धरा हँसैत बजलीह - माइक्रो में काफी गरम करय उठलीह - फेर रेशमी बैसा देलक - अहाँ बैसू दीदी हम गरम कय दैत छी -

कदंब नय आयल अछि की ? पाँच बजि गेल - एन्ड्रू घड़ी दिसि तकैत बाजल - आबिते होयत - एहि ठामक कोनो ठेकान रहैत छैक । छह बजिए जायत छैक आबितो आबितो - रेशमी ब्लैक कॉफीक कप एन्ड्रू के देलक संगे एकटा टोस्ट सेहो -

दीदी एकटा टोस्ट अहूँ ल' लिय' - रेशमी आग्रह केलक -

नय रेशमी अहाँ खाउ - कदंब आयत तँ ओ असगर भ' जायत तँ नश्ते नय करत । अहाँ एन्ड्रुक साथ दिऔक -

रेशमी टोस्ट मे बटर लगाय कुतर' लगलीह -

एहिठामक मौसमक किछ पता नय - धरा एन्ड्रू के बजलीह - जाड़ा मे खाली जाड़ाक यानी शिशिर रितु रहैत छैक किन्तु गर्मी मे हम देखलों एहिठाम एक दिन मे चारि ऋतु बदलि जायत अछि शिशिर वर्षा ग्रीष्म पतझड़ - सभ किछ कतेक विचित्र लगैत अछ -

रेशमी एन्ड्रू हँसय लागल - ताबत दरवज्जा खोलवाक स्वर आयल - कदंब आबि गेल छल - अरे वाह - घर मे दू दू टा डाक्टर बैसल अछि । हम तँ डरिए गेलौं - की भेल हमर माँ के ?

अहाँक माँ के किछ नय होयत कदंब - जकरा अहाँ जकाँ बेटा, एन्ड्रू जकाँ भाई भेटत तँ ओकरा की होयत -

कदंब - अपन जैकेट खोलि बाहिर मे टाँगि देलक - जूता उतारि लीवींग रूम मे बैसि गेल - रेशमी फेर टोस्ट कॉफी बनाय अनलीह -

धरा कें बड़ नीक इ सभ लगैत छल - घर हमर छी मुदा कतेक आत्मीयता सँ रेशमी सभ काज क' रहल अछि - कतेक मैनर्स, कतेक अनुशासन एकरा सभ मे छैक - परिवेश आ संगति मानव कें जतेक उपर पहुँचाय दैत छैक तँ ओतेक नीचा सेहो -

-आब तँ कदंब आबि गेल..... आब तँ अहाँ टोस्ट खायब दीदी - रेशमी धराक आगु टोस्ट दैत बजलीह -

धरा टोस्ट खायत बजलीह - काल्हि खन अहाँ दूनू गोटे आन कॉल छी । अर्ल के हमरा लग राखि देब - हमरो मोन लागत - दूनू बच्चा हमरा बड़ नीक लगैत अछ -

एन्ड्रू प्रश्नवाचक दृष्टि सँ रेशमी दिसि ताकलक - रेशमी असमंजस मे छलीह - धरा बुझि गेलीह - एन्ड्रू हम अहाँक अपन भाइ बुझैत छी - अहाँ सोच मे नय पडू - पैसा हमर जिनगी मे सर्वनाशक कारण बनल - तँ.......

कदंब बात सम्हारैत बाजल - ठीक छैक एन्ड्रू रेशमी हमर माँ ग्रेट अछि - एकरा बुझवाक लेल खाली हृदयक आवश्यकता छैक -

मस्तिष्कक नय - तैं तर्क वितर्क - संशय - असंशय सभ छोड़ु बी हैप्पी - चारु दिसि तकैत बाजल कदंब - हँ कतऽ अछि न्यूला अर्ल?

दूनू गोटे एकटा फ्रेंडक बर्थडे पार्टी मे गेल अछि । रेशमी ओकरा पहुँचा देलक आब जाक' लय आनब -

बजैत अंगेठी मोचाड़ करैत एन्ड्रू ठाड़ भ' गेल - रेशमी सेहो तैयार छलीह - बेस दीदी गुडनाइट....

कदंब अपन बेडरूम मे चलि गेल कपड़ा बदलवा लेल । धरा टीवी आन कय बैसि रहलीह - फेर मोन नय लगलैक तँ टीवी बंद कय रेडियो आन कय देलीह - मैनचेस्टर स्टेशन सँ भरि दिन राति एशियन प्रोग्राम दैत रहैत छैक - तुम न जाने किस जहाँ मे खो गए- धरा अशोथकित भ' गेलीह - सरीपों कत' हेराय गेल सीमान्त ?

ओकरा खबर भेटल छल जे ओ इंगलैंड चलि गेल पहिने तँ मैनचेस्टरक नाम सुनलक पुनः कत' इ निस्तुकी किछ पता नय छल- आखिर धरा की करत - विधिक की विधान छैक - कदंबक नौकरी कोना इंगलैंड मे वीगन मे भेल, फेर लिस्टर मे भ' गेलैक - मैनचेस्टरो मे भारतीय सभ भरल छैक - ओहियो ठाम गली गली छानि मारलक धरा - कदंब आफिस जायत छल ओ जेकेट पहिरि सभ जगह सीमान्तक खोज मे घर सँ बहरा जायत छलीह - ओहिना निसद्वेश्य भटकैत रहैत छलीह, कदंब कें कहियो पतो नय चलैक - एक दिन वीक एन्ड मे एन्ड्रू फोन सँ कदंब कें बजौलक - कदंब - हम अहाँक बड़ जरुरी काज सँ बजौने छी - एन्ड्रू कदंब कें लीवींग रूप मे बैसवैत बाजल - की कहु हम अहाँक की सेवा क' सकैत छी- कदंब विनीत स्वरे बाजल-

तावत रेशमी ब्लैक कॉफी चीकेन नगेट्स ल' क' पहुंचलीह -

कदंब मुस्काइत काफीक कप उठौलक - एन्ड्रू बाजल हम नितान्त व्यक्तिगत प्रश्न अहाँ सँ पुछैत छी यदि अहाँ अन्यथा नय लेब धरा हमरा भाइ कहलक - की बात छैक, हुनक जिनगी मे कोन दुख छैक ? कोन उद्देश्य ल' क' एहिठाम इ अर्न लीव मे' आयल छथि- हमर मोने बहुत प्रश्न हिलकोर मारि रहल अछ - ह जानवा लेल बड़ व्यग्र छी -

हँ कदंब - हम सभ अहाँक परिवार सँ बड़ प्रभावित भेलौं तैं हमरा सभ के शेयर करू- रेशमी सेहो गंभीर छलीह -

एन्ड्रू, बात किछ नय छैक - बात बड़का टाक छैक । कदंब कॉफी टेबुल पर राखि देलक - आस्ते आस्ते बाज' लागल - अहाँ सभ पुछैत छी तँ हम अवश्य कहब । अहाँ सभ एहिठामक बाशिन्दा छी - भ' सकैछ हमर सभक समस्याक हल अहाँ सभ निकालि दी। हमर पिता बहुत बड़का बिजनैसमेन छलाह। भारत मे ओ लाखो करोड़ोंक बिजनेस चलवैत छलाह । माँ हमर प्रोफेसर छथि - एकटा हमर छोट बहीन अछि बंबई मे अहाँक छोटो बहीन छथि - अकचका कें रेशमी बाजल - की करैत छथि ओ - ब्याह भ' गेल अछि की

एतेक प्रश्न एके संगक बौछार मे हड़बड़ाय गेल कदंब- बहीन बंबईक एकटा फर्म मे काज क' रहल अछि - मंजुल - ओकर अपन जिनगी छैक - जीवाक ढंग छैक....

ओकर ब्याह भ' गेल छैक की ? एन्ड्रू सिगरेट पीवैत बाजल-

कदंब चुप रहल फेर एकटा निसांस लैत बाजल - एन्ड्रू जखन सभटा गिरह खोलिए रहल छी तँ खोल' दैत छी । सभ गिरह -

हँ ब्याह भेल छैक मंजुल कें अपना पसिन्न सँ ब्याह केलक । अन्तर्जातीय विवाह -

तखन ? रेशमी साकांक्ष भेलीह ।

विकल्प जी सेहो एकटा प्रायवेट फार्म मे उच्च पद पर छथि मुदा, दूनू अलग अलग रहैत छथि-

कीऽऽ - रेशमीक प्रश्न ।

हंऽ विकल्पक कोनो दोष नय अछि - ओतं सीधा सादा इन्सान, बड़ मिलनसार, बड़ हंसमुख, किन्तु मंजुल निभा नय सकलीह. कदंबक स्वर भावुक भ' गेल -

बेस छोड़ू इ सभ बात - अहाँक पिता एखन कत' छथि - एन्ड्रू बात कें मोड़ दय देलक -

हमर पिता बिजनेसक सिलसिला मे इंगलैंड एलैथ आ एहिठाम बसि गेलैथ- आय तीन बरीस भ' गेल हुनकर कोनो पता नय हमरा सभ कें -

इंगलैंड मे शुरू शुरू कतय रहैथ - इ तँ पता होयत - रेशमी पुछलीह

हँ ओ मैनचेस्टरे मे रहैथ ओहि ठाम सँ लंदन चलि गेलैथ - ज्ञात भेल जे कोनो अंग्रेज महिला संग रहि रहल छथि - तरह-तरहक गप कान मे पड़ैत रहल पिता जी कोनो खोज खबर आय तीन बरीस सँ हमर सभक नय लेलैथ- संयोगे कहु जे हमरा नोकरी वीगन मे भेटि गेल । माँ सहो आबि गेलीह - हम सभ मैनचेस्टर छानि मारलौं- लीवरपुल ब्लैक पुल - लेक स्ट्रीट - सभ जगह माँ कें घुमयबाक बहाना जाक' खोजि आयल छी - किन्तु माँ जनैत छथि जे इ भटकाव मात्र खोजवाक बहाना थीक एकटा, माँक संगे कतेक पब कतेक रेस्तरां सभ जगह गेल छी -

पैसा नशा थीक कदंब - एन्ड्रू बाजल - एहि नशाक संग आर नशाक लत होयत तँ आदमी एहि देश मे नोचा जायत अछि.... लंदन मे खोजलौं कि नय -

शुरू शुरू मे हम जखन आयल छलौं तँ एक बेर खोजने छलौं मुदा आब चाहैत छी जे एक बेर माँक संग लंदन जाय ।

एकटा काज करू ने -

की ?

इस्टरक छुट्टी चारि दिनक अछि - एहि मे लंदन जेवाक प्रोग्राम बनाउ, हमहुँ सभ संगे चलब, एकटा ट्रिप भ' जायत - आ- ओना अहाँ हमरा एकटा फोटो आ पता अपन पिताक द' दय' हम पूर्ण रूपेण पता लगेवाक कोशिश करब -

कदंब कें आय चैन महसूस भेल - मोन हल्लुक लगलैक.... मुदा, धरा नय बुझि सकलीह दून् गोटेक गप। ओ मात्र एतबे पुछलीह- किएक बजौने रहथि एन्ड्रू?

इस्टरक छुट्टी मे सभ कौय मिलि लंदन जेवाक प्रोग्राम बनयवा लेल - कपड़ा पहिरैत कदंब बाजल ।

तँ जायब की - धरा अनमने पुछलीह ।

हँ माँ एकदम जायब ।

धरा खुश भ' गेलीह - न्यूला आ अर्लक सामीप्यक अनुभूति

सँ - राति भरि अतीत धराक सीरमा मे बैसल रहल ....

धरा अपन मोन कें नीक जकाँ जनैत अछ जे ओकरा आकाश बाबूक बाँहिक सहारा नय वरन प्रेमक, विश्वासक सहारा चाही जाहि ठाम शरीर प्रधान नय मोन प्रधान होयत अछि -आकाश बाबू सेहो कहने छलाह - धरा हम जनैत छी अहाँकें कोनो पात्रक नय वरन् शीतल जलक स्वच्छ जलक आवश्यकता अछि - आ धरा उत्फुल्ल भऽ आकाशक ऊँचाई के आत्मसात करऽ लगलीह - सीमान्त - सीमान्त कतेक नीक अन्डरस्टैंडिंग अछि सीमान्त आ धरा कें । कतेक विश्वास अछि ओकरा हमरा पर ? एक बेर चंचल भ' धरा आकाश सँ कहने छली - जखन अहाँक कोनो खास हँसी कें आ कि कोनो खास दृष्टिकें देखैत छी कोनो अपराध करवाक जी चाहैत अछ -

नय धरा - आकाश गंभीर छल - एहि तरह बात सोचवाको नय चाही ।

सोचवा पर की इमरजेन्सी लागल अछ ? की मीसा मे एरेस्ट भऽ जायब - सलाई ककाठी सन हँसी बरि गेल ।

हँ किएक नय सीमान्त चाहत तँ एरेस्ट कऽ लेत - आ सलाईक काठी बुता गेल । धरा मौन भऽ गेलीह -

धरा एकटा बात बाजी ? हम सभ टीन एजर्स तँ छी नय, मुदा कहियो कहियो इ बचपना सन गपसप - बड़ विचित्र लगैत अछ ।

हम बुझैत छी आकाश बाबू सभटा बुझैत छी । मुदा मोनक दुनिया कतेक विचित्र अछि जाहि ठाम आदमी चित्र विचित्र बनवैत रहैत अछ - अपन मोन पर अधिकार नय रहि पावैत अछ । पता नय किएक अहाँ लग आकाश बाबू हम एकटा छोट छीन बालिका बनि जायत छी - सोलह सालक अल्हड़ किशोरी जीवन सँ भरपूर - आ खियालक एहि दुनिया मे किछ बचपना सोचि बैसैत छी ? आ धराक गर बाझि गेल छल...

ट्रिंक ट्रिंक ट्रिंक

टेलीफोनक घंटी

हेलो -

'हम अहाँ सँ प्रेम नय करैत छी
मुदा अहाँ सँ
गप करवा मे
अहाँक देखैत रहवा मे
एकटा
सुखद अनुभूति सन होइत अछ -

केहेन लागल हमर कविता - धरा फोने सँ आकाश कें पुछलीह -

ओह, बड़ नीक बड़ नीक - आकाशक स्वर लहरायल । आ धरा शांत मोने रीसीवर राखि देलक । अपन माथ ओहि टेलीफोन पर राखि देलीह । आँखि मुनी गेल आ ओकर मोन स्वप्न लोक मे भटकऽ लागल....

अहाँक आँखि मे ताकि कत्तौ किछ हेरा जेवाक, किछ बिसरि जेवाक, कत्तौ भटकि जेवाक उदासी सन घिरि अवैत अछ - आकाश बाबू - लगैछ जेना अहींक खोज मे हम युग युग सँ भटकि रहल छी। हमर भावना कें अहींक आगमनक प्रतीक्षा होय - धरा सजल भऽ गेल छलीह । हमर कविता मे अहाँ की पवैत छी आकाश बाबू ?

हम की बाजी धरा मुदा कत्तै किछ नोछार जकाँ लागि जायछ, किछ छिला जायत अछ हँऽ-स्यात् भावात्मक तुष्टि भेटैत अछ - आकाश बाबूक वाणी संयत छल ।

आकाश बाबू भावात्मक तुष्टि मानव कोना पवैत अछ ?

भावात्मक संबंध - हँ धरा, कत्तौ किछ भावात्मक संबंध अवस्य रहैत होयत जे देश काल वय किछ बुझैत नय होयत । ओहिनो प्रेमक तीन धरातल होइछ - दैहिक, मानसिक आ आध्यात्मिक। एहि मे दैहिक अधम मानसिक साधारण आ आध्यात्मिक उत्तम - बीचे मे बात काटैत ओस कणक हँसी संग धरा बजलीह -

हम पुछैत छी आकाश बाबू मानसिक आ अध्यात्मिक दुइ धरातल अछ मुदा की दूनूक बाट एके नय अछ ? दुनू एके बाट सँ चलैत अछ तँ की मानमिक आ की आध्यात्मिक -

धरा - आध्यात्मिक मे प्राण प्राण कें मनैत अछ आत्मा आत्मा

कें जकरा संसारक कोनो बंधन नय रोकि सकैत अछ, विश्वक कठोर प्राचीर नय भेदि सकैत अछ । इ एकटा शाश्वत प्रेम अछ चिरंतन धारा अछि जे अबाध गति सँ आत्मा आत्मा कें आप्लावित करैत रहैत अछ । धरा, अहाँ सोचनाय छोड़ि दियऽ । किएक एतेक सोचैत रहैत छी ? अहाँक कोन कष्ट अछि ?

कष्ट ? - धराक साँस पारदर्शी भऽ गेल छल - अहाँ कष्ट पुछलौं आकाश बाबू ? हमरा तँ आध्यात्मक चिरंतन धारा मे प्रवाहित हेवा लेल मोन मानस मे डुबकी लगवऽ पड़ैत अछ । हम मानसिक आ आध्यात्मिक कें अलग नय कऽ पावि रहल छी । हम विवश छी - हमर प्राण विवश अछ । बचल दैहिक - हमरा तँ एहि शब्द सँ घृणा अछि - वितृष्णा अछ । 'हमरा अहाँ सँ प्रेम अछि' इ बाजि प्रेमी प्रेमसी एक दोसराक मृणाल भुजा मे बन्हि बन्हि प्रेमक सप्पत खायत रहल इ कोन प्रेम थीक ? प्रेम तँ हृदयक निधि थीक, नयनक भाषा.

धरा अहाँ बड़ भावुक छी, हम एक बेर कत्तौ पढ़ने छलौं प्रेमक विषय मे कि जकर आरम्भे अपूर्ण हो ओ दोसरा कें संपूर्णता कोना दऽ सकैत अछ । सोचु तँ कतेक पैघ ट्रैजिडी अछ ।

आकाश बाबू - अहुं एहि बात पर विश्वास करैत छी जे स्वयं अपूर्ण अछि ओ दोसरा कें कोना संपूर्णता देत ? - धराक स्वर गंभीर भऽ गेल - स्त्री आ पुरुष अपना अपना मे तँ स्वंय अपूर्ण अछि। एक दोसरा कें संपूर्णता दैत अछि । प्रेम प्रकृतिक वएह अपूर्ण भाव थीक जे प्राणी मात्र के संपूर्णता प्रदान करैत अछ। आकाश बाबू, प्रेम मे जे अपूर्णता अछि वएह एकर चिरंतनता अछि । ओहि मे ओकर चिर पिआस भरल अछ जे एम्हर ओम्हर अपन पिआस मिटवा लेल बेचैनीक सागर जेना चिरकाल सँ चिरकाल धरि प्रवाहित होइत रहत। इ एकटा अमिट पिआस अछि कहियो नय मेटत - कहियो नय खतम होयत- आ तैं ऋषि मनीषी विश्व बान्धुत्वक परिकल्पना केने छथि -

आकाशक मोन मे कत्तौ किछ बिद्ध शलाका जकाँ तप्त छल। एकटा सिनेह जेना हुनकर चेहरा पर मौन मूक अंकित भऽ किछ पुलकित रहल छल । ओहि स्नेहक आवेग मे ओ हँसि पड़ल- अहाँ बड़ निश्छल छी धरा । अपन एहि निश्छलताक कारण अहाँ बेर बेर

ठोकर खायब ।

धराक नयन मे मेघ उमड़ि गेल । मचलैत साँझ रातिक बाँहि लेल बेकल भऽ गेल । धरा आ आकाश अपन अपन भावना मे डुबल। अचक्के स्ट्रीट मर्करी भक्क सँ बरि गेल । लज्जाहीन इजोतक किरण धराक मुख चुंबित करैत आकाशक चेहरा पर पसरि गेल । दूनू चौंकि गेलैथ आ एक दोसराके देखि अचक्के हँसि पड़लैथ ।

निष्पंद निर्वाक निशा मयंकक आँखि मिचौली, निश्छल रजनीगंधा, अलमस्त सिंगरहार आ एहि सभक मध्य सम्मोहन मे घिरल आकाश आ धरा धरा आ आकाश । निष्कृतिक एकटा सांस लय आकाश बाबू बजलाह - प्यार कहियो अपन संपूर्णता नय पाबि सकल मुदा हँ इ क्षण अपन संपूर्णता पाबि गेल धरा । आब एतेक सजल नय बनु.... ।

दीऽ दी जी.... दी दी जी .... चा.... ह..... आ धरा स्वप्न लोक सँ घुरि एलीह । कत्तौ किछ नय - अपन घर अपन फोन - एकटा रिक्तता.... स्वप्निल आँखि सँ ओ रंगमा दिसि तकलीह - चाहक कप टेबुल पर राखि ओकर मोन पुनः चुपचाप स्थिर भय कत्तौ दूर सँ आवयवाला वंशीक ढेर कें आत्मसात करय लागल शब्द क' सम्मोहन अछि परंच निःशब्द...

अपन मोन कें धरा बुझि नय पाबि रहल अछ । नहि जानि किएक आय कालि्ह ओ आकाश बाबूक कल्पना मे एतेक तन्मय रहऽ लगलीह । ओकरा होयत अछ जे आकाश बाबू एहिना अनंतकाल धरि ओकर कल्पना मे बेसुध बैसल रहथ । अपन बेसुध आ मुग्ध मुस्कानक संग ओ कतेको कल्प के सीमा कें एहि क्षण मे बाँधि लियऽ -

एकटा खुशखबनी सुनु - आकाशक फोन छल ।

धरा उत्सुक भेलीह - तरंग आयल छथि गाम सँ बच्चा सभक संग-

तरंग-धरा चौकि गेलीह - ओह तरंग दीदी वाह इ तँ सरिपहुँ खुशखबरी थीक - की जलखै ओहिठाम हमरा भेटत - खुशी सँ उमगैत धरा बजलीह - हँऽ अवश्य - इ तँ हमर मोनक बात छल

अहाँ कोना बुझलौं ।

धराक मोने आयल - अहाँक मोन हमर मोन की अलग अलग अछि आकाश - इएह तँ सबंधी अछ एक दोसरा कें - मुदा ओ बजलीह किछ नय।

अहाँ की सोचऽ लागलैं ? हम सभटा बुझैत छी । अहाँ की समझैत छी हम नय बुझि सकैत छी? खैर - कए बजे सँ कओलेज अछ ?

कओलेज - आय डेढ़ बजे सँ क्लास अछि ।

तैयार भऽ अहाँ तुरंत चलि आउ । नाश्ता एतऽ खाना एतऽ - नय नय आबिते आबिते हम तरंग दीदी पर एतेक भार नय देब-

अहाँ जखन अपना कें आन बुझैत छी तँ हम किछ नय बाजब- नय नय आबि रहल छी - अहाँक आदेश हमर कर्त्तव्य ....

आ ओहि दिन धरा बड़ खुश छलीह । तरंग दीदीक व्यक्तित्वक शालीनता ओकरा मंदिरक पवित्रताक भान कराय देलक । तीस पैंतीसक आयुक ओ युवती धरा सँ एना मिललीह जेना सागर नदीक प्रवाह के अपन अंग मे समेटि लैत अछ-

आ तरंग सँ भेंट भेलाक बाद तँ धराक जिनगिए बदलि गेल। तरंग दीदी देहातक रहितो नहि तं हृदय मे कोनो संकीर्णता छल आ नय मलिनता । एकटा पैघ बहीन जकाँ तरंग धरा कें अपन स्नेह सरोवर मे डुबाय देलीह । सतरंगी आलोक लोक सँ सात' गेली धरा - धरा आकास तरंग तीनोक बैसकी होम' लागल करीब प्रतिदिन - आस पड़ोस पिहानी गढ़ैत रहल - सलीबक कील ठोकैत रहल - मुदा ओहि सभ गपक - ओहि सभ कीलक हुनकर सभ पर कोनो कसर नय, एहिना एक सांझ तीनू गोटे गप्पक तरंग मे झुमि रहल छलाह कि अचक्के एकटा स्वर आयल - की हम अन्दर आबि सकैत छी ?

स्वर सुनिते सभ चौंकि गेल, धरा एकदम ठाड़ भ' गेलीह - अन्हार सँ इजोत मे स्वर साकार भेल - आकाश-सीमान्त बाजि ओकर गर सँ लिपटि गेल - अरे वाह ! महफिल एहिठाम जमल

अछि-

अहाँ अचानक एहिठाम कोना - ? आकाशक उत्सुक प्रश्न ।

हम तं धरा के सरप्राइज देवा लेल चाहैत छलौं, मुदा एक साथ एतेक गोटेकें सरप्राइज देब - नय सोचैत छलौं - आ धरा दिसि देखैत सीमान्त बाजल - की हाल छैक ?

धरा कनिक माथ हिलाय बजलीह - ठीक छैक ।

अरे धरा कनि मुस्का कें माथ हिलाउ - इ की - ठीक छैक-

धरा मुस्काय उठलीह । सीमान्तकें देखतहि ओकरा चैन भेटि गेल । तपैत धरती कें मेघक छाहरि भेटि जाय जेना ।

- आ - ई - कनि परिचय तं कराउ - सीमान्त तरंग दिसि तकैत बाजल जे एक कोन मे ठाड़ चुपचाप सभक मिन देखि रहल छलीह -

ओह - हँ - इ हमर बेटर हाफ तरंग - आकाशक बात कहैत सीमान्त बाजल - बेटर हाफ नय, बेस्ट हाफ - किएक तं हिनकर सभ बिन तं हम सभ किछ नय छी - आब अहां चुप रहु आकाश-तरंग दिसि तकैत सीमान्त बाजल - हँ तं मेम साहब, एहि तरंग मे अहां चाहक तरंग मे हमरा सभ कें डुब दिय जाहि सँ हम अप बेस्ट हाफ -

आब तरंग सहज भ' गेलीह - चाहक तरंग मे त डुबा देब मुदा जाय नय देब । रातुक खाना खवाक बादे जाय देब । ओना अहां धरा सं असगरे मे मिल' चाहब तं कोठरी खाली अछि - उन्मुक्त हंसी हंसैत तरंग बजलीह -

धराक गाल गुलाब भ' गेल । सोफा पर पएर पसारैत सीमान्त बाजल मेम साहबक आदेश माथ पर मुदा, कोठरीक आवश्यकता नय छैक - हम सोचैत छी धरा सेहो एतेक 'इममोशनल' नय छथि-की धरा -

धरा इममोशनल अछि मुदा एतेक इममोशनल नय - एहिठाम सीमान्त चुकि जायत अछि - देखु धरा, अहाँ बजएलौं - अहाँक आदेश मानि हम चारि पांच मास लेल एहिठाम आबि गेल छी - एहिठाम सं सभ काज के देखब किछ दिन -

- धराक अन्तरा नाच्हि टा चिड़िया जकाँ खुशी सँ फुदकि रहल छल ।

कदंब कोना अछ ? ओकरा सं भेंट भेल अछि कि नय - मंजुल कोना रहैत होयत- दूनू भाय बहोन बोर्डिंग मे - सीमान्तक बाँहि मे निचिन पड़ल धराक आंखि मे नीन्न नय छल । राति तीति भीजि अलसाय गेल, किन्तु, सीमान्त धरा दूनूक गपक अन्त नय छल-

-देखु धरा अहां कोनो बातक चिन्ता नय करू । ओहि दूनू बच्चाक जिनगी बनेनाय छैक । सभटा पैसाक माया थीक । एतेक पाय कमा रहल छी - अही लेल ने, ओहि दूनू बच्चे लेल ने - आर हमरा के अछि - सभक अपन दुनिया छैक, अपन जिनगी छैक - केओ केकरो हाल पुछयवल नय - सीमान्त बाजल - किएक धरा - की बात भेल -

बात किछ नय छैक - मुदा, अहां सं अलग रहि - लोक कतेक बात गढ़ैत अछि - की की बजैत अछि - आ तकर बाद - धरा प्रवाहित भ' गेलीह - अपन आन वन्या सभक कथा - सभक गप सुनवैत रहलीह -

सीमान्त सुनैत रहल - आ फेर एकटा ठहाका लगवैत बाजल-पागल छी अहां । हमरा गावय आबतियैक तं गाबि देतौं - कुछ रीत जगत की ऐमी है हरएक सुबह की शाम हुयी - तू कौन है तेरा नाम है क्या सीता भी यहां बदनाम हुयी ....

धरा - हमरा अपनहुं पर ओतेक विश्वास नय अछि जतेक अहां पर । अपना सभ लोगक बात पर जायब कि अपन आत्मा पर-अपन मोन पर ।

एकटा बात बाजी धरा - सीमान्त ओकर केश मे आंगुर दैत बाजल - हम जनैत छी धरा आकाश बहुत नीक व्यक्ति अछि - अहां दूनू साहित्य जीवी छी - दूनूक गप मे चैन भेटत होयत - हम की नय बुझैत छी - हम की अहां कें नय चीन्हैत छी - आ धरा बरफ जकां गलैत रहलीह -

अहाँ अपना के एतेक असगर किएक बुझैत छी धरा, उदास किएक रहैत छी - स्नेहिल स्वर छल तरंगक ।

सांझुक उदास कुहेलिका अपन आवरण मे कतेको रहस्य छिपौने मानव कें तोष दैत रहैत अछि-प्रकृति जतवा रहस्यमय अछि नारियो तँ ओतबे रहस्यमय अछ दीदी ? - धरा स्थिर स्वरे बुदबुदाइत रहलीह -

धरा नारी रहस्यमय नहि अछि । मानव मात्र पुरुष हो वाकि स्त्री सभ रहस्यमय अछि एहि प्रकृति जकाँ - तरंग शांत स्वरे बजलीह- जनैत छी किएक ? किएक दीदी - एकटा अबोध नेना जकाँ धराक जिज्ञासा छल ।

पँच तत्व सँ एहि ब्रह्माण्डक निर्माण भेल अछि - एहि प्रकृतिक रचना भेल अछ - मानव शरीर सेहो एहि पंच तत्व 'क्षिति जल पावक गगन समीरा' सँ निर्मित अछि - तँ तँ माटिक देह अंत मे माटि मे विसर्जित भऽ जायत अछ । आ तँ प्रकृति आ मानव मे एतेक समानता अछि । चान कोना उगैत अछि - सूरज कोना उगैत अछि डूबैत अछि - झरना किएक कल कल छल छल बहैत अछि- धरा प्रकृतिक कण कण रहस्यमय अछि - कतेक की उदाहरण दी- किएक अकाल पड़ि जायत अछि, किएक बाढ़ि आबि जायत अछ - कतबो कोनो वैज्ञानिक संधान करत पार पावि सकत एहि प्रकृति कें- थाह लऽ सकैत अछि - तँ की मानव मोनकें केओ थाह लऽ सकैत अछि - अहाँ बुझि सकैत छी केकरो - तरंग लगातार बजैत थाकल नहि छलीह - एकटा आवेश एकटा ऊर्जा जेना ओकरा रौदी दाही जकाँ ताप तप्त कऽ रहल छल -

दीदी - पता नय किएक हमरा प्राकृतिक कण कण एतेक वेदनामय प्रतीत होयत अछि ? ओहि दिन सीमान्तक संग कोसी बराज पर गेल छलौं । उन्मत कोसी नदी पर आ विशाल बांध - कतेको फाटक लागल छल - मुदा सर्पिणी जकाँ, आहत शेरनी जकाँ भयंकर नाद कऽ रहल छलीह कोसी ओहि बन्धन मे । फाटक छाती पर चीत्कार मारि अपन माथ पटकि रहल छलीह - दीदी - साँच बजैत छी - हमर दिल दहलि गेल छल - दीदी ओकरा बंधन मुक्त करवा लेल हमर मोन छटपटा रहल छल। हमर छाती मे दरद उठि गेल छल - दीदी एना किएक होयत अछि - एतबेटा नहि दीदी कत्तौ

कोनो एहेन चीज देखैत छी तँ हमर मोनो आहत भऽ जायत अछि - दोसरकें दुख सहल नहि जायत अछि - आ धरा तड़फड़ा रहल छलीह तरंगक समक्ष । ओकरा कहियो एहि तरहक निर्बंध उन्मुक्तता नहि भेटल छल जाहि ठाम बरसि सकय -

शांत भऽ जाउ धरा - शांत भऽ जउ । अहाँ बड़ वेदनामयी छी- तँ तँ एतेक व्यथा अछि अहाँक अन्तर मे । जकर आँखि मे सहजहि नोर आबि जायत अछि ओकर हृदय निश्छल शिशुसन होयत अछि। ओ ईश्वरक ओतवे समीप होयत अछि -

दीदी - अहाँ तँ गाम मे रहैत छी । गाम मे रहि एतेक बात एतेक भाव अहाँमे कोना कत्तै सँ आयल -

की धरा शहर आ गाम मे रहि गेला सँ अन्तरक भाव शिशु मरि जायत अछि ? पढ़ल आ बिनपढ़ल मे की हृदयक उमंग उत्साह किछ नय रहैत अछि - धरा - जे गाम मे रहैत अछि आकि जे निरक्षर भट्टाचार्य अछि - हृदय सभके अछि - हृदय जाहि ठाम भावनाक भंडार आ कामनाक खजाना नुकायल रहैत अछ ओ तँ प्रत्येकक संग अछि - सभक अन्तरतम मे किछ न किछ नुकायल पूंजी रहैत अछि जकरा ओ बुझवा लेल नय चाहैत अछि - आ तरंगक स्वर मद्धिम भऽ गेल -

धरा चौंकलीह - तरंग दीदी - आकाश बाबूक पत्नी - एतेक विदुषी एतेक भावमयी - ओकरो हृदय मे एकटा विरहनी नायिका छल भावनाक तुलसी पर मोनक दीया नेसैत, दीदी ! अहाँ हमरा अपन विषय मे किछ नय कहब दीदी - धराक अनुरोध सुनि तरंग अपना के सम्हारि लेलीह - हम की बाजब - भभाय कें हँसि देलीह तरंग - हमरा फुरसत अछि इ सभ व्यर्थक बात सोचवाक ! अपन जिम्मेदारी निभएबा सँ कतऽ.....

परन्तु धरा के स्पष्ट देखा गेल जे तरंग दीदी जे देखा पड़त छथि से नहि छथि । प्रत्येक व्यक्तिक अन्तर मे एकटा अपन संसार होयत अछि । अपन बनाओल अपन सरजल - जाहि ठाम कोनो निर्णय कोनो कानून कोनो संस्कार असंस्कारक प्रश्न नहि । अपन मोन मे ओ ओहि संसार कें बसवैत अछि अपन प्रियतम वस्तुक

साहचर्य पवैत अछि हँसैत अछि बजैत अछि । कतेक नीक कतेक मधुरिम होयत अछि ओ अनिर्वचनीय पल - आ ओहि अन्तरमनक संसारक संगे ओ एहि भाव सागरक पाथरक नाह पर हँसैत पार कऽ लैत अछि - अन्तरक स्फूर्ति वाह्य जीवनक पाथेय बनि जायत अछ। धराक तँ इएह हाल छल - अपन अन्तर अवस्थित नान्हि टा धरा कें ओ सतत जीवंत रखने रहैछ । जहिना प्राकृतिक उफान कोसी कें बान्हि देल गेल छल ओहिना मानव कें अपन हृदयक बाढ़ि पर बान्ह बांधऽ पड़े अछि। मुदा जे अपन अन्तरक संग जीवंत अछि ओकरा बांध बाँन्हवाक कोनो आवश्यकता नय पड़ैत अछ - आ धराक आँखि मे कोसीक विभीषिका नाचि गेल ।

कोसी पर बाँध बान्हवा सँ पहिने माय बाप कोसी नदी सँ प्रार्थना करैत छलैथ जे माय हमर बेटी के नीक जकां पार उतारि देब तँ हम, छागर-पाठी सिन्नूर अहां के चढ़ायब - कोसी माता थीकिह, एनर्जी-फोर्स शक्तिमयी जकर अतुलनीय शक्ति कें बराज बनाय ओकरा बांधि देल गेल । बावन फाटकक लौहपाश मे कोसी उफनैत रहैत अछि । फन काढ़ि, बेर बेर प्रहार करवा लेल उत्तेजित, उन्मादित कोसीक धार सँ श्वेत श्वेत फेन गुच्छ गुच्छ निःसृत होइत रहैत, एकटा सिंहनाद समस्त वातावरण कें गंभीर बनौने, साक्षात्, भैरवी कटकट विकट ओठफुट पाड़रि लिधुर फेन उठ फोका-क्रुद्ध सर्पणी सन आहत बेर बेर डंक मारवा लेल उद्धत । असीम कें ससीम बनेवाक प्रयास मे कोसीक हुंकर दुर्गाक सिंहनाद, चण्डीक भैरव निनाद -

की प्रत्येक स्त्रीक हृदय मे इ निनाद रहैत अछि - लौहपाश मे आबद्ध - भीतरे भीतर ओनाइत-

-धराक आगु मे आकाश बाबूक जिनगीक पन्ना सभ फड़फड़ाय लागल - ओकर एकटा प्रश्न छल आ आकाशक उत्तर सभ.....

आय अहाँक प्रश्न हमर सजल क' देलक - धरा, जखन हम अठारहो-उन्नीस बरिसक छलौं तँ हमर एकटा भौजी छलीह । मुँह कान साधारणे छल मुदा रंग धप-धप गोर बड़ हंसमुख, बात बात पर हँसीक फुलझड़ी सँ हुनकर देहयष्टि मे जेना शत शत विद्युत-तरंग

कँपैत छल । हमर किशोर मोन मे हुनका सदिखन देखैत रहवाक अदभुद लालसा रहैत छल एक दिन भैया कहलन्हि आकाश सीनेमाक समय बीतल जाय अछि । भौजी कें कहियौ जल्दी तैयार हेवा लेल।

हम दौड़लहुँ भौजी लग -

बौआ कनि इ सेंट हमर वस्त्र पर छिरिया दिय ... हम उल्लसित भऽ सेंटक फुहारा हुनकर देह पर लुटवै लगलौं । जेना कोनो अपूर्व खजाना भेटल होय । हमर गला मे सेहो सेंट मलि दियऽ-..... आ आस्ते आस्ते हुनक कोठरी मे हम आवऽ जायऽ लगलहुँ। हम ओहि वयस मे हुनकर सभ किछ पावि गेलौं । इ सभ भौजी किएक करैत छलीह - हम नय बुझि सकलौं। आ जेना पापक घट फुटिते अछि दू मास बाद भैया इ तमासा देखि लेलैथ । हुनकर दुर्वासा सन क्रोध आ हमर भय कँपित हृदय भौजी पर की बीतलै हमरा नय बुझल अछ । हुनका सँ मिलवाक रास्ता जे बंद भेल तँ आय धरि भेंट नय भ सकल ..... इ हमर जिनगीक पहिल घटना छी धरा । नारीक शरीर सँ पहिल भेंट बड़ मादक मुदा आय हम स्वयं सोचैत छी तँ एना नय बुझाय पड़ैत अछि जे हम हुनका सँ प्यार केने छलहुँ....

जिनगीक बाट कुबाट सरिपहुँ मनुखक विवेकहीनता नय बुझि सकैत अछि, तकर एक बरीसक बाद हमर जीवन मे लता एलीह । ओ बाबूजीक एकटा दोस्तक बेटी छलीह । ओकर सुन्दरता-जेना निश्छल निर्मल पूनमक चाँद । आ ओकरा सँ हम सरिपहुँ प्रेम कयलहुँ धरा । अहाँक विश्वास नय होयत धरा आय काल्हिक लैला, मजनूक प्रेम नय मुदा अपन आत्मा सँ हुनका सँ हम प्रेम केलहुँ । आ लता सेहो हमरा प्रेम करैत छलीह, कम सँ कम बजैत तँ इएह छलीह, मुदा ओकर ब्याह दोसर जगह भऽ गेल। वर-पक्ष बड़ धनी छल । हम गरीब माय बापक संतान । लता पैसा पर बिक गेलीह । खैर लता खुश छलीह - हमरा संतोष छल । एक दिन हम हुनका सँ भेंट करवा लेल आकुल हृदय उत्फुल्ल मोन निर्मल भाव नेने गेलहुँ । मुदा, लताक ओ उपेक्षित आँखि - कोनो कुशल क्षेम नय, कोनो आदर सत्कार नय । हम बड़ साहस कय बाजलौं - 'लता हमरा बिसरि

गेलौं की ?

एकटा गर्विणी नायिका जकाँ अपन मादक ग्रीवा वक्र कय बजलीह - अहाँ की बजैत छी हम नय बुझि रहल छी -- 'साँचे लता-? मुँह सँ अचक्के बहरायल ।

किछ देर मौन रहलाक बाद - एक झटका सँ उठैत बजलीह- ओह, केहेन-केहेन लोक मिलवा लेल चलि आवैछ । मिजाज तंग भऽ जायत अछ -

हमरा तँ लागल जे केओ लाल-लाल धीपल लोहा देह पर दय देने होय । कतेक दिन धरि हमर हालत पागल जकाँ रहल । आवारा जकाँ सड़क पर घुमैत रहलौं । आइयो नय बुझि सकैत छी हमर कोन अपराध छल - एकर चर्चा हम अपन एकटा दोस्त सँ केने छलौं जकरा प्रेम प्यार एहि सभ नामे सँ हँसी अवैत छल । कहऽ लागल - यार, जाहि स्त्रीक शरीर अहाँकें नय मिल जाय ओ स्त्री अहाँक नय भऽ सकैछ । अहाँक मौका छल अहाँ गँवाय देलौं । अहाँक गलती इएह छल -

साँच बजैत छी एकर बाद जे हमरा नारी तन सँ घृणा भेल से हम कहि नय सकैत छी । जहिना स्त्री दिसि हम प्रबल वेगे आकर्षित भेल छलौं ओतवे हमर मोने डर समाय गेल । लागल जहिना केओ देह सँ धूरि झाड़ि दैत अछि तहिना हमरा झाड़ि देल गेल होय -

विवाह भेल आ हमर घृणाक शिकार भेलीह हमर पत्नी - किछ महीना, किछ दिन नय मुदा कतेको साल..... । मुदा, तरंग सभ बर्दाश्त करैत रहलीह । नारी धरती सँ सहनशील होयछ एकर प्रत्यक्ष उदाहरण तरंग छलीह । आकाश बजैत रहलाह - कोनो बाला ब्याहक सतरंगी कल्पना मे तन मोनक रंगल चुनरि पहिरि अवैछ ओकरा मरुस्थली रौद मे खाली पएरे धीपैत बौल पर दौड़य पड़य - ओह-ओहि समय हम बड़ राति-राति धरि पढैत छलौं । कहियो दूई बाजि जायत छल आ कहियो तीन मुदा ओ जागले रहैत छलीह । नि:शब्द मौन मूक अपन आँचरि सँ हमर पीठ परक घाम पोछि दैत छलीह - कनि-कनि देर पर अपन आँचरि सँ हवा करैत छलीह । पहिने तँ हम हुनकर कर्त्तव्य बुझि उपेक्षा करैत रही । मुदा धीरे धीरे

हमरा लागल जेना कोनो अप्रत्यक्ष, अशरीरी प्रार्थना हमरा खींची रहल होय - खींची रहल हो जाहि तरहे प्रार्थना करैत काल मानव अपना आपके उत्सर्ग कय तल्लीन भऽ जायत अछ आ तखन जन्म भेल स्नेहक । हमरा सभ दूनू गोटे अपन प्रथम पुत्रक नाम स्नेह राखलौं। मुदा - धरा, हमरा अपन कर्मक फल भेटल बाकि नियतिक अभिशाप - स्नेहक जन्मक बाद ओ भीषण रूपे बीमार पड़लीह - भरि भरि राति हुनकर सीग्मा मे हम बैसल रहैत छलौं । अपना आप कें सदिखन कोसैत छलौं आ ईश्वर कें दया आयल तकर बाद तँ धरा एकटा नम्हर कथा अछि । नम्हर मनोभूमि अछि । आ पाश्चाताप मे हम स्नेहकें लेल तरंगक लेल अपन जीवन उत्सर्ग कऽ देलहुँ ..... कोना भेलने हेतीह तरंग एतेके उपेक्षा, एतेक अनादार - सरिपहुँ, स्त्री पुरुष कें अपन नियति मानि सहिष्णुताक कवच पहिन गृहस्थी रूपी तलवारक धार पर कोना जीवैत रहैत अछि ।

आब ओकरा सीमान्तक हृदय बुझा पड़ल । सीमान्त अहां हमरा एतेक नीक सँ बुझि लैत छी - समझि लैत छी - लोक किएक नय बुझैत छैक -

धराक नोर हिचकि बनि निकलि रहल छल -

देखु धरा - एकटा भावुक स्त्री कें, बुझवा लेल अविश्वास आ संदेह भरल पुछताछ नय वरन् सहृदय सह संवेद्य भावुक हृदय चाही धरा - धराक नोर पोछैत सीमान्त बाजल - आब सुति रहु राति बहुत बीति गेल ।

सीमान्त निश्चिन्त सूतल छल । धराक मोन सेमरक फूल सन, हल्लुक नील गगन मे विचरन क' रहल छल - कतेक विश्वास अछि सीमान्त कें हमरा पर - एहि विश्वासक रक्षा हम कर - अवस्य करब - हमरा अपना पर ओतेक विश्वास नय अछि जतेक अहां पर - आ धराक मोने रेतक पहल बनैत छल, खसैत छल - महल मे कखनो छवि अवैत छल तरंगक - कतेक सुन्दर तन सँ, मोन सँ । कतेक प्यार भरल अछि ओकर हृदय मे, कतेक ममत्व - आकाश - कतेक गंभीर कतेक विचारवान कतेक संयत - आ सीमान्त - कतेक उन्मुक्त, एकटा तीव्र धार सन जे अपन प्रवाह मे अगल बगलक ध्यान देने

बिन उन्मुक्त प्रवाहित होयंत रहैत अछि अपनहि धुन मे मस्त ।

एक दिन एहिना हंसी मजाकक तर्रा चलि रहल छल, गपक फुलझड़ी छुटि रहल छल कि अचक्के तरंग बाजि उठलीह - एकटा बड़ विचित्र बात अछि सीमान्त जी -

सभकं प्रश्नवाचक दृष्टि तरंगक चेहरा पढ' लागल ।

बाजी - कनिक वक्र मुसकी मुसकाय तरंग बजलीह - बाजुने तरंग जी - अहां हरदम तरंगे मे रहैत छी - अधीर होयत सीमान्त बाजल - हं तं हमर तरंग देखु - धरा आकाश दिसि इंगित करैत तरंग बजलीह - केहेन भेल, केहेन नाम अछि - धरा - आकाश -

धराक मोने किछ क पि गेल ।

किन्तु आकाश अपन धीर गंभीर मुस्कान नेने बैसल छल । सीमान्तक ठहाका - ओह अहां तं हमर मोनक बात छीनि लेलौं । हम तँ कतेक बेर धरा के इ बात कहवा लेल चाहैत छलौं - मुदा जखन कहवा लेल चाहैत छलौं तं अवसरे नय भेटैत छल आ अवसर भेटय तँ स्मरणे नय रहैत छल -

सिगरेटक धुइयाक छल्ला बनवैत आकाश बाजल - अहां सभक बाजवाक अर्थ ?

अरे आकाश अर्थ तं इएह अछि जे अहां दूनू गोटे कें एक हेवाक चाही - किन्तु दूनू अलग अलग - सीमान्त एकदम खुजल छल, कत्तौ कोनो नोछार नय - लागैत अछि कोनो उपन्यास पढ़ि रहल छी आकि कोनो कथा - सीमान्त प्रवाह मे छल - वास्तविक जीवन मे एहेन विचित्र सामंजस्य ।

धरा संयत भ' गेल छलीह । उहो एहि विचित्र मजाक के साथ छलीह -

देखु सीमान्त, - आकाश पूर्ववत छल्ला बना रहल छलाह - अहां बजैत छलौं दूनू कें एक हेवाक चाही, किन्तु, की कहियो धरा आकाश एक भेल अछि - हं ओ मिलतो अछि तं सीमान्त मे - आ उहो एक काल्पनिक बिन्दु पर । आ इएह उचितो थीक -

ठीक छै, ठीक छै । उचित होवा कि अनुचित लेकिन आब इएह उचित अछि । नहि तँ - कहि सीमान्त आ तरंग दूनू हँसि पड़ल।

अरे धरा अहाँ तँ किछ बाजिते नय छी । की अहां सीरीयस छी?

हम की बाजी - अहां सभ हमर मजाक उड़ा रहल छी - कनैत स्वर छल धराक - आ हा-हा- कानु नय धरा - अहाँ तँ जनम जनम सं हमर छी, छी ने हमर ? आब कनि हँसि दिय'-

फेर सीमान्त तरंग हँसि पड़ल, दूनूक दृष्टि मिलल - सीमान्त तरंगक मिलैत दृष्टि नीक जँका धराक हृदय मे गड़ि गेल । निमिष मात्र लेल ओ चौंकि गेलीह । .

ओहि दिन धरा किछ अस्वस्थ छलीह । कमजोर सन बिस्तर पर पड़ल । एम्हर किछ दिन सँ सीमान्त आ तरंगक आब भंगिमा किछ विचित्र सन लगैत छल । सोचैत सोचैत कखनो ओ विक्षिप्त जकाँ भ' जायत छलीह, कखनो अपन क्षुद्र बुद्धि पर दया आबि जायत छल । हमहु तं आकाश बाबू सँ एतेक मिलवा लेल आतुर रहैत छी । कहियो सीमान्त तरंग ओकरा टोकलक । फेर ओकर मोन डगमग किएक -

हँ ओ आकाश बाबूक सामीप्य चाहैत छलीह - ओकर बाँहिक सहारा नय । मात्र दोस्ती - सत्य शिव आ सुन्दर सन पावन पवित्र ।

किन्तु सीमान्त तरंग - सदिकाल सीमान्तक दृष्टि जेना कत्तौ किछ खोजैत रहैत छल । कत्तौ भटकल सन । जेना कत्तौ किछ छोड़ि आयल अछ, किछ बिसरि आयल अछि । ओम्हर तरंगक चपलता, चंचलता जेना यौवनक गुलाब ओकर समस्त तन पर खिलि खिलि आयल हो ।

नय नय कहियो संदेह नय करवाक चाही हमरा आकाशक पवित्रता सीमान्त तरंगो मे तं भ्ज्ञ' सकैत अछि । आ धरा के मोन पड़ि आयल - एक दिन ओ आकाश सँ पुछने छलीह - हमर अहांक कोन संबंध अछि पता नय -

कतेक नीक सँ आकाश बाबू बुझेने छलाह - आत्माक संबंध , भावनाक संबंध - एहि संबंधकें कोनो लक्ष्मण रेखा मे कोनो सीमा मे कोना बान्हल जा सकैत अछि ?

कोन संबंध अछि ई -

भाईक संबंध - नय, लेकिन वएह ममत्व-अहाँक सौभाग्यक

मंगलकामना हरदम करैत रहब । अहांक सौभाग्य हमर भाग्य होयत-

पतिक प्यार - कहवाक अधिकार नय किन्तु कोनो अहित संरक्षा करवाक, अहांक चारु दिसि संरक्षणक देवार ठाड़ करवाक इच्छा -

प्रेमीक प्यार - पता नर्य मुदा सतत सामीप्यक उबाल किछ ओहने तँ धरा अहां हंसैत रहु । हमरा अपन साँच दोस्त, सांच हमदर्द बुझु । अहांक अधरक हंसी हमर प्रेमक निशानी होयत । धरा किछ नय बाजि सकलीह । हं ओकर मोनक आकाश निराभ्र भ' गेल छल। मेघ हंटि गेल । मोन मे नागफांस जकाँ जकड़ल सीमान्त तरंगक चिन्ता दूर भ' गेल । ओ जल्दी जल्दी तरंग सं भेंट करवा लेल तैयार होम' लगलीह । केश बान्हि रहल छलीह, अपना आप कें कोसि रहल छलीह - छी हम सीमान्त कें कतेक गलत बुझलौं - तरंग के सेहो । छी - दोस्ती की खाली स्त्री-स्त्री मे होइत अछि ? स्त्री पुरुष मे नय ? किएक नय - धरा आकाश सीमान्ते मे तँ मिलैत अछि । धरा कें जेना खुशी सँ भरल आकाश भेटि गेल छल । आय तरंग सँ ओ खुलल हृदय सँ मिलत - तरंग दीदी - अहां बड़ नीक छी बड़ नीक - ओकर सभ कुंठा सभ परेशानी तिरोहित भ' गेल छल । कतेक अन्तर्मुखी भ' गेल छलीह धरा एहि बीच - नीलाकाश मे उड़ैत चिड़ै चुनमुन जकां ओ असगर पहुंचि गेलीह तरंग ओत । सीमान्त भोरे सँ अपन काज लेल निकलल छल ।

ड्राइंग रूम मे भारी भारी परदा लटकल छल । पहिने ओकरा मोन भेल काल बेल बजाबी फेर धरा सोचलीह तरंग के सरप्राइज देवा लेल । ड्राइंगरूम सँ केकरो आस्ते आस्ते बाजवाक स्वर अवैत छल । आकाश तँ बाहरे गेल छल तखन के अछि भीतर कनि रुकि ओ परदा सँ सटि ठाढ़ भ' गेलीह - फुसफुसी सन स्वर आबि रहल छल - हम अहां बिन नय रहि सकैत छी तरंग - कतेक राति सँ सुतलौं नय -

हमहु सीमान्त भरि भरि गति बेचैत रहैत छी - स्वर सीमान्त आ तरंगक छल - चौंक गेलीह धरा । परदा हंटाय ओ देखलक - सीमान्त तरंग के अपन आलिंगन मे बानहने पागल जकां ओकरा

चुमि रहल छल -

धराक अस्तित्व जेना ईथरक गंध मे अपन चेतना विस्मृत कर' लागल - अपना सँ बेसी अहाँ पर विश्वास अछि । धरा - सीमान्त बाजने छल - धराक लागल ओकर सभ आदर्श, सभ सिद्धान्त नागफांस जकाँ ओकरा जकड़ने जा रहल होय ।

कतेक वेदनामय जिनगी जीवलीह धरा । अपना सामने धरा के ठाड़ देखि कतेक अपराध भाव सँ भरि गेल छल सीमान्त तरंग । धरा एको बेर एहि बातक जिक्र आकाश लग नय केलक । तरंग गाम चलि गेलीह । सीमान्त के जेवाक क्षण आबि गेल छल । कतेक क्षमा मांगैत रहल सीमान्त । हृदय सँ क्षमा मांगि रहल छल - नारी सभ दिन सँ पुरुषक अपराध कें क्षमा करैत रहलीह - नय नय पुरुषक अपराध कें नय वरन् पतिक अपराधके - पतिक समक्ष ओ अस्त्र राखि दैत अछ - हथियार राखि ओ विवश नय वरन् विजेता बनि जायत अछि किन्तु की आकाशक अपराध के ओ क्षमा क' सकल-

॥ अनन्त ॥

माँ-माँ - कदम्बक स्वर सुनिते धरा आँखि खोललीह । राति भरि अतीतक संग रहला सँ ओकर देह हाथ टुटि रहल छल - किन्तु ओकरा मोन छल आय लंदन जेवाक अछि ।

धरा आ न्यूला कदंबक गाड़ी मे रोशी आ अर्ल एन्ड्रूक गाड़ी मे -

इंगलैंडक सभसँ नीक चीज लागल धरा कें मोटर वेज पर पन्द्रह बीस माइलक अन्तर पर बनल सर्विस सेन्टर सभ । कनिक देर सुस्तयवा लेल, फारिग हेवा लेल-चाह नाशा खाना - सभ किछ लेल सभटा सर्विस सेन्टर भारतक फाइव स्टार सँ कम नय । चलैत चलैत आदमी थाकि जायत अछ तं एहिठाम रुकि चाह पानि लय नवीन उर्जाक संग विदा भ' जायत अछ ।

गाड़ी भागि रहल अछि । १०० माइलक स्पीड सँ, सोअर, स्वीफ्ट कतेक नदी कें पार करैत - नार्थम्पटन, डेवेन्ट्री सभ कें पाछा छोड़ैत - सड़कक दूनू दिसि हरिहर मैदान दूर दूर धरि पसरल अछि-

कतौ कतौ गायक झुण्ड घास चरि रहल अछ - सड़कक दूनू कात बबूल जकाँ कोनो वृक्ष लागल अछि जकरा मे पात निकलवाक समय आबि गेल छल -

प्रकृतिक रंगबिरंगी आंचर जेना धरती पर लहराय रहल छल । सौन्दर्य आ लावण्य सँ छलकैत विन्डामायर लेकस्ट्रीट सँ डोभ कौटेज तक । दूर दूर धरि बर्फक चोटी, आ संग चरण चुम्बित पैघ पैघ वृक्ष सभक सघन जंगल, वृक्षक फुनगी पर चहचहाइत पंछी - रम्य सुमधुर वर्डस्वर्थक अस्तित्वकें साकार करैत क्षेत्र - धराक मोन होइत छल बसि जाय एहिठाम - सभ आल जाल सँ मुक्ति पाबिली - जखन हमर जरूरत केकरो नय अछ तखन हमर इ भटकन - किन्तु, एखने औ लंदनक बाट मे छलीह ।

पहाड़ी बंगलक दोग दोग सँ शत शत जल धरि प्रवाहित भ रहल छल लहलहाइत खेत हरित जंगल, मखमली चारागाह सभ देखि अदभुद आनन्दक अनुभूति भ' रहल छल - धरा कें, पग पग पर प्रकृतिक नवरूप, सौन्दर्यक उमड़ैत सागर - जे कारी गाय भारत मे लक्ष्मी मानल जाय अछि ओ गाय एहिठाम भरल अछ - भारतक गाय सभ सीधा सादा निरीह लगैत अछ मुदा, एहिठाम गायक स्वरूप मे एकटा भयंकरताक बोध होय छ कोमलताक नय, कदाचित इंगलैंड मे बीफक बड़ जोर रहैत अछ... तैं प्रतिशोधक ज्वाला मे धधकैत रहैत छली रुद्राणीक रूप ।

दिनक १ बजि कें आठ मिनट भ' रहल छल । भोर वर्षा होयत छल - ठंड सेहो छल किन्तु १० बजेक वाद रौद भ' गेल, रौद मे ताप सेहो छल - किछ गर्मी सन लागि रहल छल धरा कें.... गाड़ीक छतक खिड़की खुलल, खाली नेट लागल छल - खिड़कीक शीशा बंद, ल्यूटनक रास्ता छूटल आ लंदनक रास्ता पर दूनू गाड़ी आगु पाछु दौड़ि रहल छल ।

सूर्यक प्रकाश गाड़ीक विन्ड स्क्रीन पर एना चमकि रहल छल जेना क्रिस्टल चमकि रहल होय - विचित्र रंग अछि ट्रैफिकक, रातिमे जाइत गाड़ीक बैक लाइट एना प्रतीत होयत अछि जेना रक्तकमल सड़क पर कतार मे पसरल होय आ अवैत गाड़ीक

हेडलाइट श्वेत कयलक जलधार सन लगैत अछ । - माँ, जनैत छी। - कदम्ब बाजल एहिठाम मोटर वेजक सिस्टमे अपूर्व अछि - जाइत गाड़ीक तीन खाना बनल अछ - अवैत गाड़ीक तीन खाना बीच मे डायभर्सन । डायभर्सन सँ सटल कतार मे जे सभसँ बेसी स्पीड मे, जेना १०० माइल वला गाड़ीक कतार थीक, बीच वला ७०-८० आ अन्तिम स्पीड ५०-६०क स्पीड थीक । कनिको खिड़कीक शीशा खोलु नय कि हाहि कटैत गाड़ी सभक वेगक स्वर निनादित होयत रहैत अछ । सभ गाड़ी एकटा नियम पर एकटा कानूनक आधार पर चलैत अछि - कोय केकरो ओवरटेक नय क' सकैत अछ - कोय हार्न नय बजा सकैत अछ - व्यवस्थाक कतेक अन्तर अछि अपन देश मे आ विदेश मे - कदंब कहैत छल- माँ, एहिठाम सभ परीक्षा पास केनाय सहज अछि मुदा ड्रायविंगक परीक्षा पास केनाय सहज नय । कतेको आदमी के ड्रायविंग लाइसेंस नय भेटैत अछ जा ओ पूर्ण रूपेण पारंगत नय भ' जाय - अनुशासन एहिठामक सभ सँ पैघ वस्तु थीक ।

अचक्के गाड़ी मुड़ि गेल सर्विस सेन्टर दिसि - गेटवे ऑफ लंदन - वेलकम ब्रेक - बड़का सर्विस सेन्टर छल - चारुकात हरिहर घासक सुन्दर विस्तृत मैदान, सुन्दर सुन्दर चेरी, ग्रेज हाइसेन्सिआ, ट्यूलिप, डैफोडिल्स सभ फूल अपन अपन स्थान पर हवाक संग संग अठखेली क' रहल छल - पीत वर्ण पुष्प सँ लदल बाटलक गाछ पंक्तिबद्ध ठाड़ । बैगनी फूल मेने फारगेट मी नाट नीचा मे विनीत - हँसि रहल छल सभक वेलकम लेल - सूर्य भगवान मेघ सँ हुलकि मारि फेर मेघक आंचर मे नुका जाथि - कार सँ उतरि देह हाथ सोझ करैत धराक मोन भेलन्हि कोना समस्त तनमन मे एहि मनहारिल सुन्दरता कें भरि ली - अंग्रेज सँ ल' क' हिन्दुस्तानी धरि सभ केओ आवि जाय रहल छल - पारदर्शी शीशाक विशाल हाल - लोग सभ जाहि मे खा पीवि रहल छथि - इ लंदनक वेलकम ब्रेक थीक - धराक तन मोन सिहरा देलक - सीमान्त तँ हमरा कहियो एहिठाम आनि सकैत छलाह - ओकर तँ एक पएर विदेशो रहैत छल - हृदय सँ एकटा आह निकलल- कि आं...टी.... न्यूला आ अर्ल दूनू ओकर

नुआ पकड़ि झूलि रहल छल - अर्ल कें कोर मे उठाय चुप कय ओकर मोन हल्लुक भ' जायत छल -

रेशमी एन्ड्रू कदंब सभ गाड़ी बंद कय आबि रहल छल - की दीदी थाकि गेलौं - नय रेशमी - धरा हँसैत बाजल - थाकब तँ हम जानिते नय छी - तखन सर्विस सेन्टर पर जँ उतरैत छी तँ हमर मोन उत्फुल्ल भ' जायत अछि - प्रकृतिक एकान्त कोर मे बसल इ सर्विस सेन्टर सभ मोन प्राण कें शीतल क' दैत अछि रेशमी - धरा नेना जकाँ उत्फुल्ल छलीह -

चलु दीदी भीतर - एन्ड्रू बात मोड़ैत बाजल - चाह कॉफी - ठंडा किछ तं लेवे करब -

इ सर्विस सेन्टर फाइव स्टारो कें मात करैत छल - फर्श सभ एतेक चिक्कन एतेक पारदर्शी जे पिछड़वाक डर होयत छलैक। सभ केओ टायलेट जाय गेलैथ । टायलेटो देखि धरा चकित छलीह - टायलाट जाउ, फ्लश करू बाहर आबि नल सँ पानी - एकटा नल सँ साबुन लिय - फेर एकटा यंत्रक आगु हाथ राखु ओ अपने चल' लगैत छैक - आ गर्म हवा सँ हाथ सुखा दैत छैक - हाथ हँटाय लिय - अपने बंद भ' जायत छैक - धरा के एतवे सोच होयत छल जे इ जनाना टायलेट यदि भारत मे रहितैक तँ एतेक साफ सुथरा एतेक पवित्र रहितैक - जखन कि एहिठाम हजारो व्यक्ति प्रतिदिन अवैत छैक मात्र टायलेट करवा लेल, फारिग हेवा लेल -

प्रत्येक व्यक्ति अपन उत्तरदायित्व बुझैत छैक - इ काज केनाय हमर फर्ज थीक - आ तैं सभ जगह साफ सफाई - आ हम सभ भारतीय अपन कार्य आ विचार कें बड़ छोट बुझैत छलौं किन्तु जाहि दिन सँ हम सभ अपन मूर्खता बुझि गेलौं अंग्रेजक मोने इ विश्वास जागि गेल जे आब एहि देश मे नय रहि सकत छी - ठीक एहिना तँ बड़का लोग शासन करैत छल छोटका लोग शोषित। किन्तु, जाहि दिन इ चेतना आबि गेलैक जे हम सभ छोट लोग नय छी। मानवक बनाओल छोट पैघ थीक - ईधवरक नहि - ताहि दिन सँ इतिहास बदलि गेल - प्रतिफल मुदा, कुछ नय ।

नेता सभ राज पहिनहु करैत छल आइयो करैत छथि । गरीब

पहिनो सँ बेसी गरीब । आ तैं देश में आतंक हिंसा, चोरी-व्यभाचारक नग्न नृत्य होम' लागल । एक दोसराक इज्जत आदर केनाए तक लोग बिसरि गेल ।

एखनो भारत मे केओ अंग्रेज चलि जायत अछि तं नेता सभ ओकर आगत स्वागत मे कोनो कसर नय छोड़ैत छैक । फुलपैंट सूट पहिरि अपना मे उच्चताक भाव अनैत छथि जाहि सँ अंग्रेज हुनका मूर्ख चपाट देहाती बुझैय । अंग्रेजी बाजनाय - शान बुझैत छथि ।

दीदी - सभ टेबुल पर बैसल छथि - रेशमी धरा कें मोड़लीह- फेर चीकेन नगेट पेस्ट्री - मभक संग मोट मोट आलूक भुजिया काटल चीप्स जकाँ छानल - पानिक बदला कोल्ड ड्रिंक्स....

आब सभ सँ पहिने कत' चली - इएह गप होम' लागल...

हमर तँ विचार अछि जे माँ के हम स्वामी नारायणयक मन्दिर लय चली - कदंब बाजल - धरा खुश भ' गेलीह - मंदिरक बड़ नाम सुनने छलीह - लंदनक पहिल दिन स्वामीनारायणक दर्शन !

स्वामीनारायणक मंदिर यूरोपक पहिलुक परंपरागत हिन्दू मंदिर थीक । प्राचीन कालक शिल्प शास्त्रक अनुसार एकर निर्माण भेल अछ । एतेक पैघ आ भव्य मंदिर मे कत्तौ स्टीलक प्रयोग नहि कयल गेल छैक । २,८२० टन बल्गारियन लाइम स्टोन आ २००० टन इटालियन करारा संगमरमर भारत सँ भेजल गेल । भारत मे बारह स्थान पर १५०० सँ बेसी शिल्पकार सभ मंदिरक प्राचीरक निर्माण मे लागल छलाह । आ २६३०० पीस मंदिर निर्माण लेल वास्तुकला सभक महीन कारीगरी कय भेटलक तखन एतेक टाक विशाल मंदिरक अविर्भाव भेल । ओना मंदिर कें कहियो टूरिस्टक आकर्षण केन्द्र नय बनाओल गेल मुदा, मंदिरक विशालता आ भव्यता सभक मोन घींचि लैत अछि... मंदिरक चारुकात सुन्दर मनोरम उपवन, फव्वारा - कृत्रिम कमल दल-लोग कें मंत्रमुग्ध कय दैत छल - कदंब धाराप्रवाह माय के बुझ रहल छल - पढ़ल लिखल - प्रोफेसर माय के - धरा मुस्का रही छलीह -

दीदी, इंडिया मे की ताजमहल एहने अछि - एन्ड्रू पुछलक -

ताजमहल - धरा किंचित हँसैत बजलीह - हँ - एहने अछि -

वस्तुकलाक अद्भुद मीनाकारी ताजमहल अछि -

किन्तु, ओ मकबरा अछि आ इ मंदिर - बीचे मे कदंब बाजल।

कदंब - ताजमहल कें मात्र मकबरा नय कहियौक - धरा बजलीह - ओ प्रेमक प्रतीक थीक - आत्माक चैन थीक - ओकर कण-कण मे प्रेम प्यार मुहब्बतक अद्भुद कथा गाथा सजल अछि -

माँ जे ताजमहल नय बना सकैत अछि ओकरा की प्रेम नय रहैत छैक -

जरूर रहैत छैक, किन्तु शाहजहाँ कें सामर्थ्य छल तँ ओ बनौलक आ आय इ अपन अद्भुद आ विलक्षण कारीगरीक कारण दुनियाक सातम आश्चर्य बनि गेल - अहाँ एकटा बात कहियो गौर केने छी कदंब -धरा किंचित मुस्काइत बजलीह । अपन देश मे हरेक पति अपन पत्नीएक नाम पर किएक मकान बनवैत अछि, जमीन लैत अछि -

हँ इ तँ साँचे - कदंब बाजल - हमर एकटा - दोस्तो स्कूल मे हमरा कहैत छल जे सभक पिताजी किएक माताजीक नाम पर घर बनवैत छथि -

हँ से देखु कदंब - ब्याहकाल अग्निक समक्ष पति पत्नीक सुख दुख मे साथ देवाक शपथ लैत छथि इएह पत्नीक प्रति प्यार थीक, पत्नी कें सभ तरहक सुरक्षा देवाक आकांक्षा, पत्नीक सर्वतोमुखी मंगलकामनाक आश की इ प्यार नय थीक, की प्रेमक निशानी नय थीक -

कदंब - रेशमी हँसैत बजलीह - अहाँ हारि गेलौं - दीदी सँ कहियो नय जीतब, प्रोफेसर छथि।

रेशमी, एहि मे प्रोफेसर हेवाक कोनो बात नय अछि - इ हृदयक चीज थीक जकरा मात्र अनुभूत कयल जा सकैत अछि....

माँ से तँ सत्य ! संतान सभ दिन माता पिता सँ हारले रहै छैक रेशमी -

कदंब अपन जूता खोलि राखवा लेल चलि गेल एन्ड्रूक संगे आ धरा रेशमी महिला दिसि जूता राखवा लेल गेल, जहिया सँ धरा इंगलैंड आयल छलीह आय पहिन बेर देखलीह जे एतेक भारतीय

लोग एहि मंदिर मे एके ठाम जमा अछि ।

मंदिरक मुख्य हाल मे ९ टा स्तम्भ छल । प्रत्येक स्तम्भ पर महीन कशीदाकारी सँ भगवान विष्णु, भगवान शिव, भगवान सूर्य हिनक अवतार, राम कृष्ण आदिक चित्रमय गाथा अंकित । मूर्ति दर्शनक कपाट बंद छल - धरा ओहि असीम शान्तिक मध्य अपन अशान्त मोन के नेने एकटा स्तम्भ सँ लागि चुपचाप बैसि रहलीह - अपन आत्ममंथना कें बिसरि नय सकलीह - आखिर हम कहिया धरि डारि सँ टूटल पात सदृश उड़ैत रहब भगवान ! अशरण कें शरण दिय' आब नय सहल जायत अछि ईश्वर आब नय.... धराक आँखि भरि आयल। - हृदय मे गीतक पाती उमड़' लागल - कओन उपाय करब हम आली, कृष्ण भयो कुबजा बस जायी ।

सीमान्त केकर हाथ मे पड़ि गेल, कोन स्थिति मे होयत, कहीं धन संपत्ति गंवाय कत्तौ बेगार जकाँ नय होथि - कत्तौ पी पाय कें औघड़ायल नय होथि- एहिसभ आशंका सँ धरा कें आँखि नोरा गेल - आय एहि स्थितिक जिम्मेदार की धरा नय थीक ? कहियो जीवनक प्रति ओ सतर्क नय रहलीह - ताशक घर जकाँ ओकर घर भरभराय कें खसि पड़त, - धराक नोकरी केनाय उहो सीमान्त सँ दूर- इ सभ सँ गलत निर्णय छल - पति पत्नीकें कहियो अलग नय रहवाक चाही - धरा तँ पहिने तैयारो नय होयत छलीह - सीमान्ते ओकरा तैयार केलक - किन्तु, धराक इ अयथार्थ काल्पनिक संसार - अपन बनाओल आदर्श - संसारक सभसँ नीक हृदयवान विचारवान महिला बनवाक महात्वाकांक्षा - वसुधैव कुटुम्बकम के मातृत्व छाती मे नेने भावनाक धरातल पर जे जीवन ओ जीवलीह - सभटा ओकरा सर्प जकाँ लपेटि लपेटि डंक मारि रहल छल । कत्तौ पढ़ने छलीह - 'पिता को दिया गया वह श्राप, नहुष के ये पुत्र कभी खुश नहीं रहेंगे' - आय धरा कें लागि रहल छैक जे हमरो पिता कें केओ श्राप देने होयत । अहाँक इ बेटी कहियो सुखी नय रहतीह ।

एक एक टा बात ओकर करेज मे तीर सन लागि रहल छैक अन्तहीन स्मृति श्रृंखला ! की पओलीह जीवन मे - नहि तँ पति कें समेटि सकलीह नहि तँ पुत्री कें बसाय सकलीह -

एकटा अकिंचनक फाटल आँचर में कदंब सन मोती दय ईश्वर कनिक तँ चैन ओकरा द' देलक तँ ।

किन्तु, की समयक गति कें केओ आय धरि बुझि सकल ? आगत कतेक मद्धिम गति सँ अवैत अछि - आ इन्सान जावत धरि चेतत ता तँ ओ नागफाँस मे अपना के जकड़ल पवैत अछि - आबद्ध देखैत अछि - बाजर निकलवाक बाट नय ? आ स्यात आकाश बाजू सँ दि लवाक ओ अन्तिम घटना छल ? ओ दृश्य आय धरि कोमल पसूण कल्पना जीवी धरा कें जेना तोडि जायत अछ - की बुझैत छलीह आकाश बाबू कें । एकटा देवता साकार महानता - मुदा ओ तँ एकटा साधारण मनुष्य निकललैथ जे यत्र तत्र सर्वत्र मेटि जायत अछि । तकर बादे तँ धरा कें मानव मात्र सँ विश्वास उठि गेल-

धरा के आँखिक आगू सीनेमाक रील जकाँ सभटा दृश्य नाच' लागल.... एक दिन धरा टहलैत घुमैत आकाश बादू ओत' पहुँचि गेल छल । ओकरा देखतहि खुश भ' गेल - बैसु धरा, हम चाह नेने अवैत छी - धरा असगर कोठरी मे एम्हर ओम्हर तकैत रहलीह कि एकटा नीला जिल्द वाला डायरी पर धराक दृष्टि गेल । ओ डायरीक पन्ना उन्टाब लगलीह कि एकटा पन्ना 'एखन बसन्तक सिहराइत, थरथराइत कँपइत राति अर्द्ध आयु पार कऽ चुकल अछि आ हम छी कि अहाँ कें लिखने चलल जा रहल छी । कंपइत सिहरइत रोमांचित होइत ? हम स्वयं नय बुझैत छलौं धरा कि जिनगी कहियो ओहि मोड़ पर हमरा पटकत जाहि ठाम लालसाक शिखा सागरक ज्वार जकाँ आकाशक स्पर्श करत मुदा सिद्धिक कूल पर नय पहुँचत ? अचक्के, अनजनइत अनायास कहियो हमरर मोन अहाँ सँ जुटि गेल। ओह, केहेन छल ओ दारुण - सकरुण बेला जखन हम प्रथम बेर अहाँ कें देखनो छलौं आ देखतहि रहि गेलौं । एकटा अबोध बालक जकाँ खिंचाइत गेलौं ओहि दिसि जेम्हर कोनो प्रकाश छल, केनो अरुणिमा कोनो आकर्षण, सम्मोहन छल मुदा कोनो मंजिल नय छल। अनुभूत करु हमर ओहि करुणावस्था कें जाहि ठाम अर्थ हजार हजारा अंगेठी लऽ रहल होय मुदा शब्द आहत विहँगम जकाँ छटपटना कें मूक भऽ जाय ।

बाजवा लेल समस्त पृथ्वीक गप्प होइ, साँसे आकाशक विस्तार होय, सागरक गहीर व्यथा होय मुदा बाजल किछ नय जाय । एहि अन्तर्द्वन्द्व मे किछ पंक्तिक आदान प्रदान क जिनगी जीवैत रहलौं अपन हृदय स्थलक केन्द्र मे अहाँक स्थापित केने, कुंभकारक चाक मे लागल कील जकाँ अहाँ के अपन केन्द्र मे समाविष्ट केने ओकर चारु दिसि चक्कर कटैत मात्र भावनाक धरातल पर, रागात्मकताक बिन्दु पर स्वयं कें स्थित केने । आ धरा, नियति हमरा पुनः अहाँक समक्ष आनि देलक जेना दूर सँ अवैत-वंशीक स्वर पर कोनो मृग खिंचाइत आवैत होय ? अहाँक नील सागर सन पैघ पैघ आँखि मे उगल प्रण्य पत्रिका पढ़ैत रहलौं । अहाँक अमलतासी अधरक गुदगुदाइत गंध-धार मे डुबैत उतराइत रहलौं की अहाँ कहियो बुझि सकलौं ? जनइत अनजानइत अहाँक रेशमी आंगुरक विझुत स्पर्श सँ हजार हजार बिच्छुक ताप तप्त पीड़ा झेलइत रहलौं । अहाँक मोरपँखी साहचर्य एवं इन्द्रधनुषी संपर्क मे अपन प्राणक आवेग कोना सम्हारैत रहलौं ई की अहाँ कें बुझल अछ । अहाँक अपन बाँहि मे समेटि लेवाक सोन जूही आकांक्षा कोनो साँस साँस मे मुरझाइत रहल ई की अहाँ कें बुझल अछ ? एक दिन अहाँ हमर तरहत्थी मे अपन स्थान खोजैत छलौं हम कहने रही । 'अहाँ केन्द्र मे छी' मुदा, हम कतऽ छी - अहाँक हथेलीक कोन कोन मे ? अहांक आँखिक कोन कोर मे इ हम नय जनैत छी । स्यात् हम कत्तौ नय छी - स्यात कत्तौ छी अवस्य - हम भ्रम मे छी, छलना मे छी, ब्यामोह मे छी याकि हम एकटा निष्ठा मे छी, एकटा अनुराग एकटा स्नेह हम कतऽ छी - हम कतऽ छी ....

धराक कँपइत आंगुर मे आकाश बाबूक अयरीक पन्ना फड़फड़ा रहल छल - जेना आकाशक सांस सांसक एक एक रेख आकार पाबि रहल होय - डायरीक एक एक आखर - ओकरा सर्प जकाँ दंश मारि रहल छल । ओ छिलमिला गेलीह -

की इ आकाश बाबूक अन्तरक सोच केर प्रतिकृति थीक । हुनक हृदय मे हमरा लेल लालसाक एतेक ज्वार नुकायल रहैछ ? की सरिपों आकाश बाबूक अन्तर बाहर मे एतेक भिन्नता अछि ?

धराक अंग-प्रत्यंग मे आकाश बाबूक निर्मल दृष्टि बीखाह कीड़ा जकाँ रेंग लागल । क्षण मे क्षणाक भ' गेल । कतेक पूज्य छलाह हमर दृष्टि मे ओ । हुनक हृदयक निश्छलता मे देवताक बुझैत रही - किन्तु ओहि ठाम देवता नय दानवक भयंकर भूख छल- की इ अंसल छवि थीक आकाश बाबूक - जेना धरा छटपटा रहल छलीह -अपना आप पर दमसाइत रहलीह - कतेको दिन, कतेको राति - आकाश नामो सँ जेना वितृष्णा होय' लगलैक धरा कैं । अपन भावनाक समस्त संसार ओकरा नागफाँस प्रतीत होय लागल । ओहि दिन सँ जे आकाश बाबू सँ ओकर हृदय टूटल तँ फेर नय जुटि सकल । धराक उपेक्षा, अवहेलना देखि आकाश बाबू स्वंय अपना कैं धरा सँ अलग कय लेलैथ । फेर धरा आकाश एक दोसरा सँ आय धरि नहि मिलल... ।

- दुआर कतेक देर मे खुजत ? - अर्थहीन नोरक टघार कैं गाल पर सँ पोछैत धरा तकलीह, केओ पुछि रहल छलीह -

हमरा नय बुझल छैक -

चारि बजे खुलत - बस ५ मिनट आर बाँचल छैक - कदंब ओकरा उत्तर देलक - आब आर पाँच मिनट छैक -

हल्लुक बादामी रंगक सूती नुआक सोझ आँचर, ऊँच सन खोपा कान मे मोती, गला मे मोती एक एकटा कंगन सन चूड़ी - ओ गुजराती महिलाक आकर्षक मुस्कान कतेको अपरिचित कैं परिचयक सीमा मे घेर लैत छल -

नमस्ते बहिन जी - धरा दिसि उन्मुख भेलीह -

नमस्ते - धरा तावत संयत भ' गेल छलीह - अहाँ एहिठाम रहैत छी की -?

हँऽ हम तँ बैसिलडन सँ आयल छी -

कतेक दिन सँ छी एहिठाम ?

आब तँ करीब दस बरीस भ' गेल -

आ अहाँ-

हम ? धरा बजलीह - हम तँ भारत सँ आयल छी घुमवा लेल। हमर बेटा एहिठाम इंजीनियर अछि -

भारत सँ ? ओहि महिलाक चेहरा पर एकटा दर्द भरल मुस्की आयल - हमरा भारत गेनाय करीब छह सात बरीस भ' गेल -

अहाँ गुजरात सँ आयल छी की ?

हँऽ हँऽ गुजरात सँ - अहाँ कोना बुझलौं -

नहि बुझलौं, आदमीक संग ओकर व्यक्तित्व चलैत छैक जे ओकर पहिचान बनि जायत छैक - अहाँ भारतक कोन हिस्सा सँ आयल छी इ पुछवाक प्रयोजने नहि -

तँ अहाँ प्रोफेसर छी की - परिहास सँ ओ महिला बजलीह -

धरा हँसैत बजलीह - हँ प्रोफेसर छी - अहाँ कोना बुझलौं - आ फेर अपन प्रश्न पर अपने धरा हँस' लगलीह आ ओ महिला सेहो ठहाका संग साथ देलीह -

हमर बड़का इन्डस्ट्री अछि लंदन मे । अपन घर बैसिलडन मे खरीदने छी- हम प्रिया छी - बीचे मे बात छोड़ैत अपन नाम बजलीह-

हम धरा छी - इ हमर बेटा कदंब - बैसिलडन मे किएक ?

लंदन सभ रहै वला जगह नय ने थीक । हल्ला-गुल्ला चिल्लपों एहि सभक मध्य के रहैत अछि ? सभ केओ काज करैत अछि लंदन मे आ रहैत अछि लंदनक चारु दिसि बनल काउन्टी मे यानी देहात सन स्थान मे - तावत मुख्य कपाट दर्शन लेल खुलि गेल । सभ केओ उठि ठाड़ भ' गेल । लाइन मे लागि सभ दर्शन क' रहल छल।

मुख्य मंदिर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामी नारायणक छल जिनका सभ विष्णुक अवतार बुझैथ छथि, गुणातातानंद, मूलअक्षब्रह्म, गोपालानंद स्वामी, महामुक्त, घनश्याम महास्वामी आदिक भव्य एवं विशाल प्रतिमा सभ छल । दूनू कात सँ गौरीशंकर राधाकृष्ण, मोछवला हनुमानजी आदिक प्रतिमा छल ।

हिन्दुस्तानी मर्द आ महिलाक भीड़ उमगल छल । किछ अंग्रेज महिला सेहो छलीह - एन्डू बाजल - दीदी - नेस्प्लेन लंदन मे बनल इ मंदिर मे हमरा सभ कैं बड़ चैन भेटैत अछि । एहिठामक शीतलता- शांति अपूर्व अछि - हँऽ एन्डू एहने दिल्ली मे लोटस टेम्पुल अछि । जाहि ठाम कोनो प्रतिमा नय छैक, कमल सदृश मंदिर

मे खाली कुरसी लागल छैक - लोक अवैत अछि -दस-पन्द्रह मिनट चिन्तनमुद्रा मे बैसेत अछि चुपचाप - आ चलि जायत छैथ -

दर्शन भ' गेल की - प्रिया आबि पुछलीह - इ हमर पति छथि हरीश खेमानी जी - आ इएह धरा जिनक चर्चा एखन हम केने छलौं-

ओ अच्छा अच्छा - पत्नी जकाँ पतिक चेहरा पर सेहो परिचयक मुस्कान छल -

- इ हमर वियन मे भेटल भाय छथि । एन्डू आ हिनक पत्नी रेशमी - इ हमर बेटा कदंब - परिचय भेल - आदान प्रदान मे एकटा अपनत्वक धारि सभकें डुबा देलक -

अहाँ एहिठाम की करैत छी - एन्डू पुछलक - हमर एक्सपोर्ट इम्पोर्टक बिजनेस अछि - हरीश बाजल ।

एक्सपोर्ट इम्पोर्ट कथीक -

मोटरक कल पुर्जा - आदिक -

धरा चौंकि गेलीह - कदंब सेहो चौंकल मुदा चुप रहि गेल -

ओह तखन तँ अहाँ इंडिया सेहो जायत होयब - एन्डूक गप सभ केओ सुनैत रहल -

हँऽ किएक नय - जखन काज पड़ैत अछि

-हरीश बिहुँसैत बाजल - जेना अपन देशक शब्दे सँ ओकर हृदय आन्दोलित होम' लागल -

जे इंडिया सँ बिजनेस करैक लेल एहिठाम अवैत अछि सभकें अहाँ सभ चीन्हैत छी -

नय हम सभ तँ नहि चीन्हैत छी मुदा साउथ हाल मे हमर सभक एशोसिएनक ऑफिस अछि ओहि ठाम प्रायः सभक नाम पता दर्ज रहैत छैक -

यानी जहिना इंडियन एम्बेसी मे रहैत छैक -

हँ एक तरह सँ इंडियन एम्बेसीए बुझु - हँसैत हरीश बाजल -

अहाँ सभ दर्शन करैत जाउ बाहर निकलैत चलु - एकटा स्वरक आदेश सभकें हँटाय देलक -

दर्शन समाप्त भ' गेल छल । सभकेओ नीचा गेलैथ -

धरा अर्ल कें पकड़ने छलीह - न्यूला ओकर आँचर पकड़ने पाछा पाछा अवैत छलीह । एन्डू हरीश सँ गप कय रहल छल । रेशमी प्रिया सँ - कदंब मौन मूक - सभ अपन अपन विचार मे डूबल अपन अपन गप मे मग्न -

अचक्के एन्डू बाजल - किएक ने अपना सभ साउथहाल चली दीदी मंदिरक दर्शन तँ भ' गेल आब इंडियन खेनाय दीदी कें खुआबी-

हँऽ हँऽ - प्रिया उछलैत बजलीह - हँ सभ कोय आय इंडियन रेस्तराँक खाना खाय -

साउथ हॉल लंदनक ओ हिस्सा थीक जाहिठाम खाली भारतीय की हिन्दु, की मुसलमान हुनके बोल बाला अछि - साउथ हाल दिल्लीक कमलानगर मार्केट या कि करोलबाग, पटनाक सब्जीबाग आ कि न्यू मार्केट हथुआ मार्केट - एकदम फुटपाथ पर सभ चीज पसरल अछि खाली पंजाबी गुजराती मुसलमान । की सोचैत छी दीदी- एहिठाम दूकान ९ बजे से ५ बजे सांझ धरि खुला रहैत अछि। अपना सभ जकाँ खटैत खटैत मरैत नय रहैत अछि । कतेक अंग्रेज अछि जकरा बैंक मे पचासो पॉन्ड नय रहैत छैक किन्तु जिनगीक उछाह ओकरा कम नय रहैत छैक । किएक तँ सरकार ओकरा पाय दैत अछि भरण पोषण लेल - एहिठाम अठारहे बरिसक आयुमे सभ कमब' लगैत अछि - पचास साठ बरिससँ उपरवला भरपूर जिनगी जीवैत अछि । कारण जे बीमार पड़तै सरकार पाय देतैक, तँ बैंक मे जमा कय की करत -

सएह तँ, हमरा बड़ विस्मय होयत अछि प्रिया जखन कि एहिठाम प्रत्येक व्यक्ति के शॉपिंग सेन्टर जेवाक हिस्सक देखैत छी - एतेक खरीदारी कोना आ किएक करैत छैक नय जानि - एकटा आदत - एकटा हिस्सक इएहने ?

शॉपिंगक हिनक आदत छैक - हिनक हॉबी छैक - जे बेरोजगार छैथ ओकरो सरकार सँ मुआवजा भेटैत छैक - एहिठाम जे इंडियन अवैत छैक ओकरा दुइ हजार पॉन्ड बिजनेस लेल लोन देल जाइत छैक आ पाइ लय के कतेक आदमी भागियो जायत छैक-

धरा के मोन फेर उदास भ' गेल बिजनेस शब्द सुनतहि - प्रत्येक दिसि ओ दृष्टि गड़ाय गड़ाय देखैत छलीह - कोनो रूप मे कत्तौ सीमान्तक पता चलि जाय । मधुबनी पेंटिंगक संग संग मिथिलाक सीकीक मौनी पौनी कनिया पुतरा सभ चीजक बिजनेस ओ लंदन मे केने छल - आ ओहिठाम सँ मोटर मशीन सभक कलपुर्जा..... अवसरवादी छल नीक जकां बुझैत छल सीमान्त - मधुबनी पेंटिंगक बसात जखन देश सँ विदेश धरि पसर' लागल तखन ओ लंदन मे अपन पएर पसारलक - आ ओहिठाम सँ अमेरीका जापान धरि कतेको देश मे व्यपाक रूप सँ व्यापार आरंभ केलक - व्यापारक नशा ओकर लागि गेलैक ।

एन्ड्रू कदंब आ हरीश बाहरे मे गप करैत छल । किन्तु धरा रेशमी प्रिया तीनो होटल मे मेनू पढ़ि रहल छलीह - चना भटूरे आ लस्सी - इ सभ बाहर मे की क' रहल छथि - प्रिया पुछलीह -

लगैत छैक जे हम सभ आर्डर देब, तखन खाना आओत एहि जंजाल सँ दूर ओ लोकनि खुजल हवा मे साँस लय रहल छथि - रेशमी हँसैत बजलीह -

आ एम्हर एन्ड्रू मौका छोड़वा लेल नय चाहैत छल - हरीश भाई हमरा सभकेँ एक व्यक्तिक खोज अछि जे आय तीन बरीस सँ निपत्ता छथि -

के थीकाह ओ -

एन्ड्रू चुप भ' रहल मुदा कदंब तुरंते बाजल हमर पिताजी श्री सीमान्त 'सजल' -

की अहाँक पिता जी - हरीश विस्मित भ' गेल आँखिक आगु धराक उदास शांत सौम्य चेहरा नाच' लागल - हँ - हमर पिता जी - भारत मे हुनक बड़का बिजनेस छल । सदिखन ओ व्यापारक नशा मे डूबल रहैत छलाह । पाछा हमर इलाका मे मधुबनी पेंटिंगक बड़ जोरक मांग भेल । पिताजी एक्सपोर्ट इम्पोर्टक लायसेंस लय ओम्हर सँ मिथिलाक चित्रकला आदि आ एम्हर स मशीन तशीन कथी कथीक पाचास टा बिजनेस हुनका -

कदंब उदास भ' गेल।

कदंब इंगलैंड बड़का जगह छैक, किन्तु ओ बिजनेस करैत छलाह तँ हमर सभक एशोसिएशन सँ पता लागि जायत, यदि नय संपर्क राखने होथि तँ कोहुना कोहुना हुनक पता लगाइए लेब - भरोस राखु - हरीश बाजल -

मुदा - कहिया धरि -

आय तँ पाँच बजि गेल । कार्यालय बंद भ' गेल होयत । अहाँक पास हुनकर कोनो फोटो अछि तँ दिय' । हम पता लगा लेब- अहाँ सभ कत' ठहरल छी -

हम सभ तँ लिस्टर सँ आयल छी । डेढ़ दुइ घंटाक रास्ता अछ। वापस जायब -

एकटा बात करु ने -

की -

आय चलु बैसिलडन - हमरे ओत' रहनाइ करु - हमहुँ सभ धन्य भ' जायब -ओहि ठाम अपना सभ अपना सभ किछ विचार तिचार कय आगुक प्रोग्राम बनायब । - हरीशक सलाह आ आमंत्रण -छल ।

साउथ हालक भीड़ देखि धरा चकित छलीह । लागल जेना ठीके दिल्लीक करोलबाग आ कि पटनाक न्यू मार्केट मे होय ।

सभ विभिन्न भाषा भाषी छथि मुदा सभक हृदय मे प्रेम आ सहयोगक भाव भरल छल । महाभारतकार बजने छथि - मनुष्य सँ श्रेष्ठ संसार मे किछ नय । चंडी दासो तँ कहलैथ - सबहि उपर मानुष ताहि उपर नाहि - एकर ज्वलंत उदाहरण विदेशक एहि धरती पर लागि रहल छल -

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई.... आपस मे सभ भाई भाई -

की सोचैत छी दीदी - ? प्रियाक प्रश्न पर धरा ओहिना चिन्तन मुद्रा मे बजलीह -

सोचैत छी एहिठाम हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई एतेक प्रेम सँ रहि रहल अछि - अपना देश मे किएक नय एतेक मेल मिलाप सँ रहि पवैत अछि -

छोड़ू ई सभ चिन्तन मनन दीदी - इ सभ किछ नय थीक

वोटक राजनीति थीक । एहिठाम हिनक वोट लेल कोनो राजनेता ललायित नय छथि - आ अपना ओत' तँ.....

प्रियाक बात पर धराकें हँसी तँ आबिए गेल संगे एकटा कटु मत्य उजागर भ' गेल ।

सरिपों, अपना ओत' खाली स्वार्थसिद्धि लेल जीवैत मानवक की भविष्य होयत ? मानव नपुंसक जकाँ टीवी सीनेमा मे नग्नताक नृत्य देखि रहल अछि, निर्जीव जीवि रहल अछि । प्राणितत्वक लेश नहि बाचल । आय मानवक स्थिति ओहि तीर्थयात्री सन अछि तकरा सभ राजनीतिक दल पंडा पुरोहित जकाँ स्वर्णक प्रलोभन सँ अपना अपना दिसि घींचि रहल अछि । मानव अपन कोनो अस्तित्व नय रहल। ओ इएह स्वतंत्र देशक मानवक स्वरूप थीक ? की सरिपों हम सभ स्वतंत्र छी ? परम स्वतंत्र सिर पर की ओ नाहि - माता पिता अग्रज अनुज पति-पत्नी, सीगी संबंधक नाप जोख भ' रहल अछि। तुला पर जीवित बेंग के नापवा सन । केकरो लेहाज नय, आदर नय-प्रेम नय - गाँधी, राजेन्द्र, नेहरु पटेल, सुभाष आदिक देश कें आजुक नेतागण घुन लगाय कमजोर क' देलक । कत' ओ व्यक्तित्व जेकर फोटो लगाय लोग अपन नेना लुटका के कहैत छल एहि महापुरुषक जीवनक अनुसरन करु - महान् बनु - धराक हृदय संवेदनाक उच्छवास निकलि गेल - समय कोना बदलैत अछि -

रेशमी जकाँ प्रिया सेहो धरा कें स्नेहवश दीदी कह' लगलीह- जखन कि दूनू करीब करीब एके वयस्कक हेतीह - हम अहाँके दीदी कहलौं - अहाँ फील तँ नय केलौं -

प्रियाक एहि सरल प्रश्न पर धरा मुस्काय देलीह - हम विश्लेषित क' दी अहाँक संबोधन कें-अहाँक हृदय कें ? धराक बात सुनतहि प्रिया आ रेशमी दूनू अकचका गेलीह -

हँऽ हँऽ एकदम - हमरा नीक लागत अहाँक विश्लेषण - हमर हृदयक - प्रिया भावुक भ' गेलीह।

प्रिया, अहाँ हमरा धरा सेहो कहि सकैत छलौं - किन्तु अहाँ हमरा दीदी कहलौं - यानी एकटा स्नेह संबंध मे हमरा बाँधि देलौं । एहि देश मे अनेको नाम उच्चलणले अछि - प्रियगर, रुचिगर - आ

हेलो हाय गुड मार्निंग, वेदर इज फाइन तक अपरिचित सँ अपरिचित अंग्रेज सभकें मोहक मुस्कानक संग कहैत अछि । किन्तु संबंध नय अछि - धरा प्रिया के देखैत बजलीह - आ एहिठाम अहाँक हृदय संबंधक भूखल अछि - भावक, स्नेहक अपेक्षा अछि - आ तें हम अहाँक दीदी भेलौं - बहिन बनाय अहाँ हमरा अपनत्वक घेर मे लय लेलौं - ठीक बजैत छी ने प्रिया ?

आ प्रियाक गाल पर अनगिन अश्रु-टघार पसरल छल - भाव-विभोर भ' धराक छाती मँ लागि गेलीह । बिसरि गेल जे ओ भीड़ भाड़ सँ भरल रेस्तरां मे बैसल अछि - धरा प्रिया रेशमी - तीनों स्त्री अपन अपन भाव अनुभावक संगे एक दोसरा पर स्नेहक रंग, अनुरागक आखर छिरियावैत रहलीह-

बैसिलडनक प्रोग्राम सुनतहि सभ खुश भ' गेल ।

लंदन सँ करीब डेढ़ घंटाका रास्ता बैसिलडनक छल ।

राति भरि हरीश एन्ड्रू विचार करैत रहल , इस्टरक छुट्टी थीक । कार्यालय सोम धरि बंद रहत। काल्हि रवि थीक -

बहुत तरह सँ प्लान बनैत रहल बिगड़ैत रहल, खेनाय तँ सभ साउथ हाल सँ खायक' आयल छलाह - कॉफी आ मठरी प्रिया अनलीह -

प्रिया - कॉफी देखि मोन खुश भ' गेल -एन्ड्रू बाजल - मुदा, अहाँ कोना बुझलौं जे ब्लैक कॉफी हमर पसिन्न थीक -

की एतेक दिन सँ इंगलैंड मे एतबो नय बुझब - प्रिया हँसऽ लगलीह-

आब काल्हि कोना कत' घुमवाक कार्यक्रम छैक से एखने बाजि दिय' -

काल्हि - हरीश हँसैत बाजल - पहिने तँ अहाँ भोरे भोर गुजराती जलखै कराउ हमरा सभकें ढोकला आ गुझिया तकर बाद घुम' निकलबे - जेम्हर गाड़ी जाय - खुशी सँ मगन प्रिया धरा आ रेशमी लग चलि गेलीह -

कदंब - हमर एकटा दोस्त छथि - हरीश कनि गंभीर होयत बाजल - साँच बाजी तँ हरफनमौला सन - ओ प्रत्येक स्तरपर जीवैत

अछि - प्रत्येक स्टैंडर्ड मे ओकर गणना अछि -

स्टैंडर्ड मीन्स - एन्डू सिगरेटक धुंइया मे किछ सोचैत बाजल-

स्टैंडर्डक अर्थ पे ओ पियक्कड़, घुमक्कड़, सभ्य समाज, पब रेस्तराँ सँ ल' क' इंगलैंडक प्रत्येक सम्मानित परिवार मे ओकर आदर अछि -

की एहनो व्यक्ति होयत छैक - कदंब किछ सोचैत बाजल -

हँ कदंब एहने व्यक्ति छैक पीटर - ओ हिन्दी अंग्रेजी जर्मन रूसी चेक कतेको भाषा जनैत अछि आ सभ तरहक आदमी ओकर दोस्त अछि - कतेक बाजि रहल अछि एखन -

रातिक बारह बजि रहल अछ - एन्डू बाजल - बारह - एखन तँ ओ घरे मे होयत मुदा पीवि धुत्त होयत - भोरे गप करब फोन सँ तखन ओ एक दम फ्रेश रहत -

आ तीनो काल्हुक योजना बनवैत बनवैत लीवींगे रूम मे सुति रहलैथ ।

उपर बेडरूम मे प्रिया धरा आ रेशमी तीनूक आँखि मे नीन नय छल । तीन महिला आ तीनोक अन्तर सहजता सरलता ओ निश्छलताक एके धरातल पर ठाड़ होय तँ विश्वक कोनो लेखनी मे इ क्षमता नय अछि जे ओकर हृदयक साँच प्रतिकृतिक अभिव्यक्ति क' सकय ।

प्रिया, - धरा किछ सोचैत बजलीह - अहाँ छह बरीस सँ अपन देस नय गेल छी -

हुँह - अनमन सन प्रिया बजलीह ।

अहाँक पैसाक कोनो कमी नय अछि । एहिठाम सभ इंडियन बरीस दूइ बरीस मे एक बेर देस जरूर जायत अछि । अहाँक मोन नय करैत अछि की ?

मोन - प्रिया करोट लैत तकिया मे आधा मुड़ी घुसवैत बजलीह - धरा की सभक मोनक सभबात पूरा भ' जायत छैक -

अहाँक कोन चीजक कमी अछि - हरीश भाइ सन सज्जन आ करोड़पति पति -

दीदी - करोड़पति छथि कि पति - रेशमी बात कटैत एकटा निश्छल हँसीक संग बजलीह -

दुर बताहि - पति तँ सर्वोत्तम छथि, मुदा पैसाक कमी तँ नय छन्हि - करोड़ो मे खेलाइत छथि-

साँचे धरा हरीश हमर पति नय हमर दोस्तो छथि । हमर हृदय के ओ जतेक नीक जकाँ बुझि सकलैथ - ओतेक हमर माता पिता धरि नय पहिचान सकलैथ -

हमरा दुइ बेटा एक बेटी अछि -

कत' छथि सभ -

सभ भारत मे - बड़का बेटा फारबिसगंज मे अछि छोटका केराला मे आ बेटी बंबई मे -

यानी पूरब सँ पश्चिम धरि अहाँ छेकने छी ।

दीदी गुजरात तँ अहाँक अपने जगह थीक - रेशमा बजलीह ।

फारबिसगंज नेपालक बार्डर पर, उत्तरी बिहार - धरा कँ अपनत्व बुझायल अपन देसकोसक नाम सुनि । उहो तँ मिथिलांचलेक छलीह - कत' सँ कत' तिनका सदृश उड़ैत ।

फारबिसगंज मे ओकर अपन बिजनेस छैक । संगे पुतौह सेहो ओहिठाम एल आइ सी मे डेवलपमंट आफिसर थीकीह -

बाह इ तं बड़ नीक - मुदा गुजरात सँ फारबिसगंज जेवाक प्रयोजन - कोनो तुक नय लागैत अछ-

ऋचाक नैहर ओम्हरे थीक, पिता बड़ प्रभावशाली तँ राहुल अपन बिजनेस ओम्हरे शुरू केलक-

एकटा नम्हर साँस लैत प्रिया बजलीह -

दर्दक एकटा तार पर धरा हाथ राखि देने छलीह - अपन बैटा कँ सासुरक वर्चस्व मे साँस लैत, ओकर गुणगान करैत देखि स्यात दुनियाक सभ माय बापक हृदय कत्तौ न कत्तौ क्षत भ' जायत अछ।

दोसर बेटा अक्षत केराला मे सरकारी नौकरी मे अछि । आकांक्षा सेहो सरकारी स्कूल मे पढ़वैत छथि । बंबईक एकटा फार्म मे सुरभि आ मयंक दूनू डायरेक्टर, मैनेजिंग डायरेक्टर थिक -

एतेक नीक परिवार - बड़ भाग्यवान छी अहाँ - धरा बजलीह-

हँ बड़ नीक धरा - बड़ नीक - हमरा सभ बाले बच्चा मे तँ जीवैत छी-

तखन अहाँ इंडिया नय जायत छी - रेशमी बजलीह -

बड़ राति भ' गेल धरा आब सुतु । भोरे फेर गेनाय अछि - धरा स्पष्ट बुझि गेलीह - प्रिया किछ नुका रहल छथि । हृदय पर पड़ल शिला लेख के ओ बाँच नय चाहैत छलीह -

मुदा धरा स्वयं उद्विग्न छलीह - रेशमी देखतहि देखतहि निद्रा देवीक कोरमे चलि गेलीह -

प्रिया - धराक स्वरसुनिते प्रिया भारी स्वर मे की दीदी बजलीह ।

धरा बुझि रहल छलीह - जे प्रियाक अवरूद्ध अन्तर सँ एकटा अव्यक्त रूदन आँखिक कोर सँ निकलि तकिया मे समा रहल अछि, मद्धिम इजोत कमरा मे व्याप्त अश्रुधार सन लागि रहल छल -

प्रिया, की बात छैक - अहाँ हमरा सं किछ नुका रहल - प्रियाक माथ पर हाथ रखैत धरा बजलीह -

प्रबास मे अपन देसकोसक प्रेममय स्पर्श पाबि मोन कतेक भावुक भ' उठैत अछि - धरा, लोक कें किएक बाल बच्चा होयत छैक ? लोक किएक बाल बच्चाक पाछा, ओकरा मनुख बनवैक पाछा अपन जिनगीक अपन जवानीक सभ खुशी सभ आनंन्द कें निछावर क' दैत अछि - की भेटैत छैक ओकरा - बाल बच्चाक ब्याह दान कय देवाक बाद मातापिताक जीवाक कोनो प्रयोजन नय रहैत छैक। बाल-बच्चाक अपन घर दुआर अपन जिनगी भ' जायत छैक - ताहि ठाम माय बाप बनारसी मे साटल चेथरी सन लगैत अछि -

वेग सँ जलप्रपातक पानि उमगि रहल छल सरोष सस्वर -

दीदी - हम तँ कदंबक ब्याह नय केने छी - बेटीक ब्याह केने छी मुदा जकर पतिए पैसाक पाछा सभ किछ बिसरि जाय.....

दूनू नारीक दर्दक लहरि एके ठाम सँ निकलि रहल छल अन्तर छल पति आ पुत्रक -

हम हरदम बड़का बेटा लग फारबिसगंज चलि जायत छलौं । ओना तँ माय बाप लेल सभ संतान बराबर होयत छैक । मुदा पैघ संतान पति पत्नीक प्रेमक प्रथम पुष्प होयत छैक तँ ओकरा पर नेह

किछ विशेष होयत हेतैक - पहिने तँ दूनू बेकति हमरा देखि खुश भ' जायत छल - दूनूक संतान शिशु हमरा बड़ पियरगर लगैत छल । मूल सँ बेसी सूद पियरगर । बेटी हमर जान बनि गेल । अपन देश मे रहवे की करै ओकरा सभके छोड़ि ।

किन्तु धरा, आस्ते आस्ते हमरा जेना एकटा उपेक्षाक आभास होम' लागल -

से किएक प्रिया - धराक ठोर पटपटायल ।

आ करुण कथा प्रियाक -

कनियाक कोठरी सँ गप करवाक स्वर साँप जकाँ अन्हार मे पसरि ससरि प्रियाक कान मे जाय लागल -

बड़ भीर पड़ि जायत अछि - कोना की करब - अलस स्वरे ऋचा बजलीह -

कथीक भीर ? कोन चिन्ता हमरा रहैत अछि ? कहु तँ - प्यार सँ भरल स्वर छल राहुलक - हम छी ने अहाँक संग । अपन चिन्ता हमरा पर छोड़ि दिय । अहाँक हँसी पर तँ हम काज करैत छी।

आफिसक समय भ' गेल । माँक लेल खेनाय सेहो बनेनाय अछि - इहो तँ एकटा सोच अछि।

एह माँक कोन? अपने सँ बना के खाय लेत । सभ दिन तँ भनसे करैत रहल । माँकें कोन दिक्कत-

मोन नय मानैत अछि - किन्तु राहुलक बात सँ ओकर स्वर उत्साहित छल - फेर, कनि फुसफुसीक स्वर हमर कान मे पड़ल - की अक्षत अपना लग माँ ने नय राखि सकैत अछि -

हँ किएक नय । हम ओकरा कहबैके जे उहो कनि दिन माँक अपना लग बजा लैक - इ सभ छोट छोट बातक चिन्ताा अहाँ नय करू ऋचा ।

जखन कि धरा हम घरक छोटमोट काज सभ करैत रहैत छलों? हुनका सभ के अपना लेल सोचबाक हम अवसर नय दैत छलौं । किन्तु, असगर रहबाक आदत ऋचा सभक बनल छल ।

प्रिया बेटा पुतौहक जीवनक रूप रेखा-जीवाक रंगढंग अहाँ चाहब जे हम बदलि दी - इ व्यर्थ अछिद । एहिमे पड़वाको नय

चाही ।

नय धरा - हम बदलवा लेल कहाँ चाहैत छलौं । हँ ममतावश कहियो कोनो नीक सलाह द' दैत छलौं - किन्तु ठीके बजैत छी अहाँ - केकरो जीवाक ढंग मे हस्तक्षेप नय करवाक चाही - एकटा उसाँस लैत प्रिया बजलीह - हम हरदम सोचैत रहैत छी जे बेटा नेनपने सँ अपन माता पिता भाइ बहीन सभक संग खेलाइत धुपाइत पैघ होयत अछि ओ बेटा ब्याहक बाद अपने माता पिता भाई बहीन कें कोनो पत्नीक दृष्टि सँ देख' लगैत अछि ? अपनहि परिवारक स्नेह ममता बिसरि जायत अछ ।

देखवाक, बुझवाक प्यार ममता आदर सभक मापदंड बदलि जायत अछि - अपन हृदय हेराय जायत अछि ।

जनैत छी धरा एक बेर साँझुक प्रहर हम पड़ल छलौं अशोथकित सन । पुरबाक कारण जोड़ जोड़ टुटि रहल छल । तावत कनियाक कोठरी सँ स्वर आयल ।

सासु छथुन्ह - ऋचाक मायक आवाज छल ।

सुतल छथीन - ऋचा बजलीह -

इ बेरके सुतल ? तौं असगरे खटि रहल छैक आ हुनका मलार-

माय, स्थिर सँ बाहु । सुनि लेथीन तँ व्यर्थेक किच किच होयत-

प्रियाक जेना छाती फाटय लागल - किच किच - आ धरि ओ कोनो पुतौह सँ किच किच नय केने छलीह । सभ दिन हँ मे हँ मिलवैत रहल । जेना अपन संस्कार अपन शिक्षा दीक्षा सभटा एकटा पाश मे ओकरा जकड़ने जायत छल । एकटा अजगरक पाश मे -

इ हरदम किएक एतहि अवैत रहैत छथुन्ह । आर बेटा पुतौह सँ नहि बनैत छै की ? - फुसफुसाइत माय ब्रजलीह -

हम की जानी माँ - हम तँ अपने बेहाल रहैत छी । भरि दिन खटि आफिस सँ घुरैत छी तँ हिनकर जान पहिचान अड़ोस पड़ोस सभक सत्कार मे लागि जायत छी - संसारो तँ परिचितक ततेटाक बसा नेने छथि - बाबू जी इंगलैंड सँ बजवैत रहैत छथि । मुदा - हम

तँ अपने बेहाल छी -

माइयो सँ मन्द स्वर छल पुत्रीक मुदा सभटा स्वर प्रिया दिसि सर्प बनि संधानक' रहल छल। एक बेर हमरा फारबिसगंज मे माथा मे बड़ जोर घुमरी लागि गेल । लागल घर दुआर चौकी पलंग सभटा घुमि रहल होय - हम कोना खसि पड़लौं कोना बिछान पर एलौं किछ नय बुझलौं - होश आयल तँ डाक्टर हमर नाड़ी देखि रहल छल - पएर दिसि राहुल आ ऋचा ठाड़ छलीह - एखन केहेन बुझा रहल अछि - डाक्टर प्रिया सँ पुछलक -

ठीक छी मुदा कनिको माथ एम्हर ओम्हर करैत छी तँ रदद जकाँ मोन होमय लगैत अछि - आस्ते सँ कुहरैत प्रिया बजलीह ।

स्पान्डलाइटिसक अंदेशा हमरा भ' रहल अछि - डाक्टर राहुल दिसि देखैत बाजल - काल्हि खन एकटा एक्सरे गरदनि आ पीठक कराय दिऔक ।

मुदा प्रियाकें ततेक जी होड़ऽ लागल - एतेक रद्द होय' लागल - एकदम अपना के निस्सहाय बुझ' लगलीह - हरीश इंगलैंड मे अपन बिजनेस मे मस्त छल । ओ जनैत छल जे प्रिया कें जतेक आवश्यकता पतिक छैक ओतवे बालो बच्चाक । बाल बच्चा कें देख' बिना ओ रहि नय सकैत छलीह। कतेक बेर हरीश ओकरा समझेलक अहाँ हमरा लग चलिके रहु । आब बच्चा सभक अपन घर परिवार छैक अपन जिनगी छैक । जिनगीक नियम कानून छैक । अहाँ किएक ओकरा सभकें नेने बुझैत छी ? साल मे दुइ बेर हरीश भारत आबि जायत छल बाकीक सभटा समय प्रिया कें अपन घर दुआर तीनो बाल बच्चा लग घुमैत बीति जायत छल । हरीश कहियो प्रिया कें पैसाक कभी नय हुअए देलक ओ बालो बच्चा लग अपने खर्च करैत छलीह । प्रिया छटपटा रहल छलीह - धधकैत आँच पर जरि रहल छलीह -

ओह माँ जी छथि - राहुलक स्वर प्रियाक कान मे पड़ल जेना कत्तौ सँ जान मे जान आयल । अपना के अनजान अपरिचितक मध्य पाबि ओ दंश सँ छटपटा रहल छलीह मुदा अपन पुत्रक स्वर सुनि ओकरा जेना शीतल फुहार भेटि गेल - मातृत्वक गरिमा तन बदन मे

अमृत सन बरसि गेल -

- अहाँ एलौं कखन -

हम तँ एखने आयल छी पाहुन, पाछा लागले अहाँ आयल छी-

प्रिया बुझि गेलीह बेटी ओहि कोठरी मे अछि - की हाल छैक माँ जी? बाबूजी कत' छथि ?

सळा नीके छैक पाहुन, सोचलौं ऋचा आबि गेल हेतीह आफिस सँ एक बेर भेंट क' ली -

इ तँ नीक केलौं, अहाँ सभ आबि जायत छी तँ हमरो सभ के किछ मोन लागि जायत अछि - ऋचाक मोन बदलि जायत छैक - नय तँ आजुक युग बरद जकाँ खटैत रहु मरैत रहु - राहुलक स्वर मे व्यंग्य छल ।

कोनो अभाव ओकर जिनगी मे नय छल । सुख समृद्धि छलकि छलकि अपन मोहजाल सँ सबकें आवेष्टित क' लैत छल मुदा संतोष नय - लिप्साक अंत नय -

प्रियाक कंठ सुखि रहल छलैक । एखन धरि राहुल माय के चर्च नय केने छल -

माँजी क जलखै सभ करेलियैक कि नय ऋचा - ऋचाक किछ बाजय सँ पहिने माय बाजि उठलीह - नय नय रह' दिऔक पाहुन । एक तं एकरा पर ओहिना आफिसक भार । ताहि पर सँ आयल गेल लागले रहैत छैक - प्रियाक कान मे गरम सीसा बरकैत हृदय मे समा रहल छल - ओ बुझि रहल छलीह इ चोट कत' छैक - पानि मांगवाक जे तरास छल ओ भीतरे आत्मसात क' लेलीह-

निश्छल राहुल बाजल - ताहि सँ की माँजी, जलखै तँ करैये पड़त -

प्रियाक माथ घुमि रहल छल - पिआस सँ बेकल कोहुना पानि लेल उठवाक प्रयास केलीह - एक दू डेग डगमगाइत राखलीह नहि कि - धड़ाम सँ खसि पड़लीह -

खसवाक स्वर सुनतहि सभ चौंकि गेल - माय खसि पड़लीह - राहुल घबड़ाय गेल -

माय फर्श पर अचेत पड़ल छलीह - देह ज्वर सँ तप्त -

देखतहि देखतहि गर्दमघोल मचि गेल - राहुल जीक माय खसि पड़लीह -

अचेत होयइत प्रियाक कान मे समधीनक स्वर पड़ल - आब ले ऋचा - तो देख अपन दुरगज्जन-

आ प्रियाक बंद पलकक भीतर सँ दुई बून्न पसरि गेल - एहि बूंदक रहस्य आखिर के बुझत? कतेक कथा कहानी पीड़ाक, व्यथाक, ओहि मे नुकायल छल रहस्य जानवा लेल माताक हृदय चाही!

प्रत्येक बेटा बेटी माता पिताक त्याग तपस्या सहिष्णुता आशा आकांक्षा ताधिरि नय बुझैत अछि जाधरि ओ स्वयं माय बाप नय बनि जायछैथ । स्वयं अपन संतान सँ अनादृत नय होयत छै - इ दुनियाक नियम थीक - मुदा जावत एहि भावक संचार ओकर हृदय मे होइत छैक माय बाप एहि दुनिया सँ चलि जायत छैक -

डाक्टर देखलक - कतेक दिन सँ हिनकर मोन खराब छैन्ह ?

ठीके तँ छलथिन्ह, केहेन बढ़िया घरमे एम्हर ओम्हर घुमैत रहैत रहथीन - ऋचा बजलीह नय डाक्टर साहब, किछ दिन पहिने हिनका माथा मे चक्कर अवैत छल, एक्सरे करेने छलौं - स्पान्डलाइटिस निकलल छल । दवाय खेने छलीह, मुदा तकर बाद सँ तँ ठीके रहैक माय - किछ सोचैत दुखी हृदय सँ राहुल बाजल -

ओह आब बुझलौं - डाक्टर बाजल - हिनका आरामक आवश्यकता छल। इ अपना उपर ध्यान नय देलखिन तकरे इ फल छल -

डाक्टर कोनो भय के गप तँ नय छैक - राहुल उदास छल ।

नै, नै, घबड़एवाक गप नय मुदा हिनका पर खास ध्यान राखवाक आवश्यकता छैक - राहुल के पीठ पर हाथ रखैत डाक्टर बाजल - कमजोर बहुत छथि । इ अपन खान पान सभ चीजक उपेक्षा करैत छथि - लागैत छैक कोनो चिन्ता मे रहैत छैथ -

चिन्ता कथीक रहत - ? हँ बाबूजी विदेशमे छथि - राहुल सोच' लागल - भरि दिन तँ ओ बाहरे रहैत छल । कहियो दिमागो मे नय आयत ऋचा ओकर मायक उपेक्षा करैत हेतीह - माता

राहुलक' जान' छल ।

आब ऋचा पर सोचक पहाड़ टुटि पड़ल - प्रिया समस्त घरक काज अपना पर ल' लेने छलीह। नौकर रहितो सभक खाना समय पर भेटि जाय ।

क़तेक बेर एहेन होयत छैक कोनो घटनाक स्मृति खत्म भ' जायत अछि, ओकर रूप रंग सभ उड़ि जायत अछ मुदा ओहि घटनाक दंश नय बिसरैत छी अछि मानव - ओ दंश ओ छटपटी सभ मोन रहैत अछ किछ किछ कारणो मोन रहैत किन्तु वास्तव मे भेल की छल - स्वयं निर्दोष रहितो ओहि घटना के स्मरण नय राखि सकैत छी दीदी । इ केहेन विवशता छैक तखन इ दंशो किएक स्मृतिकें आहत करैत रहैत छैक - दंश किएक नय खत्म भ' जायत छैक । जनैत छी रोग शोक भोग चिन्ता क्रोध इसभ मनुष्यक प्राणशक्तिकें क्षरित करैत अछ - किन्तु, अभाग्य एतवे पर थोड़े खत्म होइत अछि - प्रिया उसाँस लेलीह - इत' हमर जिनगीक एकटा हिस्सा थीक दोसर अंशक बात सुनब धरा तँ दुनियाक प्रत्येक रिश्ता सँ भरोसा उठि जायत -

जाहिठाम विश्वास छैक ताहि ठाम रिश्ता छैक - रिश्ता छैक तँ परिवार छैक - आ परिवार मे दुख सुख लागल रहैत मनुख, मुदा धरा दुखक काँट, गुलाबक काँट सन रहैत अछि तँ गुलाब कें देखि काँटो सहि लैत अछि । मुदा, नागफनीक काँट, कैक्टसक दंश सहनाय भगवानोक सामर्थ्य नहि - भगवान फूलशूल बनवैत छथि इंसान लेल - स्वयं अपना तँ सहवाक शक्ति भगवानो मे नय छै सुन्दर सुकोमल नंदन कानन मे विचरैत भगवान -

भगवानक उपमा पर धरा कें हँसी लागि गेल - लगैत छल जेना कतेक दिनसँ डीप फ्रिजर मे जमल बर्फ कें डीफ्रास्ट क' देल गेल होय - आ कनि कनि पानि बनि बर्फ पिघलि जलधार बनि गेल। प्रियाक हृदय सँ एहिना भावधारा प्रवाहित भ' रहल छल जेना आजुक सन राति फेर नय भेटत - धरा सन सखी फेर नय पाओत तँ हृदयमे जमल हिमशिला के कतेक दिन सहि पाओत । पति सँ अलग रहि बच्चा सभकें सुख भोग' चाहैत छलीह -

धरा गंभीर भ' गेलीह - बुझि गेलीह, मातृत्व बड़ जोर सँ आहत भेल अछि कत्तौ न कत्तौ - - बिन किछ बजने धरा प्रियाक हाथ दाबि देलीह-आ जेना स्नेह ममताक संचार एहि हाथ सँ ओहि हाथ, एहि देह सँ ओहि देह मे होम' लागल । खन दीदी भ' जायत छलीह धरा तँ, खन धरा - जेना कखनो माता बनि जायत छलीह कखनो संगिनी ।

दुख आ वेदना सिर्फ पतिए सँ नय भेटैत छैक वरण संतानोक देल दुख एतेक दारुण भ' सकैत अछि - कल्पने सँ धरा सिहरि सिहरि उठलीह -

आ प्रिया धराक हथेली पर माथ दय फफकि फफकि कान' लगलीह - रेशमा बुसुध सुतल छलीह - एहि दुख दर्द वेदनाक संसार सँ असम्पृक्त - अक्षत ल' गेल छल धरा अपना लग हमरा । राहुल हमर अस्वस्थताक खबर केने छल- सुनतहि अक्षत भागि हमरा अपना लग ल' अनलक.... धरा किछ नय पुछलीह - तकिया पर प्रिया दिसि मुंह केने करोट सुतल रहलीह - भय आशंका सँ तकैत आब प्रिया की बजतीह -

बड़ उदास छलौं ओहि दिन - अक्षत आकांक्षा अपन अपन काज मे, गृहस्थी मे लिप्त -पाँच छह बरीषक पीयूष भरि दिन स्कूल मे -

पति सँ अलग एतेक दूर छलौं बाल बच्चाक मोह मे -

आ ओहि दिनक अनधोल गरम पारा जकाँ कान मे एखनो टघरि टघरि हमरा बेचैन क' दैत अछ-

नौकरक कारण भोरे सँ आकांक्षा अक्षत मे बहस चलैत चलैत स्थिति बड़ अशोभनीय भ' गेल छल । चाहितो नय चाहितो प्रिया ओझरा गेलीह-

छोट सन छौड़ा अछि कथी ले ओकरा दुमसाइत छी - शान्त स्वरे अक्षत बाजल - किएक, हम ओकरा नय बामिज सकैत छी - की हम ओकर नौकर छी - आकांक्षाक गाल तामस सँ अंगार भेल छल -

आकंक्षा, हम तँ एतवे बजैत छी जे ओकरा नय तँ हम बाजब

नय अहाँ - बस माइक सेवा करैत छैक कर' दिऔक - ओकरा दमसाइत दमसाइत अहुँक स्वभाव खराब भेल जा रहल अछि -

यानी खाली माय बजथीन - इएह ने - टंहकार सँ बजलीह आकांक्षा -

प्रिया अकचका गेलीह ओ मियां बीबीक मध्य कत' सँ आबि गेलीह -

अक्षत सेहो अकचका गेल - माय कोना बीच मे आबि गेल।

हम तँ एको बेर नय कहने छी जे अहाँ ओकरा नय दमसाबियौक - लेकिन प्रिया बजलीह किछ नय -

आकांक्षाक तेवर देखि अक्षत कठोर भ' गेल - खाली माय बजथीन, नोकर हमरा अहाँ लेल नय छैक खाली मायक आराम सुविधा लेल छैक -

हम कहाँ बजैत छी जे हमरा लेल अछि - हम तँ अपने भरि दिन नोकर जकाँ खटैत रहैत छी - काज करैत रहैत छी । भानस भात बरतन चौका सभ तँ हमहीं करैत रहैत छी - आकांक्षा बड़ बड़ाइत रहलीह -

हमरो मोने ज्वार उठल छल धरा - रहल नय गेल - कथीक ताब सहितौ - कोनो आश्रित तँ छलौं नय -

अहाँ जखन आफिस जायत छी तखन के करैत छैक घरक काज -

तरकारी तँ हम बनाइए कें जायत छी - उद्धत जकाँ आकांक्षा बजलीह-

कनिया, घर मे एकेटा काज होयत छैक- भरि दिन तँ काजे लागल रहैत छैक - दबल स्वरे प्रिया बजने छलीह ।

- किएक ? के कहैत अछि । अहाँ कें खटवा लेल ? इ सभ काज छोड़ि देथुन हम आयब तँ करब - इनहोर भेल छलीह आकांक्षा - की हम हिनका मालिस नय क' दैत छियैन्ह ? कहियो कहियो नय करैत छी ? हम की हिनका ओछाओन नय क' दैत छियैन्ह ? कहियो कहियो नय करैत छी -

प्रिया कें हँसी लागि गेलैन्ह - मोन मे ज्वार उठल जे बाजि दी

- अहाँ अपन बात कें सुधारि दियौक - कहियो कहियो मालिस कय दैत छी - कहयो कहियो बिछान क' दैत छी - एकदम उदास सन प्रिया ओहि ठाम सँ चलि एलीह - अपना विदेश चलि गेलौं - हम अहाँक बात नय मानि माया मोहक काँट मे फँसि तड़फड़ा रहल छी - आब अपना लग बजा लिय हरीश हमरा - केकरो जीवन मे हमर आवश्यकता नय छैक - हम अहाँ एहेन अमूल्य संपत्ति के छोड़ि - आ प्रिया हतीश कें किछ नय बजैत छलीह - माता छलीह - पिता के तुरंत तामस उठि जायत छैक ताहि कारण कोनो माय अपन संतानक उपेक्षाक कथा अपन पति सँ नय करैत छैक - बेटा पिशाच बनि लै मायक काटि करेजा निकालि तँ ओहि कटल कलेजा सँ स्वर निकलत खुश रहु लाल.....

कहैत कहैत प्रियाक आँखि नोरा गेलैक - ओहिठाम सँ उठि के चलि एलीह -

अक्षत आ आकांक्षा मे बड़ देर धरि तकरार होयत रहल -

प्रिया हरीशक फोटो लग आबि कान' लगलीह - अपना विदेश चलि गेलौं हमरा नरक भोगय लेल एहिठाम छोड़ि देलौं । हमरा नय जीवी होयत - बस हमरा अपना लग बजा लिय'- सोफा पर प्रिया निश्चेष्ट बैसल छलीह - इ की भ' गेल - कोना भ' गेल - एतेक तामस आकांक्षा के छैक - एतेक हृदयहीन ओ अछि -

अक्षत आबि खेनाय मांग' लागल - प्रिया ओकरा समझोलक - कनिया सँ कही - मुदा अक्षत किछ नय बाजल - बड़ गंभीर लड़का अछि - भनसा घर सँ खटरपटरक स्वर सुनि प्रिया जा क' देखलीह - अक्षत सभटा बरतनके झपना उठा उठा देखि रहल छल-

प्रिया तुरंते गैस पर दालि तरकारी गरम कय थारी परीस आगु मे राखि देलक -

अक्षत पर प्रिया कें बड़ प्यार अवैत छल - भरि दिन काज करैत छल अपन खेनाय पिनाय पर कनिको सुध नय राखैत छल ओ - खाइत खाइत ओ बाजल - माय अहाँ दुख नय करू - ओकरा मे एखन बचपना अछि - ओ नय बुझैत अछि जे अपना सँ पैघक तामस तामस नय प्यार होयत छैक- नय बेटा - अहाँ हमर चिन्ता नय करू

- प्रिया एकदम स्थिर, शांत स्वर मे बजलीह - ओ जनैत छलीह कतेक घर मे बेटा पत्नी आ माताक मध्य दालि जका पिसाय अपन अस्तित्व हेरा दैत अछि - आ प्रिया जांत बन' नय चाहैत छलीह - अहाँ खाय लिय माय -

नय बेटा - आकांक्षा उठत तँ दूनू गोटे संगे खायब - अहाँ खा लिय' - दिनक दू बाजि रहल छल- अक्षत खा के अपन टेबुल पर बैसि काज करय लागल - प्रिया बैसिके टीवी देख' लगलीह -

कनिक काल मे नोकर आयल - खायले बजवैत अछ - संवादहीनता कोनो संबंध कें बेजान नीरस बना दैत छैक -

बड़ अनटेटल, लागलैक प्रियाकें - घर मे सासु पुतौह दुइए गोटे - तखन नोकर सँ कहा पठौलक खाइ लेल -

दुखी मोन सँ प्रिया बजलीह - जो एकटा रोटी नेने आ एहिठाम ।

नोकर प्रिया लेल एकटा रोटी आ तरकारी नेने आयल - प्रियाक जी भेल थारी फेकि दी उठा के- नोकरक हाथ सँ हमरा खेनाय पठा देलक - की संस्कार माय बाप देने छैक - अपना सँ पैघक आदर सत्कार तक नय - अक्षत भरि दिन बाहरे रहैत छैक - ओ तँ नय देखैत अछ जें की भ' रहल छैक लेकिन ओ बुझैत अछ सभ किछ । श्रवण कुमार जकाँ माता पिताक हृदय हार बनल अक्षत - आ तकर पत्नी - इ पसिन्न तं स्वयं प्रियाक छल - आदेश अवैत छल आकांक्षाकें किन्तु सोडावाटरक बुलबुला जकाँ - ओकर तारीफ करैत रहु ओ खूब खुश - एकरत्ती ओकरा उपदेश दिऔक - ओकर काज मे मीन मेख बताय दिऔक - फेर तँ तामसे माहुर की अक्षत की प्रिया - एतेक धरि जे अक्षतक पिताक लेहाज तक नय करैत छलीह - तीर जकाँ एक एकटा बात प्रियाक करेज कें आहत करैत चलल जायत छल - मारैवालाक हाथ पकड़ल जा सकैत अछि । किन्तु बाजैवालाक जबान नय - कखनो प्रियाक मोने होयत छल कसि के डाँटि दी तँ कखनो बाजि दी - चुप रहु कनिया- अहाँ हमरा लग रहि रहल छी नय कि हम अहाँ लग रह' आयल छी - एतेक तेवर केकरा पर - किन्तु अक्षतक चेहरा सामने आबि जायत छल -

सरिपों ओकर कोन दोष छल - दोष तं प्रियाक छल जे अक्षत सँ एहि विवाह लेल स्वीकृति लेलक -

इ कोनो नव बात नय छल - विवाहक बादे सँ प्रत्येक बात पर जबाब देनाय एकर प्रकृति छल - एकटा संयुक्त परिवारक शालीनता संस्कृति सभ सँ वंचित छल आकांक्षा।

बात कत' सँ कत' कोना पकड़ल जायत अछ प्रिया नय बुझैत छलीह - मोन पड़ि जायत अछ- आकांक्षा अक्षत लग बजैत माय कखन की बजैत छथि हम नय बुझैत थी । एक बेर बजलीह - सभ लोग चलि गेल - खेवाक बेर छल-किछ बना देतीयैक - कखनो बजैत अछि - खाना किएक बनवैत छी - कखनो किएक नय बनेलौं-

तखन प्रियाक ध्यान आयल - एक दिन ३-४ गोटे कुटुम्ब सभ आयल रहैथ - किएक ने कनिया खेनाइये खुआ देलीयैक ? हम तँ दिमागक भोथर छी - नौकरक हाथक पिछला रोटी खाइत खाइत-बुद्धि सेहो पिछला भ' गेल अछि - मुदा, अहाँ के ध्यान किएक नय आयल - अहाँ तँ जवान जहान कुशाग्र बुद्धिक छी - प्रिया माथा पर हाथ राखि लेलीह - पछतावा सँ - सर कुटुम्ब चलि गेल - खाइक बेर छल -

अहाँ कहितौं तखन ने माय -

हम की कहतौं । हमरा तँ दिमागे नय अछ-

शीशाक दोसर खंड दिल मे गड़य लागल । दोसर दिनक दोसर चित्र - चाचा चाची आयल छलथुन । तीन-चारि घंटा बैसल रहथुन, किछ खाय लेल नय देलीह - प्रिया अपना बेटी के बजलीह। सुरभि आ मयंक दूनू बेकति मायक लग आयल छलीह । चारि पांच दिन लेल -

होटल सँ जे चाउमीन अनने छलयैक - किएक नय देलीह माय - सुरभि बजलीह -

हमरा तँ दिमागे नय अछ - तोरा किएक नय दिमाग छौंक - तो तखनहि किएक नय बाजले आब बाजैत छैक-

सुरभि ही ही कय हँसय लगलीह - अच्छा छोड़ छोड़ - आब

जे बीत गेल से बात गेल -

राति मे खाइत काल इएह बात कनिया लग बाजलौं -

हम तँ जिनगी भरि सभक करेत रहलौ । आब अहाँ आबि गेल छी - मालकिनी आब अहीं छी-सभक ख्याल आब अहीं राखु - इ ओकरा बड़ जोर लागि गेलैक ।

हमरा माँ नय नीक लागै छथि - किएक - अखबार पर सँ आँखि हटवैत अक्षत बाजल -

प्रत्येक बात मे टोकि दैत छथि -

बाझल स्वर छल आकांक्षाकें -

जेना - एकटा शब्द निष्प्रयोजन जकां हवा मे उछलि गेल -

जेना की - की अहाँ नय बुझैत छी - अचक्के जेना आकांक्षाक स्वर कठोर भ' गेल - हम केकरो सँ गप करैत छी - फोनो पर - तँ ओ पाछा सँ हमरा सलाह दैत रहैत छथि- की हम नय बुझैत छी- हम नेना छी -?

अक्षत चुप छल ओ किछ नय बाजल - शब्दक वेग कें निर्झर जकाँ प्रवाहित होम' देलक- बाढ़िक आवेश जकाँ आकांक्षा बहि रहल छलीह शब्दक आवेग मे - गोर नार रंग अड़हुलक लालिमा ल' लेने छल । आँखिक रंग रतनार सँ किय मरै - शब्दक आवेशक उठैत गिरैत आरोह अवरोह -

अक्षत बुझैत छल - सभटा बुझैत छल - आकांक्षा, बेटी आ पुतौह अहाँ एतेक पैघ घरक छी, किन्तु एतेक छोट घरक करैत छी माय एहि दुनिया सँ चलि जेतीह तँ अहाँ कतेक खुश होयब - सभ टोका टोकी सभटा बंध प्रतिबंध खत्म भ' जायत -

छी छी - अहाँ एहेन बात कोना सोचि लैत छी - माँ नय रहतीह इ तँ हम कल्पनो नय क' सकैत छी - अहाँ एतेक नीच हमरा नय बुझु - वेग शांत भेल जा रहल छल - कखनो काल बड़ खौझाहटि उठैत होयत अछि माँ पर - ओहि सँ बेसी अपना पर - जे हमरा एखन धरि कथुक ज्ञान किएक नय अछि -

- जनैत छी आकांक्षा, माँक व्यक्तित्वक समक्ष सभ निष्प्रभ भ' जायत अछ किन्तु नय, मायक व्यक्तित्व सँ समस्त परिवारक

व्यक्तित्व ज्योतिर्मय भ' जायत अछ । अहाँ देखने छी बाबूजी माँक चेहराक एक एक रेखा कें पढ़ैत रहैत छलथिन्ह - माय की सोचि रहल छथि, किएक सोचैत छथि - संवेदनशील भावुक माताक हृदय कें अक्षत पढ़ने छल - भोगने छल - मुदा ओ भोग आकांक्षाक हृदय मे उतारि देत इ प्रयास व्यर्थ छल किन्तु, प्रयास ओ करैत रहैत छैक।

अहाँ किएक बच्चा सभके बीच मे पड़ैत छी । दूनू बेटा सेटल अछि नीक नौकरी मे, बाल बच्चा परिवार वाला सभ - आब अपन निर्णय स्वयं ओकरा सभके लिय' दिऔक - उत्तरदायित्व बुझ' दिऔक नय तँ सभ दिन एहिना अहाँक मुँह देखैत रहत - हम ठीक बाजलौं कि गलत - हरीश हरदम प्रिया कें समझावैत रहथि ।

प्रिया बुझैत छलीह - आ स्वयं नय चाहैत छलीह जे हम बीच मे किछ बाजी सभ दिन हरीश एतबे समझावैत रहलाह - कोय माँगे तखनो केकरो सलाह नय दी - आ बिन मँगने तँ एकदम नय-

ठीके हमरा किछ नय कहबाक चाही । सभक अपन अपन कनिया छैक । सभ अपन अपन नीक बेजाय कर्त्तव्य अकर्त्तव्य सोचय - हमरा की अपनहि फुरसत अछि -

आकांक्षा देखवा सुनवा सँ ल' क' सभ गुण सँ सम्पन्न छलीह मुदा जखन ओकरा मोनक विरुद्ध किछ होयत छल तँ तमसक प्रबल वेग सँ ज्वालामुखी बनि जायत छलीह -

कखनो ओकर व्यवहार प्यार देखि प्रियाक हृदय मे ओकरा लेल बात्सल्य उमड़ि जाय - बड़ प्रेम सँ ओकर चिबुक उठाय ओकरा दुलरावैत छलीह - अहाँ बड़ नीक छी कनिया - एहिना नीक, एहिना प्रेममय बनल रहु -

किन्तु, फेर ओहि दिन जखन सभ पर कुटुम चलि गेल तँ भनसा घर मे जूठ काठ सकरी बरतन सभक भीड़ लागल छल - डाइनिंग टेबुल पर बचल खुचल खाद्य सामग्री पड़ल छल -

बरतन अजबारि दिय' माय - हम मांजि लैत छी - आकांक्षा बजलीह - आ फेर एक-एकटा छोट मोट बरतन सभमे कूकर दोंगा अजबारि देलौं जाहि सँ फ्रिजमे सभ अंटि जाय । इ काज प्रिये सँ संभव छल -

आकांक्ष बरतन बासन मंजैत रहलीह आ अपने आप बड़बड़ाइत रहलीह - कतेक करी - हमर तँ परीक्षो होयत रहैत अछि । काल्हि सँ दलिया बना देव सभ वएह खेताह -

प्रिया चुप चाप बरतन खाली करैत रहलीह - बासन बनत छल - रातुक एगारह बाजि रहल छल- आकांक्षा परेशान छलीह - प्रिया परेशान - पता नय कोनो कोना दिन एहेन भ' जायत छैक जे अचक्के लोकक हुजूम आबि जायत छैक । अतिथि देवोभवक भाव सँ स्वागत मे कमी नय आबि जाय - इ संस्कार बाल्यकाले सँ माय बापक देल - कहीं मोन नय खराब भ' जाय कनियाक । प्रिया सँ नय रहल गेलैक - अहाँ छोड़ि दियौ कनिया - हम मांजिलेब -

नय नय माय हम कय लेब - बेसिन के घेरने छल आकांक्षा तँ प्रिया धोइयो नय सकैत छलीह - किन्तु मोने मोन संकल्प लेलीह प्रिया कालिह सँ घरक कोनो काज आकांक्षा कें नय कर' देब । हमही भानसो क' देब -

ध्यान मे प्रिया के अपन नैहरक आयल, अपन नैहरक जीवन - चारि बहीन प्रिया, पिता शिक्षाक मामला मे बड़ कठोर - भरि दिन चारु बहीन घरक काम काज - आयल गेल, माता पिताक सेवा मे व्यस्त रहैत छलीह - राति ११ बजेक बाद लालटेन ल' क' - छतक सीढ़ी पर बैसि चारु बहीन अपन बीए एमए क कोर्स पूरा करैत छलीह - भरि दिन कोयला गोयठा लकड़ीक संग युद्ध - आ आय गैस चूल्हा कूकर - विम पाउडर आ कतेक सुविधा - सुविधा भोगी मानव अपन तन मोन कें असुविधाक भंडार बनाय नेने अछि धरा - धरा शांत छलीह प्रियाक अशांत शब्द अनवरत - सभटा बरतन धोवि जखन आकांक्षा अपन बेडरूम मे चलि गेलीह तखन प्रिया बरतनक ढेर कें उठा जगह पर राख' लगलीह । स्टिलक थारी, छोट छोट तश्तरी कटोरी चम्मचक ढेर कूकर कलछी कड़ाही- कप डीश सभटा के उनटा-उनटा जगह पर सजव' लगलीह - गैस चूल्हाक पोछि के चमकाय देलीह । कचरा पेटी सँ छितरायल कचरा कें नीचा सँ समेटि पेटीमे बंद कय देली । राति मे कचरा फेकल नय जायत अछ- बचपन मे माय आ नानी - कहनी छलीह दीया बातीक

बाद देहरी सँ बाहर यदि बहारि फेक देब तँ लक्ष्मी चलि जायत अछ-

आ इ सभ फिनिशिंग करैत करैत प्रियाक डांड़ अकड़ि गेल - नौकर गाम चलि गेल छल छुट्टी ल' क' । नौकरो रहैत छल तँ भनस भात चौका बरतन कय खेल' चलि जायत छल आ प्रिया फेर सभटा बरतन कें, मसालाक डिब्बा कें जगह पर राखि - भनसा घरक साफ सफाई करैत छलीह - शुरु सँ इ डिपार्टमेंट प्रिया सँभारैत छलीह -

मकान बनेनाय आसान अछि, मुदा ओकर फिनिशिंग-प्लास्टर सं ल' क' - लकड़ीक काज, ग्रिल, डिस्टेम्पर सभ कतेक कठिन अछि इ सिर्फ मकान बनवै वाला बुझि सकैत अछ - ओहिना भानस केनाय आसान अछि बरतन मांजनाय आसान- किन्तु सभटा एके जगह पर राखि झाड़न पोछन इ सभ फिनिशिंग टच बड़ दुष्कर आ फेर पचपन छप्पन वर्षक हड्डी मे आब ओतेक दम कत' -सासु ससुर के खुश करवा लेल काज करू - पतिके खुश करवा लेल, संतान के खुश राखवा लेल अंत पुतौहके खुश करवा लेल बाज बाज-काज-आकि पुतौह कहियो खुश रहि सकल - की प्रत्येक स्त्रीक जीवन चक्र इएह होयत छैक ?

माय की सभ सोचैत रहैत छी अहाँ - आकांक्षाक स्वर सुनि प्रिया चौकि गेलीह किछनय बेटा-

किछ तँ अवस्य अछि- हम नेना नय छी जे अहाँ हमरा बहटारि नय सकैत छी -

बाप रे अहाँ तँ पाछु पड़ि जायत छी । अक्षत - बस एतवे सोचैत छी आकांक्षा कें कोना खुश राखी ।

हद भ' गेल माँ, ओकरा सोचवाक चाही जे कोना माय खुश रहय, सासु खुश रहय, उलटे अहीं सोच' लगैत छी - फेर कनि कि अक्षत बाजल - माय अहाँ तँ देखते छी बीच, बीच मे ओकरा कहियो किछ भ' जायत छैक - बच्चा छैक -

प्रियाक मोन उदभ्रांत भ' गेल - जे लड़कीक मोन मे इ नय होयत छैक जे विदेश बसैत पिताक बिना मायक हृदयक एखन कोन

हाल होयत - कोना अपना के संयत राखैत होयत - बेटी तँ जनमते ममत्वक भाव-अखिल आ तृत्वक विशाल संसार लय समस्त प्राणीकें भावसिक्त करैत अछि - बेटी तँ जल जकाँ होयत छैक जाहि पात्र मे राखि देब वएह आकार लय लैत छैक - गिलास मे गिलास सन, लोटा मे लोटा सन, कठौत मे कठौत सन - इ ओकर कायरता या शोषण नय थीक इ ओकर विशेषता थीक - व्यक्तित्वक उत्कर्ष थीक - ओ जीवैत अछि तँ सभ लेल - सभक सुख-दुख मे अपन सुखकें होम कय दैत अछि - बस मरैत अछि तँ मात्र अपन नश्वर देहकें क्षार करैत - आ एहि मे ओकरा अपन जीवनक सभ सुख भेटि जायत छल। पुतौह सँ बेटी बनवाक आश त्यागि देवाक चाही। बेटी बेटी होइत छैक - पुतौह पुतौह। बेटा जन्म सँ ल' के जवीन भरि माँ साँस साँस सँ परिचित रहैत अछि। पुतौह आन घर सँ, भिन्न परिवेश सँ अवैत अछि। ओ बेटा जकाँ सासुक साँस साँस, इच्छा अनिच्छा सँ चीन्हार नय होइत अछि। हँ कतेको संस्कारी घरक कन्या बेटा सँ बढ़ि सासु कें चीन्ह लगैत अछि। आ कतेको जगह बेटा अपन पत्नीक आँखि सँ माय बाप भाई बहीन कें देखे लगैत अछि।

तँ बेटी बनवाक आश त्यागि दिय' प्रिया - पुतौह संपूर्ण सँ पुतौह बनि अपन गरिमा निभाय दियैक इएह बड़ पैघ बात थीक। सासु तँ सेहो पुतौहे बनि अवैत छथि ने - धरा वेदना सँ बीतल भीजल, प्रिया कें सांत्वना देवाक प्रयास क' रहल छलीह -

किन्तु, दीदी, घरक बुनियाद पुतौहे सँ होइत अछि। बेटी तँ आन घर चलि जायत अछि। नारी जीवनक दुइ खंड होइत अछि पिता गृह - पति गृह। पितागृह मे पिताक समस्त प्रेम रसक वर्षा मे तीतनाय आ पति गृह मे पतिक समस्त संसार कें ओहि बरखाक मधु-धार सँ सिक्त क' देनाय, भीजाय-तीताय देनाय। इएह तँ नारी-जीवनक सार्थकता थीक - प्रिया फेर अनवरत भ' गेलीह - दीदी एक बात आर अछि - आय काल्हि माय, बाप बेटीक जिनगी मे ततेक तखलंदाजी करैत छथि जे पुतौह सभक इएह स्थिति जे ओ अपन घर कहियो बसा नय सकैत छथि। सासु पुतौह कें प्रताड़ित करैत अछि किन्तु पुतौह सेहो सासुक मानसिक यंत्रणाक कारण बनि

जायत अछि -

प्रिया तँ पहिलुक परंपरा सभमे किछ नीक बात तँ अवस्य छल जे बेटीक जतेक दूर ब्याह करी ओतेक नीक। ओकर सुख दुख सँ माय बाप सर्वथा असम्पृक्त रहय। बेटी सुख दुखक बरखा झेलैत अपन गृहस्थीक निर्माण क' सकैथ। अपन बुद्धि विवेकक आधार पर - जनैत छी प्रिया - हमरा सभ ओत', मिथिला मे, बेटी जखन सासुर सँ नैहर अवैत अछि तँ सर्वप्रथम ओकर स्वागत बासि भात आ बड़ी सँ कयल जाय'छ जाहि सँ ओ बेसी दिन नैहर मे नय टिकय। आ पुतौह अवैत अछि तँ खीर पूड़ी सँ स्वागत होइत अछि जे एहि ठाम ओकर मोन लागि जाय...

विचित्र परंपरा अछि - पहिलुक - बेर प्रिया खुलि के हँसि देलीह - आ धरा कतेक काल धरि प्रियाक ओहि हँसी के तकैत रहलीह। जकरा अहाँ बदलि नय सकैत छी प्रिया, व्यर्थ ओकरा सँ झगड़ा केला सँ कोन फायदा ? जाहि परिस्थिति सँ हम बचि नय सकैत छी ओरा परिवर्तित करवाक इच्छा नय राखवाक चाही - जकर स्वभाव कठोर, कलह-पूर्ण, झगड़ालू अछि ओकरा सँ बहस-नय करवाक चाही। अपन भूल, असफलता आदि पर सोचैत रहवा सँ मात्र अपन मनोबल क्षीण होइत अछि - अपन मानसिक संतुलन नष्ट होइत अछि।

तखन हम अपन मोन के की करी दीदी - अपना कें कोना समझावी - प्रिया सेहो किछ हल्लुक भ' गेल छलीह भारहीन मेघ सन -

अहाँक वशक बात की थीक - अहाँक स्वभाव, अहाँक प्रेममय व्यवहार - ! अहाँक मानसिक, बौद्धिक भाव कतेक उदात्त अछि प्रिया हम अनुकित केने छी - किन्तु, जे व्यक्ति अहाँके नय बुझि सकैत अछि - अहाँक मानसिक ऊँचाइ तक नय पहुंचि सकैत, अछि ओकरा सँ अहाँहाथ रखैत छी, अहाँ दुखी आ संतप्त भ' जायत छी। आन व्यक्तिक मनोभाव, इच्छा-कामना, नीक बेजाय रहवाक, सोचवाक ढंग - एकरे पर अहाँक वश नय अछि तखन अहाँ व्यर्थ तनाव मे किएक जीवैत रहैत छी-

अहाँ खुश रहब हरीश खुश रहताह - बाल बच्चा सभ आय गलती करैत अछि काल्हि ठीक भ' जायत अछ । गलती करैत अछि इ ओहि कालक क्षण परिस्थिति पर निर्भर करैत अछ - परिस्थिति बदलैत अछि - मानसिकता बदलि जायत अछ - सभ चीज अतीत भ' जायत अछ - कारण स्नेह सत्य अछि - परिस्थिति असत्य, क्षणिक अछि - फेर शाश्वत सत्य कें कोना बिसरा दी ?

- धरा के लागि रहल छल जेना धरा नय स्वयं सीमान्त बाजि रहल होय -

जनैत छी दीदी - जिनगी एकटा नदी सन अछि । मुदा दूनू तटक बीच बान्हल । गुलाब सन सुन्दर अछि मुदा कांटक मध्य काँट की मृत्युक दंश । दीया जकाँ प्रकाशित अछि । लेकिन चारु दिसि आँधी तूफान सँ घिरल । नय धरा - कोनो तरहक दंश सहब कठिन छैक - प्रियाक दार्शनिक स्वर सुनि धरा बजलीह -

ठीक छैक प्रिया, हम अहाँके उत्तर दैत छी अहाँक दर्शन के काटैत ध्वंस करैत - नदीक किनार नदीक प्रवाह के रोकैत नय अछि वरन् ओकर रक्षा करैत अछि । जखन बहबा लेल चाहैत अछि तं दूनू किनार कें तोड़ैत आगु बढ़ि जाय'छ । कांट गुलाबक सौंदर्यक रक्षा करैत छैक जाहि सँ चाहल अनचाहल आंगुर गुलाब कें स्पर्श कय ओकरा नष्ट नय कय दैक । गुलाब अटल अक्षुण्ण शाख पर खिलैत अपन आस पास कें सुरभित करैत रहैछ । आँधी तूफान दीयाक लौके बुझेवाक प्रयास नय करैत अछि वरन् जीवन संघर्ष मे आर प्रज्जवलित भ', आर शक्तिमय भ' प्रकाशित हेवाक प्रेरणा दैत अछि-

बाप रे बाप दीदी - हँसैत प्रिया बजलीह - के अहाँ सँ बहस करय अहाँ तँ ज्ञानक भंडार छी- नय प्रिया, हरेक कार्यक कारण होइत अछि - अहाँ नय देखैत छी, सीमान्त इंगलैंड बसि गेलैथ तँ कदंबक नोकरी इंगलैंड मे भ' गेल । कोनो घटना किएक घटै इ घटि जेवाक बाद पता चलैत अछि - जिनगीक दोसर रूप देखु प्रिया जे जिनगी खुशी सन पवित्र नोर सन निश्छल होइत अछि । अकाश जकाँ अज्ञात तँ सागर जकाँ अथाह अछि । बुद्ध जकां अकथ तँ गाँधी जकाँ

अथक जिनगी होइछ प्रिया - इ तँ अपन आँखि, अपन हृदय अछि जाहि सँ आदमी जिनगी में देखैत अछि ।

फेर - बात के दोसर दिसि मोड़ैत धरा बजलीह - हम तं अपन पितिआइन के देखने छी । एहेन एहेन सासु वास्तव मे समाज मे पसरल अछि । सदिखन पुतौहेक दोष रहैत अ कि ? एखनो हुनक व्यंग्योक्ति सभ मोन पड़ि जायत अछि तँ तन मोन सिहरि जायत अछि।

सुकान्त हमर पितिऔत भाई दुरागमन कराय कनिया के अनने छल ।

- सौंसे टोल परोसक लोग कनिया देखवा लेल आइल छल - भरि घर सामान पसारने, बक्सा पेटी डाला डाली - काकी बैसल छलीह । इ सभ कनियाक नैहर सँ आयल अछि - केकरो टोकला पर सुनिते देरी कि काकी चिकरि उठलीह - हँ हँ देखियौक ने । बाप की सी सांठलक बेटी के-

आ बक्सा सँ एक एकटा नुआ देखा देखा फेक' लगलीह, एहेन एहेन साड़ी - हमरा घर मे के पिन्हैत छैक ? की कनिया एहेन साड़ी - हमरा घर मे पहिरत बाप किछ नय देलक - कोनो सिहन्ता नय पुरल - धराक मोन फाटि गेल छल - अपन कलेजाक टुकड़ा निकालि बाप माय द' देलक - सभ सँ कीमती वस्तु एकटा अछूत बाला जकाँ उपेक्षित घोघ तर कोन मे मोटरी बनल बइसल अछि - ओकर कोनो मोल नय । टोल परोसक जनी जनी जाति - आहा सएह देखियौक - की देलकैक - कनिया देखै लेल आयल स्त्रीगण कनियाक समान पर टीका टिप्पणी क' रहल छलीह । हे बहीन ठका गेलखिन तँ समान कत' सँ भेटतैक - केओ बजलीह फुसफुसा के - से की बजैत छी । अहाँ श्यामक माय के देखु, पाँच लाख टको लेलखिन आ ट्रकक ट्रक समानो भेटल - फेर फुसफुसी-

एकटा बात जरूर छैक अहाँ तिलक दहेज नय माँगब तँ बेटीवला किछ देबो नय करैत अपना मोन सँ ।..... ठकि लैत छैक. .. सभ जनैत अछि जे ब्याह मे बर अवैछ कनिया लेल, बरियाती खेवा पीवा केल आ बाप सर समान लेल -

एहि सभ फुसफुसीक मध्यम सभ बिसरि गेलीह जे हम सभ कनिया देख' आयल छी -

सासुरक प्रथम अनुभूति-एतेक कटु अनुभव कोनो कन्या के होय तँ ओकरा सँ सासु ससुर की आशा अपेक्षा क' सकैत अछि । जाहि ठाम मनुखक मोल नै वस्तु जातक आदर होय ओहिठाम पुतौह सँ आशा कोना क' सकैत छथि सासु ससुर धराक मोन जेना सुकान्तक कनियाक मोन संग एकाल्य भ' गेल ।

बाबा कौन नगरिया जुअबा खेलि अयलौं हे

बाबा केकरा दुअरिया हमरा हारि अयलौं हे

- ठीक कहैत छी धरा - परिस्थिति कें स्वीकार कय खुश रहैबाक चाही -

हम केकरो दयाक पात्र बनि ओकर बदले हम केकरो करुणाक उपहार दय सकी - प्रिया बजलीह - राति बीति गेल दूनू बहीनक । गंगजमुनी मे ।

प्रिया भोर भ' गेल । प्रिया भोर भ' गेल अछि - अहाँ कनि काल सुति रहु - धरा बुझैत छलीह जे प्रिया तन मोन दूनू सँ थाकि गेल छलीह - एक बात बुझि लिय' प्रिया जे माता सँ बढ़ि दुनिया मे कोना प्रेम नय होइत अछि प्रिया, मुदा कतेको जगह बेटा जेना जेना पैघ होइत अछ - माय बेटा मे अन्तर होमऽ लगैत अछि - नया पुरानक, स्त्री-पुरुषक, भावनाक अन्तर, विचारक अन्तर - सांसारिक स्वार्थक अन्तर - खाली अन्तर अन्तर - प्रेम ओहि अन्तर मे भोतिआय जाइत अछ खाली संबंध टा बाचल जायत अछ - बहुत कम एहेन माय बेटा होइत जाहि ठाम निर्जीव संबंधक अलावे - हृदयक संबंध रहैत होयत, आत्मिक रिश्ता होयत - बेटा मायक नोर बिसरि जायत अछ - बिसरि जायत अछि मायक दूधक स्वाद - आ माय बेटाक हृदयक स्पन्दन नहि पकैड़ पवैत अछ - आगु आगु भगैत बेटाक पाछा स्यात-माय चलि नय पवैत अछ - ओकरा समझि नय सकैत अछ। दूनूक अलग अलग दूनूक बीच हिमालय जकां ठाड़ भ' जायत अछि । किन्तु, माय नय बदलैत अछ।

धरा - आय जिनगी मे पहिल बेर हमरा अहाँक रूप मे एकटा

एहेन सहृदय-सहसंवद्य दोस्त भेटल जिनका समक्ष हम अपन हृदयकें अनावृत्त क' देलीं - प्रियाक स्वर व्यथा विगलित छल - हम नय जनैत छी अहाँ कें - अहाँ नय जनैत छी हमरा मुदा एहि अल्पकालक मांगलिक परिचय जेना जन्म जन्म कें रिस्ता कें उजागर क' देलक - किएक विस्वास केलौं अहाँ पर - कोना भरोस भ' गेल - प्रियाक एहि आँखक नोर ओहि आँखिक टघार मिलैत रहल, आँखि मुनागेल छल -

मुदा की धरा शान्त रहि सकलीह - अपनहि मे सोच' लगलीह - हँ प्रिया जिनगी मे एकटा दोस्तक बड़ आवश्यकता होयत छैक। अपन मोनक भाव अनुभाव सभक साक्षी बनयवा लेल - आ विस्तृत जीवनक जे आकांक्षा आ अनुभूति सभ एम्हर किछ काल सँ धराक अन्तर मे रुद्ध छल ओकर दुआर सभ खुज लागल । कतेक तरहक अनुभवक विराट आ व्यापक दृश्य धराक आँखिक आगु नाच' लागल आ ओहि मे सीमान्तक कत्तौ कोनो भूल ओकरा दृष्टिगोचर नय होयत छल वरन अपनहि गलती सभक ग्लानि ओकरा पाश्चातापक आगि मे झाँकि रहल छल -

सभ दिन । हवा मे उड़ैत रहलौं पीपरक पात सन - कहियो धरतीक वास्तविकता बुझवाक प्रयास नय केलौं - आय हाथ सँ मणिरत्न सन सीमान्त पिछड़ि गेल.... - प्रिया स्यात्, सुतिगेल छलीह, आँखि पर नोरक टघार एकपैरिया जकाँ छितिरायल छल - किन्तु - धराक नीन्न उड़ि गेल छल ।

कतेक देर धरि ओ छटपटाइत रहलीह आ तखन अन्तर्लौकिक अदभुद शक्ति सँ प्रस्फुटित, जीवन जगतक कल्पना सँ समन्वित ओहि असीमक आगु संकल्प नेने रहथि सीमान्तकें खोजि निकालवाक, मुदा आब एक एक पल ओकरा विराट - युग सन प्रतीत होइत छल-

जाड़ बढ़ैत जाय रहल छल । भिनसर मे मधुर चाँद के छाहरि मे कार्डीगन शाल ओढ़ि बाहर लौन मे बैसवा मे बड़ चैन भेटैत छल धरा कें । चारु दिसि छोट छोट पहाड़क हरियर टीलाक एकांत कें चीरैत सुन्दर आकास सँ कोनो पक्षीक स्वर सँ, ओकर मर्मभेदी गान सँ एकटा मीठ उदासी मोन प्राण के घेर लैत छल - पासपोर्ट वीसा

मे त मानव कैद रहैत छैक इ उन्मुक्त पक्षी ? किएक चीत्कार क' रहल अछि - इ मभ की हमरे जकाँ अपन प्राण कें वियोगक दंश भोगि रहल अछि- प्रियाक जीवन - बेटा पुतौहक व्यवहार जेना ध राक छाती पर रहि रहि छेनी मरैत छल । सरिपहुं की पुतौह एवाक बाद मायक इ स्थिति भ' जायत छैक - हम कतेक उनाहुल छी पुतौह लेल, कदंबक ब्याह लेल - मोन पड़ि जायत छल, दुख तँ दुख अछि - पीड़ा चोट - सभ एक्के - चाहे पतिक देल होय वा कि पुत्रक देल । पति मे समानताक भाव रहैत अछि आ पुत्र मे लघुताक भाव - अपन देह सँ निर्मित अंशक उपेक्षा अनादर - कतेक दारुण पीड़ा होयत हेतैक । मातृत्व कतेक आहत होयत अछि - ओहि दिन कतेक प्रेम सँ कदंब के कहने छलीह - कतेक नीक नीक कथा आबि रहल अछि । अहाँ कोनो लड़की पसिन्न करु - कनिक काल माँक मुँह देखि ओ बाजल - माँ सुनैत छी - फेर मुड़ी हिलवैत बाजल - सुनब की - अहीं सभ अपना मे बजैत रहैत छी जकर सासु जेहेन होयत अछि, उन्नीस बीस ओकर पुतौह ओहने होयत अछि । अहाँक पुतौह माँ उहीं सन निश्छल, विशाल हृदयवाली प्रेममय होय तखन ने?

प्रश्न निश्छल अन्तरक नय अछि । कदंब, जीवन जीवाक ढंग हेवाक चाही । माता-पिताक देल संस्कार सँ सजल रहय नय कि कृत्रिम मेकअप सँ । अहाँक पापा तँ सदिखन हमरा कहैत रहैथ- अहाँक जीवाक ढंग नय अवैत अछि । कत' की बाजवाक चाही - की करवाक चाही, अहाँ बुझिते नय छी। तँ अहाँ सभ पर भरोस कय लैत छी । सभ अहाँक भावना संग, अहाँक विश्वासक संग खेलवाड़ करैत रहैत छथि ।

धरा सजल रहितो बेटाक समक्ष सजग छलीह ।

माँ पापा तँ अहाँक हृदय के नक जकाँ पढ़ने छथि -

हँ बेटा वएह सभ तँ हमर संबल थीक - कदंब, अहाँ की अपना पापा सँ अलग छी -

माँ हम आ पापा अहाँ के चीन्हैत छी - अहाँक भावनाक आदर करैत छी तखन अहाँ किएक टूट' लगैत छी । माँ, अहा, हँसैत

छी तँ हम सभ हँसैत छी । घरक छत देवार सभ विहुँस' लगैत अछि - फेर कनि गंभीर होयत कदंब बाजल - किन्तु माँ, जरूरी अछि जे अहाँक पुतौह सेहो अहाँक हृदय कें चीन्हत ? अहाँक मनोभाव बुझत?

धरा हँसि पड़लीह - हमरा अपना पर विश्वास अछि बेटा - केहनो पुतौह एतीह - हमर स्नेहक छाहरि मे अपने आप बेटी बनि जेती - खाली अहाँ खुश रहल करू । कोनो बातक अहाँ टेंशन नय लिय' -

माँ सभ गेटे हमरा इंजीनियरिंग के बाद कम्पीटीशन मे बैसवा ल' कहैत अछि - किन्तु हमर मोन नय मानैत अछि - कललक्टर कमिश्नर कत्तौ केकरो मर्यादा बचल छैक माँ ? एक समय छल जे 'क्रीम ऑफ सोसाइटी' सभ एहि वर्ग कें कहैत छल । किन्तु आय स्वयं अपन स्थिति मे लावारिस सन बना नेने छथि ।

- हँ से तँ ठीक - धराक उसाँस छल - बेटा सभ सँ पैघ अहंकारी इएह वर्ग होयत छथि । जेना जेना अवकाश प्राप्त करवाक समय नजदीकायल जायत अछि ओहिना ओकर अहंकार चरमोत्कर्ष पर पहुँचि जायत अछ । अपना समक्ष केकरो किछ नय मुदानैत छथि। किछ हेवाक अहंकार...

नयं माँ । आब ओ जमाना चलि गेल । अहीं सभ तँ बजैत रही उपर सँ फीट फाट भीतर सँ मोकामा घाट - इ सभ उपरी ठीव ढाब थीक । आब तँ नेतागण, मंत्रीगणक पाछा पाछा भगैत रहैत छथि । राग दरबारह गवैत रहैत छथि । ओना आब' जे युग आबि गेल अछि एकर बिना नियतियो की? हमरा तँ एहि पद-प्रतिष्ठा सँ वितृष्णा होम' लागल अछि । माँ म नय सकब एहि राग मे ? अहाँक देल आदर्श सिद्धान्त इमानदारी शोणित बनि हमर नस नस मे दौड़ि रहल अछि ।

कदंब अहाँ उदास नय रहु । अहाँक व्यक्तित्व पद पाबि नहि प्रतिष्ठित होयत । अहाँ पूर्ण मानव बनु कदंब श्रद्धा आ इड़ा सँ परिपूर्ण हृदय आ बुद्धि सँ संतुलित । मानव यदि मानवे बनि जाय तँ इएह पैघ उपलब्धि । अहाँ जाहि क्षेत्र में रहब बी द बेस्ट । अपना

लेल तँ सभ जीवैत अछि कदंब मुदा जे आन लेल जीवैत अछि वएह महान थीक ।

कदंब मायक एक एक बात कें गौर सँ सुनि रहल छल । ओकर अन्तस सँ फुटैत स्नेह आ वात्सल्यक गंगोत्री पाबि नेने छल, थाहि नेने छल । ओ जनैत छल हम माँ कतेक मल्पनाजीवी कतेक भाव जीवी अछि - जीवनक उदात्तता कें स्वयं मे समेटने - माँ - कदंबक स्वर गंगोत्रीक पावन धार सँ स्नत छल -

अहाँ तँ अपन समस्त जीवन आन लेल, उत्सर्ग करेत रहलौं । नैहर सँ ल' क' सासुर धरि सभकें जोड़वाक प्रयास मे अपना कें बिसरि गेलौं । पति सँ ल' क' संतान कें बनएवा मे अपन 'स्व'क उत्सर्ग कय देलौं । आखिर अहाँ अपना कें किएक दुख द' रहल छी माँ - की भेटल अहाँकें -

समर्थ बेटाक मुंह सँ विश्लेषणक तीक्ष्णताक अनुभूतिए सँ धरा काँपि काँपि गेलीह । अपन बेटाक समक्ष ओ कातर हेवा लेल नय चाहैत छलीह । अपन हृदयक दुर्बलता आ स्वभावक कोमलता कें कहियो अपन विवशता नय बनौने छलीह ।

कदम्ब सन बेटा - कहि भभाय कें धरा हँसि देने छलीह - जेना फाटल दूध सन उधियाइत हँसी-स्वादहीन -

आ कदंब सोच' लागल जे एतेक मातृभक्ति देखि ओकर संभी सभी कहैत छल - अहाँक माँ अहाँ लेल लैला छथि आ अहाँ -

बीचे मे बात कटैत कदंब बजैत छल -

अभागल छल मजनू - जकरा लैला एहेन प्रेममय माय नय भेटलैक ।

प्रेमक कतेक रूप होइत अछि । दुई साज पर बजैत एके स्वर, एके दर्द एके वेदना - एक उछाह तखन तँ माय बेटा, बाप बेटी, भाई बहीन पति पत्नी, भाई भाई, लैला मजनू - सभक हृदय मे प्रेमक एके तरंग उमड़ैत रहै'छ । एके आरोह-अवरोह, एके राग-विराग।

जीवन संघर्ष कें सहैत भोगैत मानव या तँ चुटि जायत अछि वा कि शक्तिशाली भऽ जायत अछि। धरा बुझैत छलीह जे अपन बोझ मानव कें स्वयं उठावऽ पड़ैत छैक । जहिना तरकारीवलाक

भरल डलिया केओ सहारा दय माथ पर राखि दैत छैक । मुदा उठावऽ तँ पड़ैत छैक ओहि गरीब मानव कें । पिता पति पुत्र सभ सहारा देवाक माध्यम थीक - धरा एकरा कहियो संपूर्ण सहारा नय बुझलीह।

मुदा, क्षण अवैत अछ कहियो कहियो जीवन मे जखन स्त्री मृदु मसृण वल्लरी सन अपन पुत्रो सँ लिपटि जायत अछि । सशक्त तरुवर बुझि । धराक स्मृतिमे संगिनी रियाक कानि मोन पड़ि जायत अछि - अपन ज्येष्ठ पुत्र शैलेशक संगे एक बेर गाम जाइत छलीह । स्वयं कें रिया -शैलक सहारा बुझैत छलीह । राति भरक बसक यात्रा मे नहि जानि कोना एकटा वल्लरीसन ओ पुत्रक सहारा सँ लिपटि विचित्र भऽ गेल छलीह ।

माय अहाँ नीक जकाँ कंबल ओढ़ि लियऽ - बड़ जाड़ अछि- मध्यरात्रि मे पुत्रक स्वर सुनि रिया स्पन्दित भऽ गेल छलीह ठीक अपन पिता जकाँ - आ शैल ओकर संपूर्ण देह पर कंबल पसारि देलक - भीतरे भीतर मातृत्व पिघलि गेल छल उष्मा सँ बरफ जकाँ. बेटा अहुँ कंबल नीक जकां ओढ़ि लियऽ । ढंडा लागि जायत - अहांके तुरंते कानपुरो जेवाक अछि । आस्ते आस्ते बुदबुदाइत रिया बजलीह । हमर चिन्ता नय करू माँ । हम एकदम ठीक छी - अचक्के बस रुकि गेल छल - अन्हार मे दृष्टि गाड़ैत शैल बाजल। लगैत अछि जीरो माइल पर आबि गेल छी - बसक यात्री सभ धड़ाधड़ नीचा उतरऽ लागल ।

माय रुकु अहाँ लेल चाहे नेने अवैत छी । पीअब तँ थकान खतम भऽ जायत ।

नय बेटा, अहाँ कथी लेल हेरान होयब । हमहुँ अहाँ संग उतरि जायत छी । ओहिठाम जा कऽ चाह पीबि लेब - ओकरा शेल कें कतेक परिशान देखि नय रहल गेल ।

नहि माँ हेरानक कोन बात थीक - दृढ़ स्वर छल शैलक इ तँ हमर कर्त्तव्य थीक - अहाँके एतेक जाड़ मे हम नय उतर' देब -

आ रिया संपूर्णतः अपना कें पुत्र पर सौंपि देलीह । कतेक ममता कतेक प्रेम अछि शैल कें मायपर।

शैल कानपुर मे इ इंजीनियर छल - पत्नी आर्या सेहो इंजीनियर छलीह । छुट्टी होइत नय छल कि दूनू गोटे माय बाप लग पटना दौड़ि जायत छल । दुई टा बेटी - ओषा प्रियेषा । अशेषा अपन घर-गृहस्थी मे लागि गेल छलीह । प्रियेषा पढ़ैत छलीह । मुदा रिया बड़ खुश रहैत छलीह - चारु भाई बहीनक प्रेम देखि नय वरन् पुतोह आर्याक हृदयक भाव अनुभाव देखि । तीनू माय बहीन कें शैल नय वरन् आर्या रखने छलीह अपन हृदय मे, अपन मोन मे । कतेको बेर ओ तीर माय बहीन लेल शैल सँ झगड़ो कय लैत छलीह । दूनू ननदि लेल आर्याक उर्त्ता देखि रिया के होइत छल - पैघ घरक बेटी एकरे कहैत छैक ने ? अपना लेल नय सोची । मुदा दोसर कें - की दीअर ननदि आन होइत अछि? एकटा मायक गर्भ सँ जन्म लेनिहार सभ माय बहीन - जहिया आर्याकें अपन संतान सभ हेतैक ओहिना तँ? तँ आन ककरा कहल जाइत छैक - छोट घरक बेटी अवैत अछ तँ इ हमर कंघी - इ हमर नुआ कहैत इ हमर पतिक नाप जोख कम अधिकार बनाय लैत अछि - ओ बुझितो बुझवा लेल नय चाहैत अछि जे ओकर पति केकरो बेटा केकरो माय सेहो अछ -

आ रात्रिक ओहि नीरवता मे पुत्रक देह मे ओंगठल - अशोथकित सन जनैत छी, धरा, ताहि काल हमरा अपन बाल्य सभी शीलाक कथा जेना आँखिक आगु नाचि गेल छल ।

शीलका आवेग उत्तेजना सँ भरल ओ साँस रिया आब हम नय जीवी सकब - हम नय जीयब-

की बात थीक शीला ? अपन बाल्यसंगिनी शीलाक इ करुण भाव देखि आश्चर्य सँ भरि गेल छलीह - चारि टा बेटे टा अछि - चारु नीक नीक पोस्ट पर मुदा अवकाश प्राप्त माता पिता लेल केओ नय छल । कोना एकटा माय बाप आठ-दस संतानक पालन पोषण कय ओकरा जीवन भरि ल सभ तरहे समृद्ध सुयोग्य बना दैत अछि कोना एतकराम बाल बच्चा सभ । एकटा माता पिता कें नय राखि सकैत अछ इहो दुनियाक आश्चर्य मे सँ एकटा अछ ।

अहाँ नय बनैत छी रिया हम कतेक दुखी रहैत छी - भरि दिन खटैत रहु-मरैत रहु तखनो हम दूनू गोटे बोझे प्रतीत होइत छी - बेटा

सभकें - बजैत शीला फफकि फफकि कानय लागल -

अपना जमाना मे शीला रूप रंग गुण सेवा सँ समस्त परिवार कें खुश रखैत छलीह ।

सासु ससुरक सेवा भगवानक पूजा जकाँ करैत छलीह -

लोग कहैत छैक जे अपन माय बाप सासु ससुरक सेवा मोन सँ करैत अछ तकर बेटा पुतौह सेहो ओकर सेवा ओहिना करैत अछ -

हम करैत छलौं रिया करैत छलौं - अपन सासुकें मोन कें कहियो आहत नय केलौं - सासु कहैत छलीह - बड़ गुड़ गंजन सहिहें मीसरी नाम कहैंहें - सहने छलौं - शीला फूटि फूटि कानऽ लगलीह- रिया वेदना सँ भरि गेल छलीह । शीलाक बेटा सभ कें सुख साधन ओ देखने छलीह - हजारो लाखों सँ खेलैत छल मुदा माय बाप लेल जगह नय - सरिपहुँ इ पैसा हाय ब्लड प्रेशरक रोग थीक - जतेक बढ़ैत अछि हाइ प्रेशर ओतवे होइत अछि - नहि रहल तँ लो ब्लड प्रेशर आ संतरेषी थीक लेल नार्मल प्रेशर - आप भी भूखा न रहे साधु न भूखा जाय -

रिया बाल्यकाले मे हमर ब्याह भेल ताहिदिन सँ आय धरि खटि रहल छी - जेना मशीन छी - मुदा आब बर्दाश्त नय होइत अछ - मुदा दुइ टा नीक बोल सुनै लेल बेटा पुतौहक तरसि गेल छी- की सुदेशो बात नय सुनैत अछ अहाँके - सुदेश-एकटा तीतल भीजल साँस - सुदेशकें जे कनिया कहि दैत छैक वएह टा साँच बुझैत अछ। सदिकाल अपन सासुरक बड़ाय करैत रहत -

शीला सासुरक बड़ाय कोनो खराब बात नय थीक - इ तँ गौरवक गप थीक जे ओकर सासुर - बीचे मे बात कटैत शीला बजलीह - नय रिया - कहत तोरा सभकें जीवा लेल नय अवैत छैक रहै सेह कें ढंग नय अवैत छौक -

रिया के अचक्के हँसी लागि गेल - एह सहए कें -? शीला अहाँ किएक नय बजैत छी रहएक ढंग तँ नय अवैत अछ मुदा सहैक ढंग हमरा सँ बेसीके जानत ? - रिया कें हँसी मे शीलाक रुदनक आवेक हँसी बनि मिलि गेल -

राति सँ भोर भ' गेल । लंदनक अरुणाभ आभा बैसिलडन कें

घेरने छल ।

दूनू सखी बहिनपाक हृदयाकाश जेना निरभ्र भ' गेल छल - घर मे केओ नय जानि सकल जे राति धरा आ प्रियाक अन्तर एक दोसरा मे ओहिना समा गेल जेना मर्सी नदी सागरक गर्भ सँ निकलल कि समायल लोग अनुमांन नय क' सकैत अछि । स्त्री जीवनक कतेको राग रंग-रूप अरूप - रिस्ता नाता संबंधक चित्र-विचित्र एलबम राति भरि उलटाओल गेल - इ रेशमी तक नय बुझि सकलीह -

भरि दिन सभ बैसिलडनक टनेल देख' गेल - बड़का सुरंगस्यात् विश्वक दोसर सभ सँ पैघ टनेल छल एतेक प्रकाश सँ भरल कि पते नय लगैत छल जे इ सुरंग थीक । कतेक टूरिस्ट भरल छल -

धरा के लागल अन्हार सुरंग किन्तु कतेक प्रकाशमय । सीमान्तक बिन ओकर अन्हार जिनगी किन्तु एतेक गोटेक स्नेह संबंल सँ प्रकाशित ओ साँस लय रहल अछ ।

लेक साइड शापिंग सेन्टर मे सभ घुमइत रहल । हाथ पएर जाड़ सँ धोंकचल जाय रहल छल धराक । एतेक गरम कपड़ाक उपर सँ ओवर कोट, कोटक कनटोप माथ मे, हाथ मे दस्ताना पएर मे मोजा - एहि सभक बादो लगैत छल जेना सर्दी हड्डीक जोड़ जोड़ मे घुसि रहल होय । - अर्ल आ न्यूला ओकर दूनू हाथ पकड़ि जेना धराके बाट देखा रहल छल -

बाहरे खाना खेवाक मोन होइ छ - हरीश बाजल ।

हँ किएक नय - एन्ड्रू खुश भ' गेल - किन्तु, हमरा दिखि सँ- नय हमरा दिस सँ - कदंबो बाजल - अहाँ नय, अहाँ चुप रहु- सभ सँ छोट छी -

कदंब लजा के चुप भ' गेल ।

एकटा अमेरिकन रेस्तरां मे चीमी चंगा, लैब बर्गर, मशरूप बर्गर लेलक । धरा के इ सभ नय खायल गेल । मात्र पिज्जा खा के ओ रहिगेलीह - ओकरा आश्चर्य लगैत छल इंगलैंड मे कत्तौ केओ पानी नय पीवैत छल । ठंडा, आरेंज जूस या कोनो फलक जूस - समयक सागर मे ज्वार अवैत रहल जाइत रहल - दिन बीतैत

गेल -

धरा भटकि रहल छलीह इंगलैंडक काउन्टी सभ मे । धरा खूब बुझैत छलीह इस्टरक छुट्टी मे लंदन घुमनाय तँ सीमान्तक खोजक बहाना थीक । वर्डस्वर्थ लिखने अछि - लंदन आदमीक जंगल अछि किन्तु की कलकत्ता सँ बेसी आदमी एहिठाम छैक ? कलकत्ता मे उजहिया जकाँ मनुख छटपटाइत - लंदने जकाँ आदमीक जंगल -

पीकाडले, ट्रैफ्लगर, स्क्वायर, बकिंघम पैलेस, जेम्स पार्क, बिग बेन सँ सभ केओ आ पएरे घुमैत टेम्स नदी पर बनल वेस्ट मींस्टर ब्रीज पर ठाड़ भ' गेलैथ । सभक दृष्टि खाली भीड़ मे हेरायल चेहराक खोज मे छल - सभक हृदय मे आस-निरासक ज्वार उठैत छल खसैत छल किन्तु, एन्ड्रू हरीश कदंब केओ ओकरा नय जान' देलक जे सीमान्तक पएवाक प्रयास मे सभ भटकि रहल छल ।

जनैत छी माँ, जहिना सेन नदी पेरिसक अन्तरात्मा अछि, बल्तावा प्रागक आत्मा, ओहिना टेम्स लंदनक संस्कृति संस्कार कें उजिगर करैत अछि ।

कदंब ओकरा समझा रहल छल - आ धरा देखि रहल छलीह लंदन कें दुइ पाट मे विभाजित करैत इठलावैत, रूपगर्विता टेम्स नदी मे कतेको फेरी छल आ फेरी पर अंग्रेज गंधर्वक बाँहिमे नचैत जलपरी सभ ।

धरा दीदी - एन्ड्रू बाजल - टेम्स लंदनक हृदय थीक । लंदनक इतिहास कें अपना मे समेटने । धराक हृदय मे कतेक इतिहास नुरायल छल.... ।

सभ चीजक अंत होइत अछि । सभ राहक मंजिल - इस्टरक छुट्टी खत्म भ' गेल मुदा किछ निस्तुकी पता नय लागल । धरा रेशमी प्रियाक त्रिवेणी एकटा संगम बनि अपन अपन दिशा मे व्यथा विगलित बहि गेल ।

धराक मोने प्रियाक स्नेहिल, सुकुमार चेहरा, प्रेममय हृदयक भोगल वेदना, पीड़ा नाचि रहल छल । फेर लिस्टर आबि जिनगी अपन गति पर चल' लागल । हँ धरा कें खुशी भ' गेलैक जे अर्ल, ओकर समीप बेसी सँ बेसी रह' लागल ।

अन्हार कतेक सघन होइत अछि आदमी सोचि नय सकैत अछि। के कत' पड़ल अछि, केम्हर रास्ता छैक - कोना मंजिल धरि पहुँचब - कत' मंजिल - काल्हि - काल्हि तँ सेहो अन्हारे अछि। पता नय काल्हि की होयत कोना होयत - केहेन होयत - धरा एतेक भटकि लेवाक बाद निराश भ' गेल छलीह - कतेक कष्ट, कतेक दुख जीवा मे अछि। जे हम चाहैत छी ओ हमरा भेटैत नय अछि। जे हमरा भेटैत अछि ओकरा सँ हमरा सुख नय। मानव नियतिक हाथक कठपुतलीए थीक ने ? जे जेहेन नाच नचवैत अछि ओकरा ओहिना नाच' पड़ैत छैक। सभ व्यक्तिक हृदयमे व्यथा पीड़ाक संसार बसल रहैत छैक। बाह्य रूप सँ एकटा मुखौटा पिन्हने रहैत छैक खुशीक सफलताक, वैभवक, शक्तिक। मुदा, हृदय-तल स्पर्श करवा पर पवैत छी कतेक दाह, कतेक दर्द अछि ओकर अन्तर मे। जकरा हम पापी अ पतित बुझैत छी - सेहो कनिटा महानुभूति ममत्व पाबि बिना कोनो पाखंडे अपन मिथ्याचार कें खोलि दैत अछ। सांचे तँ सुखक भीतर दुख, दुखक भीतर सुख, पापक भीतर पुण्य, पुण्यक भतर पाप निहित रहैछ। प्रत्यक्ष जीवन सभ सँ पैघ यथार्थ छी। जाहिमे हम समरस भ' जायत छी। तखन मानव समस्त ब्राहमाण्ड कें एकटा मुग्ध प्रणयी कें दृष्टि सँ ताक' लागैछ।

ओहि दिन सीमान्तक संग - ओकर छाती पर माथ टिकौने धरा -

धरा, अहाँ सूर्योदय देखैत छी ने ? सूर्यक प्रेमिल रश्मि कोना आस्ते आस्ते अंधकार के हंटाय 'काल्हि' के अनैत अछि। प्रत्येक सूर्योदयक लालिमाक संगे 'काल्हि' अबैत अछि जे 'आय' मे परिवर्तित भ' जायत अछि। अंधकार कें खत्म करवा धरा किछ नय छैक बस एकटा, ज्ञानक दीया चाही। इजोत क' दिऔक अंधकार खत्म। एकटा छोट सन दीया समस्त अंधकार सँ लड़ि विजेता भ' जायत अछि। बस खाली चाह हेवाक चाही - संकल्प हेवाक चाही।

आ सीमान्तक बाहुपाश मे धरा निश्चिन्त गहीर साँस लेलक। आँखि बंद कय आलोक - लोक मे विमूढ़ निश्चल नीरव - ओहि नीरवता मे धरा के अपन स्पन्दन सुना पड़ल फेर भ्रम भेल इ तँ हमर

नय सीमान्तक हृत्त स्पन्दन थीक - फेर लागल इ दूनूक नय वरन् ओहि परमानन्दक आन्तरिक परिव्याप्त नीरवताक स्पन्दन थीक - आँखि खोलि धरा सीमान्त दिसि तकलीह -

हमर प्यार कहयो अहाँके बंदी नय बनेलक। हम कहियो अहाँक रास्ता मे बाधा नय बनलौं - अहाँक उत्कर्ष हमर जीवनक खुशी थीक। अहाँक आगु बढ़एवा मे - सत्कर्मक प्रवाह जन्म क्षेत्र मे ल' जेवा लेल आतुर हमर मोन - इस अर्द्धनिमीलित नेत्र, अध खुलल अधर सँ बजैत निर्वाक निर्वात दीपशिखा सन सीमान्त सँ लिपटल छली - कत्तौ कोनो बाट पर जयब, अहाँ प्रकाशपुंज लय हमरा ठाड़ पायब। आलोक लोक सँ अहाँक रास्ता हम भरैत रहब -

आ सीमान्त एकटा वत्सल कोमलता लागल। बेलाक अध खिलल सम्पुटक स्निधतम स्पर्श सँ ओ धराक चुम्बन ल' लेने छल- एकटा दीर्घ चुम्बन ....

धरा पतिक एहि अन्तिम स्पर्श सँ आय धरि नहायल छलीह। ओ क्षण मात्र ओ क्षण ओकर जीवनक संबल बनि गेल छल -

माँ - माँ -

कदंबक स्वर सुनतहि धरा यथार्थ मे आबि गेलीह -

की बेटा -

जेना सीमान्त प्रकाश ल' क' अंधकार मेटए लेल आबि गेल होय -

अहाँ देखक तँ खुश भ' जायब।

हम त अहींके देखि खुश रहैत छी -

एह, फुसि नय बाजु माय -

कदंबक स्वर खुशी सँ काँपि रहल छल -

हमरा आ पापाक अतिरिक्त आओर केओ छथि जे अहाँक खुशी अछि माँ -

धराक अन्तर मे किछ काँपि गेल आँखिक आगु मंजुलक चेरहा नाचि गेल।

की - की -

हँ हँ माँ - मंजुल माँ मंजुल विकल्प - कदबंक आंश मे

खुशीक खजाना छल -

ओकर अंग अंग सँ जेना गीत फुटि रहल छल -

माँ - लिय' पढ़ु -

थरथराइत हाथ सँ धरा ओ पत्र लय पढ़' लगलीह ।

माँ

प्रणाम !

हम आय अहाँक इ पत्र गदगद हृदयसँ लिख रहल छी । माँ हम एखन अहाँक पाहुन विकल्पजीक संग छी । अहाँ खुश भ' गेल होयब माँ - आश्चर्यमिश्रित खुशी ।

कालक तीव्र धार मे बहि हम कत' सँ कत' पहुँचि गेल छलौं। गलती हमरो छल माँ । हम नोकरी करैत रही - नीक टाका कमबैत रही किन्तु एकर अभिमान सेहो हमरा छी । इएह घमण्ड हमरा मे एतेक पैघ छल जे नहि तँ अहाँ एहेन माताक हृदय पाबि सकलौं आ नय पिताक प्रतिष्ठाक रक्षाक ध्यान राखलौं । आ परिस्थिति किछ एहेन करोट लेलक माँ जे विधि वाम भ' गेल तँ सभ केओ वाम भय गेलैथ । अपना सामने सभके तुच्छ बुझैत रही । सभक बात कटवाक आदत, अपन गलतीयो के ठीक बुझि अपन अहंकारक रक्षा केनाय। आब सोचैत छी माँ, हमर सभ सँ पैघ दुर्गुण छल जे केओ अहाँ सभक मजाक उड़ावैथ वा कि सासुर मे नैहरक निन्दा करैथ तँ हमर अन्तर मे अग्नि प्रज्वलित भ' जातय छल । हम बर्दाश्त नय कय सकैत रही । विकल्पक माँ हमरा कतेक समझा दैथ जे एहिना लोक कनिया के सासुर मे चिढ़ावैत छैक - अहाँ दुखी नय होइ । अहाँ सेहो कतेक हमरा समझेने छलौं । केओ किछ कहत हमरा सभके विरुद्ध मे तँ जबाब नय देवैक ओकरा । किन्तु हम अपना मे सहनशक्ति नय आनलौं । आ तँ सासु ससुर देवता सन रहितो हमरा सँ बड़ दूर चलि गेलैथ । हम अपन नैहरक पाछा हुनक भावनाक हत्या करैत रहलौं । माँ, आय काल्हि लड़की मे सहिष्णुता, सहनशीलताक एतेक किएक अभाव होइत छैक ? ओ अपन गलतो बात पर किएक अड़ल रहैत छैक ? लोग कहैत छैक माता पिताक देल संस्कार थीक, किन्तु, हमर माता पिता मे तँ कोनो जिद्द नय कोनो अहंकार नय छल ।

पापा मे धन कमेबाक लिप्सा छल सेहो हमरे सभ लेल । कतेक विनम्र अहाँ सभ छी । कतेक विनम्र कदम्ब भैया छथि । हमरे स्वभाव किएक एतेक हठी भ' गेल ?

जख कोनो परिवार मे सासु-पुतौहक आदर प्रेम देखैत छी तँ हृदय कचोटि जायत अछि । ओहि दिन शुभा ओत' गेल छलौं । सासुक संग एतेक मधुर संबंध देखि मोन विभोर भ' गेल । एतेक पढ़ल लिखल शुभा आ अपन सासुक, अनपढ़, वृद्धा सासुक बात पर बजैत छली - माँ हम थोड़बे किछ जनैत छी । हम तँ सभ हिनके सँ सीखैत छी । हमरा कत' सँ एतेक ज्ञान -

नय कनिया, अहाँ एतेक पढ़ल लिखल छी । अहाँक ज्ञानक कोन कमी - माय हँसैत बजैत छलीह । माय किताब पढ़ने सँ डिग्री ल' लेने सँ केओ पढ़ल लिखल नय भ' जायत अछि । हिनकर अनुभव, भोगल यथार्थक उपहार पाबि हमर ज्ञानक वृद्धि होइत अछि। इएह तँ हमरा सीखेने छथि । केकरा संग कोना व्यवहार करवाक चाही - कोनो उठवाक बैसवाक चाही - आइ हम किछ छी माँ तँ हिनके बनाओल -

आ पुतहुक उदगार पर माय गद्गद छलीह - सांच बजैत छी माँ हमर आँखि भरि आयल छल। कपोलक धरती अश्रुसिक्त भ' गेल छल ।

शुभा हरदम हमरा कहैत छलीह । सासु माँ हमरा डंटैत छथि तँ हम जनैत छी जे हम इ गलती नय केने छी, तैयो हम अपन अपराध स्वीकारवा मे चुप रहि जायत छी । कहियो इ नय बाजलौं जे हम तँ इ गलती नय केने छी । कोनो चीज भनसा मे बनेवा लेल माय बतवैत छथि - हम जनैत छी जे हमरा नीक जकाँ इ बनव' अवैत अछि लेकिन अलग टेंट जकाँ नय बाजय लगैत छी जे - हमरा तँ आबिते अछि - हम तँ जानिते छी - कतेक अन्तर छल हमरा आ शुभा मे माए ? हम अपन आगु पाछु पसरल संसार के देखलौं - इ सभ हमर ज़िनगी छी । प्यार आ विश्वासक नींव पर इ घर ठाड़ अछि । एकोटा ईंट एम्हर ओम्हर होयत नय कि घर ध्वंस भ' जायत । हम अपन घरौंदा नय तोड़व । बहुत प्रश्न निजगी मे एहेन अवैत अछ जकर

उत्तर मनुष्य कैं नय खोजवाक चाही । सीप मे मोती हरदम चमकैत अछि ओहना स्त्री प्यार विश्वासक मध्य सतत ज्योतिर्मय रहैत अछ । अपन समस्त परिवारक केन्द्र बिन्दु - प्रकाश स्तंभ स्त्री होयत अछ । माँ, अपन छोट सन जिनगी सँ इएह बुझलौं । स्त्री शोषित नय होयत अछ वरन् स्वयं अपना आप के शोषित बनवैत अछ । ओना देखु तँ पुरुषो षोषित छथि । अपन स्त्री संतान परिवारकैं सुख देवाक लेल कोल्हूक बरद जकाँ अर्थोपार्जन मे लागल रहैत अछि - पति पत्नीक संबंध मे समझौता, संशय असंशय नय रहवाक चाही माँ । जाहिठाम स्वतः स्फूर्त प्रेमक स्त्रोक दूनूक हृदय सँ फूटैत अछ - एक दोसराक गुण अवगुणक संग, शक्ति कमजोरीक संगे - एक दोसरा कैं अपनावैत छथि - वएह तँ शाश्वत प्रेम थीक वएह चिरंतन आ जनम जनमक अछि ।

अपन जीवनक छह सात बरीस हम गमाय देलौं - अपन अविवेकताक ड्रामा जेना सदिखन आँखिक आगु नचैत रहैत अछ । ओहि दिन आफिस सँ घुरवा मे हमरा देर भ' गेल छल । बाहर सड़क पर निकललौं कि देखैत छी चारू दिसि सँ कारी कारी विषधर जकाँ बिजली तड़पि खसि पड़ल आ देखतहि देखतहि बड़का बड़का बून्न बरसय लागल हम होश गुम भ' गेल छल । नय तँ कोनो बस आबि रहल छल आ नय टैक्सी औटो । विशाल जनसमुदाय एक दोसरा कैं ठेलैत भागवा लेल तत्पर - सौंसे देह तीति गेल छल आ सरदी सँ थरथर काँपि रहल छलौं - कि भाभी ? अहाँ एहिठाम की क' रहल छी - थाकल उदास आँखि सँ देखलौं - तँ हिनकर संगी शिरीष ठाड़ छल कोनो देवदूत जकाँ । एहेन भयावह काल मे शिरीष के देखि हमर मोने असीम खुशी भरि गेल । शिरीष अपन कार सँ हमरा घर पर छोड़ि गेल । आ एहिठाम सँ हमर जीवनक दुर्भाग्य काल आरम्भ भ' गेल माँ । दोसर दिन सोचैत रहि गेलौं । शिरीष नय भेटतीयैक तँ हमर की हाल हेतीयैक । धन्यवादो नय द' सकलौं ओकरा - तावत किम्हर सँ शिरीष पहुँचि गेल - विकल्प जी नय आयल छथि की भाभी ?

हमर मुँह पर उछाहक चमक आबि गेल - एखन हम अहींक

[illegible] मे सोचैत रही - बड़ भाग्यवान छी हम भाभी - कहैत - [illegible] निश्छल हास सँ घर भरि देलक - बैसु हम चाह नेने अवैत [illegible] - माँ, तकर बाद ओ हरदम घर अवैत रहल - एक दिन हमरा [illegible] विकल्प सँ सेहो तानातानी भ' गेल - हमरा अहाँक शिरीष सँ [illegible] नय नीक लगैत अछ ।

हम एखन बीमार छी तैं ओ हमरादेखवा लेल अवैत अछि - हम जनैत छी अहाँक मोन मे भ्रमक नाग फन काढ़ने अछि जे, बेर [illegible] दंश मारि अहाँ के दिगभ्रमित क' रहल अछि । काल्हि विकल्प आफिस सँ पहिने चलि आयल तँ अहाँ पीछे लागल आबि गेलौं । शिरीष के देखि अहाँक चेहराक रंग उड़ि गेल छल । अहाँक अध [illegible] मुस्कान खत्म भ' गेल । भ्रमक नाग दंश मरैत रहल - अहाँ छटपटाइत रही कल्पना करैत रही - मंजुल बीमार अछि। जकर शिरीष ओकर माथ छूने होयत । गप करैत होयत-पता नय की की भेल होयत अपन आगि मे अहाँ अपने बरैत होयब -

मंजुल - विकल्प जोर सँ चीकर' लागल हँ हँ हम जरि रहल छी । किएक तँ जरव' वाली अहीं छी । स्त्रीक वेश मे नागिन - छी-

विकल्प हमरा लेल बुझैत रहल - हम एकटा छलना छी, प्रवंचना छी - जेना ओकर हम चैन शांति सभ खत्म क' देने छी ?

माँ तापस हमरो उठल छल - अहाँ हमरा कोनो काज लेल उत्साहित करैत छी । किन्तु शिरीष के देखु -

- शिरीष शिरीष - ओ चरित्रहीन, फ्लर्ट - हम की ओकरा नय चीन्हैत छी ।

देखु व्यक्तिगत जीवनमे कोय किछ रहय ओहि सँ हमरा कोन काज ? अहाँ अपन दिमाग सँ कचरा निकालि दिय' - अहाँ पोखरि मोइन नय बनु - नदी बनु सागर बनु - किन्तु तामसे घोर विकल्प तकर बाद तँ राति के देर सँ आवय लगलाह । कखनो कखनो शराबक दुर्गन्ध हुनक मुंह सँ अवैत छल माँ तँ हमरा अपन दुर्भाग्य पर कानब आबि जायत छल । नशा मे धुत्त अवैथ आ रद्द पर रद्द केनाय शुरुक' दैथ । एक घर मे रहैत हम माँ बाबूजी कैं कहियो एहि विषय मे नय बाजलौं । हम कहियो एहेन स्थिति अपन जीवन मे नय,

भंगने छलौं - किन्तु, सभटा सहैत रहलौं -

जिनगी सँ बड़ दूर चलि गेल छलाह । जेना केओ आर छल जिनगी मे । बैसाखक बिरड़ो उठल सभटा अस्त-व्यस्त भ' गेल । विकल्प आफिस सँ आबि अपन कोठरी मे बंद भ'जायत छलाह । खाली चाह नाश्ता खेनाइ लेल दरवाजा खुजैत छल - सभ किछ कोठरी मे करैत छलाह । पहिने तँ माँ बाबूजी बेटाक व्यवहार सँ चकित छलाह -

अहाँ इ की सीखि लेलौं विकल्प ? अवैत नय छी की केवाड़ बंद कय बैसि जायत छी -

सभक संग उठनाय बैठनाय, खेनाइ पीनाय सभ छोड़ि देने छी-

एखन हम बहुत व्यस्त छी - बस एकटा पंक्ति बाजि केवाड़ बंद कय लैत छल । माँ बाबूजी क्षुब्ध भय कात भ' गेलाह - कनिया - अहाँ किएक नय बुझवैत छी ?-

किन्तु हम कोना बाजितों बुझएवाक रास्ता बंद भ' गेल छल माय -

किएक कनिया - नारी तं जंगल झाड़ कें, बाद बोन कें रंग बिरंगक पुष्प सँ सुवासित क' दैत अछि । निर्धन सँ निर्धन परिवार के शीलवती स्त्री अपन गुण आ कौशल सँ ओकरा महिमामंडित क' देत छैक -

हम किछ नय बाजलौं माँ । पहिलुक बेर हम सासुक सभ बात आत्मसात करैत रहलौं - पहिलुक बेर अपन जीवनक परिवारक जीवनक अंधकारमय भविष्य देखि रहल छलौं । कौपिगेल छलौं भविष्य दिसि ससरैत भयंकर अजगर के देखि ।

आस्ते आस्ते विकल्प राति से सेहो अलग कोठरी मे सुत' लगलाह । हमरा सँ मात्र औपचारिक संबंध रहि गेल - पानि भेजि दिय' - जलखै पठा दिय' - बस एहेन पाती सभक आदान प्रदानक संबंध ।

पहिने तँ हम बुझैत रही काजक व्यस्तता होयत । ऑफिसक झंझट होयत । हमहु थाकल ठेहिआयल अवैत छलौं । ध्यान देनाय छोड़ि देलौं ।

बंबई एहेन शहर मे अपन मकान, गाड़ी घोड़ा, मान सम्मान की नय छल हमरा सभके । किन्तु आय वर्तमान मानवक असकरपनक भोग भोगि रहल छी हम ? ओना माँ प्रत्येक आदमी भौतिक जंजाल मे असगर अछि । पहिलुक जमाना मे संयुक्त परिवार छल - परिवारक सभ सदस्यक सुख दुख एक-दोसराक सुख दुख छल । हँसी खुशी मे सभ समस्याक हल चुटकी बजवैत निकलि जायत छल। समस्याग्रस्त मानव बेलून जकाँ हल्लुक भ' अपन कर्मक्षेत्र मे लागि जायत छल ।

आइयो कतेक जगह संयुक्त परिवार अछि किन्तु सभ सदस्य अपना आपमे असगर अछि। सभक अपन अपन स्वार्थ अपन अपन समस्या । संयुक्त रहितो किछ संयुक्त नय ।

एहि असगर पनक बोध हमरा भ' रहल छी । बाबूजी कें भ' रहल छलैक । विकल्पो भोगि रहल छलाह । एके छतक नीचा सभ - किन्तु सभ असगर । आधुनिक मानवक त्रासदी थीक इ -

एक राति विकल्पक प्रतीक्षा करैत खिड़की लग ठाड़ छलौं हम। रातक बारह बाजि रहल छल । देखैत छी जे ओ एकटा सुन्दर सन युवतीकें आलिंगित कय विदा ल' रहल छलाह ।

धधरा नेसि देने छल हमरा - के छल ओ स्त्री ? एतेक प्रेम सँ गर लगेने छलौं के छल ओ-

कोय छल - अहाँकें एहि सँ मतलब - झझकारैत विकल्प बजल -

हमरो तामस उठल छल माँ । हुनक बाँहि पकड़ि चीकरलौं - अहाँक पत्नी छी हम पत्नी-हमरा पुछवाक अधिकार अछि ?

पत्नी छी तँ चुपचाप अपन काज करू । हमरा टोका टोकी नीक नय लगैत अछि

टोका टोकी - अहाँक देल सभटा दंश हम सहैत रहलौं । कहियो किछ नय बाजलौं - किन्तु, इ सौतीन - इ हम नय सहि सकब । हुनकर बाँहि पकड़ने आवेश सँ हम फुंकारि रहल छलौं ।

हमर हाथ झटकारैत उनटे हाथ हमरा थपड़ाय लागलैथ - लिय' सहु - कतेक सहब सहु-सहु-आ बताह जकाँ हमरा पीटपीटाय

देलैथ । हम कोना मारि खाइत रहलौं, कोना हमर हाथ उनटा के हुनका मारवा लेल नय उठल - अहाँक असहिष्णु, जिद्दी बेटी, कोना केलक बर्दाश्त इ पशुपना ।

एक बाद तँ विकल्प कें अनेरो तामस उठय बिना कोनो कारणे हमरा मार' लागैथ । हमर स्थिति घरक खबासिनीयो सँ बदतर भ' गेल छल । चोट देह पर नय हृदय पर लागैत छल । हम आय धरि कोनो पति कें अपन पत्नी पर हाथ उठवैत नय देखने रही । आत्मा कुहरि रहल छल । हमर वाल्य मोन पर एकर की प्रभाव पड़ल होयत। अहाँ माए छी - अहाँ सँ बेसी के बुझि सकैत अछि ? सासु ससुर अपन बेटाक पक्ष लैत छलाह । हमरा दिसि केओ नय माँ । पापा लय अहां स्वयं दुखी छलौं तँ अहुँ सभ लग किछ नय बाजलौं। फेर अपन दुख नैहर मे किएक बाजतौं ?

चुपचाप सहैत रहलौं । जे लड़की अपन माता पिताक राज मे एतेक अल्हड़, चंचल उद्दण्ड, असहिष्णु छली से अचक्के कोना सहनशील भ' गेलीह - अहाँ कल्पनो नय क' सकैत होयब । रामकृष्ण गांधी, विवेकानंद, सन सन महापुरुष जहि ठाम नारीक मार्ग प्रशस्त प्रकाशित करत रहलाह ओहि ठाम स्त्रीक दशाक एहेन परिणति । हमर शिक्षा दीक्षा सभ हमरा पर हँसि रहल छल, हमरा उपहास उड़ाय रहल छल । कखनो काल प्रबल विरोध करवाक संकल्प लैत छलौं किन्तु ओ संकल्प माटिक देवार जकाँ ढहि जायत छल जे केकरा बल पर ? के अछि एहि ठाम हमर ? प्रेमक पिआस नेने एकटा नीक बोल सुनवा लेल हमर मोन जहाजक पंछी जकाँ बौआइत छल । बेर बेर मोन मे प्रश्न उठैत छल - सभ कहैत अछि जोड़ा तँ आसमान सँ बनि कें अवैत अछि । माँ, की इएह सात जन्क संबंध थीक । की एकरे जनम जनम केर बंधन कहल जाइत अछि ? सभ्य समाज मे पति पत्नीक एहनो रिस्ता-नाता भ' सकैत अछि - कहियो सपनो मे नय सोचले रही । जखन स्थिति प्रतिकूल होइत अछि सभटा विचारधारा प्रतिकूल भ' जायत अछि । हँसैत छी तँ लगैत छल जेना कानि रहल छी । प्रत्येक स्वप्नक पाछा स्त्री लेल एकटा धोखा, एकटा प्रवंचना रहैत छैक ।

एहिना दिन पर दिन बीतैत गेल । एक न एक दिन पापक घट भरि जायत अछि - आ घट फुटि गेल ओहि दिन । हिनकर सभटा बैंक बैलेंस, कतेक कीमती उपहार सभ ओ स्त्री नोचि नोचि खा गेल। आ फेर एक राति मृतप्राय, नशा मे धुत्त विकल्प कें दरवजा पर पटकि ओ चलि गेल ।

आब हमर परीक्षाक क्षण छल । अहाँक देल उपदेश सभ, धैर्य सहिष्णुताक पाठ जे बौया जकाँ हमर अन्तस चेतना मे पड़ल छल ओ अंकुरित भ' पल्लवित पुष्पित होम' लागल । आ तकर बाद तँ एकटा नम्हर व्यथा यात्रा अछि । हमर सेवा, धैर्य फल आनलक पाश्चाताप सँ तीतल विकल्पक बाँहि मे प्रथम बेर अनुभूत केलौं जे नारी कतबो मुक्तिक गीत गवैथ किन्तु पतिक प्रेमिल बांहि मे ओकरा सुखद चांदनीक अनुभूति होइत अछि । परम शान्तिक ।

प्रत्येक विवाहिता नारीक हृदय मे सभ सँ पैघ आकांक्षा यदि कोनो होइछ माँ जे ओका पति ओकरा प्यार करय जकरा लेल ओ माता पिताक स्नेह साम्राज्य छोड़ि धर्मक दाता बनि निरीह मृगशावक सन चलि अवैत अछि । ओकरा लेल पतिक हृदय मे ममत्व भरल स्नेहपूर्ण स्थान होय ।

आ फेर प्रकृतिमे पार्वती सन कोम आ पौरुष मे रुद्राणीसन दुर्घर्ष बनि हम हुनकर सेवा करैत रहलौं । हमर केश राशि मे आंगुर दैत विकल्प बाजल छलाह - नय मंजुल नय कानु गलती हमर छल जे मंदिर स्थित देवीक हम अपमान केलौं । अहाँ पर शंका कय हम अहाँक संगे अपनो पर अन्याय केने छी । - आब प्रभु सँ प्रर्थना अछि हमर अहाँक जवीन शांतिक परम छाहरि मे बीतय । एकटा एहेन प्रेममय आलोक लोक जाहिठाम दुनूक सुख दुख स्वयं एकटा संधि पत्र पर हस्ताक्षर करैत अछि । आशा-निराशा, हँसी रुदन, हर्ष विषाद एवं ताल पर नृत्य करैत होय -

माँ, एहेन की जे हमर प्राप्य आ कि अप्राप्य अछि हमरा वएह भेटैत अछि जे हम दैत छी, देवाक लेल अपन हृदय, अपन राग विराग एहि सँ बढ़ि की उपहार अछि -

पाश्चातापक नोरक संगे विकल्प, माँ बाबूजी सभ हमरा

अंगीकार क' लेलैथ - एको बेर हमर गलती, हमर अतीतक चर्चा केओ नय करैत छथि । आय हम बड़ खुश छी माँ - एना लगैत अछि कोनो विश्व व्यापिनी स्नेह रागिनी अनायासे हुनकर सभक नाद यंत्र कें झंकृत क' देलक । माँ, फेर खुशखबरी-हम आ विकल्प बहुत जल्दी इंगलैंड आबि रहल छी एकटा नवजीवन क' वरदान लेवा लेल अपने सँ - पापा सँ - पापा भेटि जेताह माँ - अवस्य भेंटि जेताह - हमर इ मृणयमी काया हमर माताक दान थीक आ हृदय मे प्रकाशित चिन्मय ज्योति हमर पिताक देन थीक मां - हम अपन पिता कें अवस्य पायब माँ - अवस्ये -

पढ़ैत पढ़ैत धराक हृदयक संग नयन अश्रुपुरीत भ' उठल - नोरक टघार बहि बहि समस्त कपोल सँ प्रवाहित होइत गरदनि, छाती कतीताय रहल छल - बात्सल्य, ममत्वक ज्वार अन्तर सँ फुटवा लेल आतुर - बेटीक घर बसि गेल - बेटी आबि रहल अछ - आ पिताक प्राप्तिक एतेक टाक विश्वासक संपत्तिक संगे

कदम्ब चुपचाप माय कें निहारि रहल छल - एको बेर टोलक नय । मातृत्व पिघलि पिघलि कतेक कथा कहानी कहि रहल छल - कदंब सेहो तीति भीजि गेल ओहि सुखद मातृत्वक छाहरि मे-खुशी सँ चमकैत कदंबक चेहरा पर दृष्टि पड़ितहि धराक पुलकित मोन पर जेना कोनो हिमशिला खसि पड़ल - आँखिक आगु प्रियाक संग ओकर बेटा पुतौहक व्यवहार स्मृति मे आबि गेल ।

बहिन प्यार सँ भरल कदम्बक हृदय केर खुशी देखि ओ सोच-लगलीह - की अपन ब्याहक बादो कदम्बक अन्तरमे मंजुलक लेल अपना बहीनी लेल इएह खुशी एहने प्यार रहत ने ? कत्तौ कोनो एहेन कनिया नय आबि जाय जे सभटा संबंध अपेक्षा उपेक्षा धरि सीमित रहि जाय ।

एह - की सभ अनर्गल सोच' लगलौं - धरा तुरंते भविष्य सँ ध्यान हँटाय वर्तमान मे आबि गेलीह - कथी लेल हम भविष्य लेल सोचैत छी ? भविष्य के देखने अछ ? प्रत्येक भविष्य वर्तमान बनि एहिना ससैर जायत अछि ।

समस्त घर मे जेना नवीन शक्ति नवीन उर्जा आबि गेल - एन्नु

रेशमी सभ धरा कें समेटने - सभ नीक होयत बहीन - सभ नीक होयत भगवानक घर मे देर अछि अंधेर नय -

राति भरि धराक अधर मुस्काइत रहल । राति भरि ओकर अन्तर मे दुइ चिड़ै चोंच सटौने चहचहाइत रहल । हृदयक तिक्तता, कटुता अभावक भाव ओकर हृदयमे धोखरि गेल मंजुलक पावन पन्नक प्रवाह मे ।

स्वयं के बड़ हल्लुक बुझ' लागल धरा - मंजुलक विश्वास ओकर विश्वास के नवशक्ति देलक - सीमान्त अवस्य भेटत - हम खोजि लेब सीमान्त अहाँ कें - सुखद कल्पनाक रंगीन बेलून सभ जेना ओकर चारू कात नृत्य क' रहल छल - कतेक अगन कतेक तपनक बाद इ खुशी तँ आयल । सीमान्तक प्यारक मेघ बरसि बरसि ओकर अन्तर के सजल क' रहल छल -

सागरक कात कात टहलैत अन्धकार मे जेना अचक्के सूरजके दीया जरि जाय अछि - चारु कात प्रकाशे-प्रकाश- आखिर इ अदृश्य ईश्वर के थीक जे एहि दीया के जराय विश्व सँ अंधकारक सम्राज्य खत्म क' दैत अछि । के एहि मेघ मे जल भरि देने अछि जे आकासमे बिजली तड़पि उठैत अछि । चान तारा सँ भरल आसमान ताकि धरा के लगैत छल जेना कोनो नेनाक जन्मदिन पर माता-पिता असंख्य उपहार पसारि देने होय ।

धरा बड़ देर धरि अपन सोच मे डूबल रहलीह - स्वर्ण तँ एहिठाम अछि । हम सभ अभागल एकरा अपन कर्म सँ नरक बना रहल छी । भगवान तँ मानव सँ ल' क' प्रकृति तक के विरोध, संघर्ष मे जीवाक प्रेरणा देलैथ । बरफ मे केसर उगैत अछि - की रचना थीक ईश्वरक जाहि मरूभूमि मे लोकक आँखक पानि सुखि जायत अछि ताहिठाम तरबूजा खरबूजा उपजि जायत अछि । समुद्रक पानि नोनछाह अछि तँ नारियलक पानि शुद्ध, फिल्टरो सँ उत्तम - ओहिना प्रत्येक मानव के अलग अलग अस्तित्व छैक । एक दोसरा सँ आंगुरक निसानो नय मिलैत छैक । समय सँ पहिने भाग्य सँ बेसी मानव के किछ नय भेटैत अछि - समय आओत हम सीमान्त के पायब - ओहि अदृश्य अशेषक प्रति धरा नमित भ' उठीलह ।

माँ, हमर अपन प्रिय दोस्त गैरीक विषय मे अहाँ कें बजने छलौने - कदंब आफिस सँ आबि-काट उतारि रहल छल ।

चाह बनबैत धरा ठमकि गेलीह - हँ हँ - अहाँ जखन इंगलैंड आयल छलौ तँ ओ अहाँक बड़ मदति केने छल -

हँ माँ वएह -

कदंबक गंभीर मुद्रा देखि धरा घबड़ाय गेलीह - की बात छैक कदंब ? गैरी नीके तँ अछि ने-

माँ ओ बड़ जोर अस्वस्थ अछि - लीवरपुल अस्पताल मे भरती भेल छैक - की कहलक डाक्टर-

धराक करेज धड़धड़ करय लागल - दुख अवसाद सँ त्रस्त धराक हृदय अत्यन्त कमजोर भ' गेल छल - ओहि अनदेखल किशोरक प्रति धराकें स्नेह आ वात्सल्य हिलकोर क' रहल छल -

डाक्टर सभ लागल छैक माँ, बीमारीक पता नय लागि रहल छैक - देखी जाँच पर जाँच भ' रहल छैक -

चलु कदंब- अपना सभकें देखवाक चाही -

हँ माँ - काल्हि शनि थीक, वीक एन्ड - एहि मे जायब -

मानव की सोचैत छैक - की होयत छैक । भविष्य कोना पएर दबाए मानवक वर्तमान मे आवि जायत अछ - इ बाद मे बुझ पड़ैत छैक -

राति भरि धरा कें कचमची छल - इ कोन बीमारी भ' गेल जकर पता इंगलैंडक डाक्टर सभ नय लगा पाँबि रहल अछ - आ कतेको आशंका उठैत रहैत छल - कहीं सीमान्तो तँ नय कत्तौ कोनो अस्पताल मे.....

छी छी छी - कोना एहेन अशुभ अधलाह बात सीमान्त लेल सोचलौं -

ओ तँ धन वैभवक संसार मे कोनो महल के रानी संग पैसा सँ खेलइत होयत - आ हम.... छी छी - अपना पर तामस उठय लागल धरा कें - नीक विचारि किएक नय अवैत अछि मोन मे - खाली खराब बात - आशंका, दुर्घटना, अस्पताल, बीमारी - छी छी छी -

दुर्गा कवचक पाठ ओ मोने मोन करय लगलीह -

दोसर दिन भोर गेट वेल सूनक कार्ड खरी[illegible] एकटा पी[illegible]र फुलक गुलदस्ता लय दूनू गोटे लीवरपुल पहुंच गे[illegible] - माँ, वि[illegible] फ्रुट्स सेहो ल' लैत छी - कार सँ उतरैत कदंब बा[illegible]जल ।

हँ बेटा, जरूर ल' लिय'

रास्ता भरि मर्सी - नदीक तट पर बनल ली[illegible]रपुल सीटी[illegible] वैभव सम्पन्नता देखि धरा मुग्ध भ' गेलीह -

कदंब फ्रुट ल' क' आबि गेल -

अस्पताल मे भेंट करवाक समय छल - वार्ड नं०, बेड नं[illegible] इन्क्वायरी सँ पुछि दूनू गोटे वार्ड गेल- गैरीकें की क[illegible]ी होस आ[illegible] गेल छल । मुदा चेहरा पर थकानक स्पष्ट भाव - ध[illegible]ा अपन हा[illegible] ओकर माथ पर राखि देलीह - धराक स्नेहिल सँस्पर्श सँ जेना गै[illegible] कें संजीवनी भेटल - फट्ट द' आँखि खोलि धरा के दे[illegible]ख' लागल-

गैरीक आँख मे कृतज्ञताक भाव - प्रेम आदर[illegible]क अश्रुकण छलकि गेल छल -

धरा कें मोने होयत छल खूब कानी - एतेक सुन्दर तेजपूर्ण चेहरा मातृ पितृ विहीन गैरीक छल आ ताहि पर अ[illegible]सोथकित - कतेक देर धरि गैरी के सहलावैत, दुलरावैत रहलीह धर[illegible]ा ।

फेर ओहि ठाम सँ उठि वार्ड सँ बाहर गैलरी मे [illegible]आबि अपन नोर पोछ' लगलीह -

चारूकात नर्स सभ अबैत जायत छल । स्ट्रेचर पर [illegible]पेशेन्ट सभ आपरेशन थियेटर सँ आइ सी यू दिसि - वार्ड दिसि तेज[illegible]ी सँ जाय आवि रहल छल -

अचानक जेना धरती आकास सभ घुमि गेल धराव[illegible] आगु - जेना सहस्त्र तरेगण झटका सँ ओकरा आगु पड़ल तेजी सँ भगैत एकटा स्ट्रेचर पर ओकरा सीमान्त सन बुझ पड़लैक । अ[illegible]ो ओकर पाछा पाछा दौड़लीह ।

स्ट्रेचर आपरेशन थियेटर मे घुसि गेल - दरवज्जा बंद भऽ गेल-

धरा छाती पकड़ने बेहोशीक स्थिति मे आब' लागली[illegible] - ओ उलटे पएर वार्ड दिसि घुरलीह कदम्बक हाथ घी[illegible]चैत -

ओ - ओ - ओ-

पागल जकाँ बाहर दिसि आंगुर उठाय बाजय लागलीह -

धराक इ अस्तव्यस्त हाल देखि वार्ड मे सभ घबड़ा गेल -

की भेल माँ - माँ की भेल -

धरा कें सम्हारैत कदंब बाजल - मुदा धरा के होस कते - जाहि संकल्प ल' ओ इंगलैंड आयल छलीह - जे ओकर जीवनक सम्पत्ति छल ओकरा आय अनायास एहेन अवस्था मे देखि ओ पागले तँ भ' गेल छलीह -

कदंब कें घींचैत - ओ - ओ - ओ - कय आंगुर देखवैत ओकर मुंह सँ ओ- ओ- छोड़ि किछ नय निकलि रहल छल ।

घींचैत तीरैत कदंब कें ओहि आपरेशन थियेटरक समक्ष धरा लय गेलीह - ओ - ओ - करैत धरा कदंबक बांहि मे अचेत भ' गेलीह -

ओहि ठामक वार्ड बॉय, सिस्टर जे सभ देखि रहल छल - कदंब कें कह' लायल -

एकटा पेशेन्ट कें स्ट्रेचर पर जाइत देखि धरा कोना ओकरा पाछा भागल, कोनो पागल जकाँ वार्ड मे आपस जाय कदंब कें अनलक -

- आ तखन कदंब कें चेतना जागल - कहीं पापा तँ नय छलाह - आ इ बात ओकर मोन मे जड़ि पकड़ि लेलक - अवस्ये पापा हेताह -

अर्द्धविक्षिप्त धरा के भीजीटींग रूम मे आराम कुरसी पर बैसाय कदंब सोच' लागल - कदंब - तों नय सोचह - तोहर पापा छथुन - धरा बड़-बड़ा रहल छलीह ।

मुदा ओ सभ कहलक कोनो वृद्ध व्यक्ति छल -

नय कदंब - हमर दृष्टि अहाँक पापा के चीन्हवा मे कहियो धोखा नय खायत - अहाँ जाउ कदंब जाउ ने देखु ने की बात छी -

तखन कदंब पता केलक - आय इ वृद्ध व्यक्ति एक मास सँ एहि अस्पताल मे भरती छथि, एकटा अंग्रेज महिला हिनका भरती क' देलक आ फेर केओ देखै लेल नय आयल - शराब सँ गुर्दा

फेफड़ा सभ नष्ट भ' गेल छल - आय १५ दिन सँ कोमा मे छल - डाक्टर कहलक - ओकर केओ अपन एहि ठाम नय अछि तँ ल' क' आपरेशनक रिस्क नय लैत छल - जहिना राति दिन निश्चित अछि। ओहिना एकर मृत्यु निश्चित छल -

आय अचानके हालत बिगड़ि गेल देह मे किछ हरारत भेल -

सीमान्त - सीमान्त - अहाँ खोजै लेल हम आकास पताल एक क' देलौं -

जेना कुरसी मे ईसा जकाँ सलीब पर सटि गेलीह - एकदम निढाल - एकदम श्रान्त -

कदंब तुरंत एन्ड्रू रेशमी के फोन कय देलक -

अपना आपरेशन थियेटरक बाहर भगवान सँ प्रार्थना करैत रहल - अपन मायक सुहाग लेल, माँक चैन लेल, अपन माथ पर छत लेल -

बदहवास एन्ड्रू रेशमी पहुँचि गेल - संगे मंजुल विकल्प सेहो?

धराक अवस्था देखि सभक आँखि भरि गेल - जेना सीमान्त नय धरा कोमा मे चलि गेल होय-

विकल्प, एन्ड्रू आ सीमान्त गैलरह मे घुमैत रहल -

सात घंटाक बाद थियेटरक दरवज्जा खुलल - स्ट्रेचर पर बेहोश सीमान्त - दाढ़ी केश खिचड़ी भ' गेल छल -

माँ - धराक माथ पर माय जकाँ हाथ दैत मंजुल बाजि रहल छलीह । आँखक नोर धराके केश राशि कें सिक्त करैत ।

कदंब ओहि मे पिताक सुन्दर चेहरा खोजवाक प्रयास करय लागल -

स्ट्रेचर वार्ड बॉय तीव्र गति सँ ल' क' आइ सी यू मे घुसि गेल-

विजिटिंग रूम मे पेशेन्टक हाल बुझवा लेल तरह तरहक काल बेल सभ लागल छल -

कदंब बटन दबेलक - कोनो हाउस सर्जन आयल -

अभी जो पेशेन्ट गया है कैसी तबीयत है उनकी ?

उसकी तबीयत तो बहुत खराब थी - फेर प्रश्नवाचक दृष्टि सँ

पुछलक अहाँ हुनकर के छी -

धरा आ कदंबक आँखि भरि गेल -

हम हुनक अभागल बेटा छी -

एतेक दिन सँ कते छलौं -

इ सभ बड़का किस्सा छी - एतवे बुझु जे ओ हमर माय थीकीह पेशेन्टक पत्नी - इंडिया सँ एहिठाम आबि आय एक बरीस सँ पिताजी कें खोजि रहल छथि -

इ व्यक्ति के केओ देख' वला नय छल - ओ अंग्रेज हाउससर्जन आस्ते आस्ते मधुर स्वर मे कह' लागल - बेहोशी अवस्था मे एकरा एकटा स्त्री अस्पताल मे भरती कय गेल - तकर बाद एकरा देखय वाला कोय नय छल - ईश्वरक कृपा जे आय इमरजेन्सी मे हिनकर आपरेशन कर' पड़ल । आपरेशन सफल भेल । गॉड इज ग्रेट ...

ओ के औरत छल -

किछ मुस्काइत ओ सर्जन बाजल - माय ब्रदर - एहिठाम स्त्री, मौसम आ नोकरी (वर्क, वीमेन एन्ड बेदर) एहि तीन चीजक भरोस नय करू - तँ हम सब भारतीय स्त्री कें एतेक आदर इज्जत दैत छी - एकटा नम्हर साँस लैत युवा डाक्टर बाजल - हम सभ सभ तरहे हिनकर इलाज मे लागल छलों - तीन चारि दिन बाद ओकरा होस आयल - होस अयलाक बाद ओ किछ बजैत छल स्यात कोनो नाम - हमरा मोन नय अछ मुदा ओ कोनो इंडियन नाम ल' रहल छल ।

हम सुनने छलौ डाक्टर - एकटा सिस्टर जे बड़ देर सँ दूनूक गप सुनि रहल छल बाजि उठलीह - सौंसे अस्पताल मे हल्ला भ' गेल छल जे एहि पेशेन्टक संबंधी सभ भेट गेल अछ, भीड़ लागि गेल छल - की नाम छल सिस्टर - प्लीज, कहु - अधीर भ' गेल छल कदंब - कोन नाम ओ बाजि रहल छलाह -

धरा - धरा - इएह नाम हमरा नीक जकाँ स्मरण अछि -

आराम कुरसी मे अचेत धराक तन मे जेना फुरफुरी आयल -

◆◆◆